

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182592

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 81.08** Accession No. **G. H. 2**

Author **U 66 U**
उपेन्द्रनाथ

Title **उपेन्द्रनाथ की दृष्टि में**

This book should be returned on or before the date
last marked below.

उर्दू काव्य की एक नई धारा

श्री उपेंद्रनाथ, 'अश्क'

१९४१

हिंदुस्तानी एकेडमी
इलाहाबाद

प्रकाशक
हिंदुस्तानी एकेडेमी
यू० पी०, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
मूल्य १)

मुद्रक : भोकार प्रसाद गौड़, मैनेजर,
कायस्थ पाठशाला प्रेस व प्रिंटिंग स्कूल, इलाहाबाद

धर्मवीर आनंद
को
जिस का प्रोत्साहन कठिनतम
परिस्थितियों में मेरा
साथी रहा है

परिचय

हिंदी और उर्दू दोनों एक देस हिंदुस्तान की भाषाएं हैं। दोनों एक-सी हालतों में पैदा हुईं, फली-फूली और बढ़ी हैं। दोनों का अदब हिंदू और मुसलमान लिखनेवालों की कोशिशों से बना है। अगर हिंदी साहित्य में जायसी, रसखान, रहीम ऊँचा दर्जा रखते हैं, तो उर्दू साहित्य में शादां, नसीम, सरशार, बर्क, सुरूर बड़े पाये के लिखनेवाले हो गए हैं। हिंदी ज़बान में इसलामी रीति-रिवाजों, फ़लसफ़े और मज़हब से संबध रखनेवाली बहुतेरी किताबें हैं, और उर्दू में इसी तरह हिंदुओं के दर्शन और शास्त्र, धर्म और ज्ञान, इतिहास और कहानियों का अच्छा भंडार है।

ऐसी हालत में हिंदी और उर्दू साहित्यों का एक-दूसरे पर असर डालना स्वाभाविक-सा ही है। एक तरफ़ उर्दू छंदों, कविता के आकारों, भावों ने हिंदी शायरी में जगह पाई है, तो दूसरी तरफ़ हिंदी कविता पर उर्दू का प्रभाव पड़ा है। इस से यह नहीं समझना चाहिए कि एक भाषा का साहित्य दूसरी का अक्स मात्र है। दोनों में भेद भी हैं और वह काफी गहरे हैं। उस की वजह भी सब जानते हैं। दो अलग-अलग संस्कृतियों की छाप इन के साहित्यों पर है। लेकिन इन दो धाराओं के बीच में एक दरमियानी नदी बहती है जो दोनों के पानियों से मिल कर बनी है और जिस का जल अलहदा बहनेवाला धाराओं में रिसता रहता है।

हम अगर उर्दू और हिंदी के इतिहास पर नज़र डालें तो मालूम होगा कि हर समय में इस तरह का बीच का साहित्य मिलता है। दकन की उर्दू शायरी को लीजिए तो भाषा हिंदी शब्दों से भरी है और

कविता में हिंदुस्तान की संस्कृति ज़ोर से झलकती दिखाई देती है । आगे चलिए, अठारवीं सदी में सौदा के मरसियों और कसीदों में हिंदुस्तानीयत का चोखा रंग है, उन्नीसवीं सदी में नज़ीर अकबराबादी इसी रंग में रँगा है । यही हाल बीसवीं सदी का है ।

श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने, जो खुद उर्दू के अच्छे शायर और कहानी लिखनेवाले हैं, इस छोटी सी पुस्तक में उन थोड़े से उर्दू के कवियों का ज़िक्र किया है जिन्होंने अपनी कविता में हिंदी के असर को क़बूल किया है । इन कवियों में हिंदू भी हैं और मुसलमान भी, लेकिन इन के गीतों को पढ़ कर कोई भी यह नहीं कह सकता कि इन में मत या धर्म का भेद है ।

मेरा विचार है कि यह पुरानी कविता की धारा न केवल मधुर और सुंदर है यह शक्ति और ओज से भरी है । यह सैकड़ों और हज़ारों नहीं लाखों और करोड़ों के दिलों को लुभाने और गरमाने वाली है । अगर हमारा साहित्य थोड़े से इने-गिने पढ़े-लिखों को आनंद देने के लिए ही नहीं, लेकिन हमारे गांव और हाट का कड़ा जीवन बितानेवाले अनगिनत भाइयों के दिलों को गुदगुदाने और सुख देने के लिए बनना चाहिए, तो वह इस मिली-जुली भाषा में ऐसे ही मिले-जुले छंदों में और इसी तरह के भावों से जो सब में समान हैं प्रेरित होगा, जिस के नमूने श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने इस पुस्तक में जमा किए हैं ।

ताराचंद

विषय-सूची

	पृष्ठ
परिचय	७
प्रवेश	१७
‘हफोज़’ जालंधरी :	८१
परमात्मा के हज़ूर में	८१
वसंत	८२
रखवाला लड़का	८४
जाग सोज़े इश्क़ जाग , ,	८५
मन है पराए बस में	८६
एक अभिलाषा	८७
प्रेम-प्रदर्शन	८८
अंधी जवानी	८९
‘सागर’ निज़ामी :	९१
तुम मुझ से क्यों रुठे ?	९१
पुजारन	९२
यह फूल भी उठा ले	९५
भिखारन	९६
भिखारी की सदा	९६

	पृष्ठ
'अस्त्रतर' शेरानी :	९८
बाँसुरी की धुन	९८
एक देहाती गीत सुन कर	१००
परदेसी की प्रीत...	१०२
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से	
मुहब्बत है !...	१०२
ऐ इश्क हमें बर्बाद न कर	१०३
निर्वासित	१०५
अमरचंद 'कैस' :	१०८
गंगा से	१०८
मेरा जीवन	१०९
क्या उस दम साजन आएगा ?	१०९
उन बिन	११०
पपीहा	११०
आ मिल गाएं गीत !	११०
दर्शन प्यासी	१११
याद	१११
अजमत अल्लाह खां :	११३
तुम्हें याद हो कि न याद हो	११३
बरसात	११५
दिल न यहां लगाइए	११६

	पृष्ठ
गोरख-धंधा ...	११७
वह 'आज' हूं जिस का 'कल' नहीं है	११७
मेरा वतन ...	११८
डाक्टर मुहम्मदीन 'तासीर' : ...	११९
कब आओगे प्रीतम प्यारे ? ..	११९
देवदासी ...	१२०
मान भी जाओ !...	१२०
कब तक उस को याद करोगे ? ...	१२१
एकांत की आकांक्षा ...	१२१
मक़बूल हुसैन अहमदपुरी : ...	१२३
पहले-पहल ...	१२३
पूरम-पार भरी है गंगा ...	१२४
पपीहा और प्रेमी ...	१२५
मोहनी ...	१२५
कवि ...	१२६
पथिक से ...	१२६
नसीहत ..	१२७
कोयल ...	१२७
'वक्कार' अंबालवी : ...	१२९
जीवन ...	१२९
कूक पपीहे, कूक !...	१२९

पिया बिन नागन काली रात ! ...	१३०
उस पार ...	१३०
कौन बँधाए धीर ? ...	१३१
आज की रात ..	१३१
जवानी के गीत ...	१३२
बच्चे की मौत पर ...	१३३
पंडित इंद्रजीत शर्मा : ...	१३५
वे तो रूठ गए ..	१३५
नैया है मँझधार...	१३५
भिक्षा प्रेम की...	१३६
तोते ...	१३६
भूल आई री ...	१३७
जोगी का गीत ...	१३७
सावन बीता जाए ...	१३७
अहसान 'दानिश' : ...	१३९
जग की झूठी प्रीत ...	१३९
झूठे जग की झूठी प्रीत ...	१३९
मज़दूर का बच्चा ...	१४०
रणवीरसिंह 'अमर' : ...	१४१
मन पागल ...	१४१
मन की बस्ती वीरान नहीं ...	१४१

आ भी जा	...	...	१४२
तुम बिन	...	...	१४२
मैं नीर भरन नहीं जाऊँ	...	...	१४३
प्राणों के आधार	...	...	१४३
‘हफ़ीज़’ होशियारपुरी :	...	...	१४४
अतीत की याद...	...	...	१४४
काली रात	...	...	१४५
हम पर दया करो भगवान !	...	...	१४५
आग लगे	...	...	१४६
प्रेमनगर में	...	...	१४६
बुरी बला है प्रीत	...	...	१४७
: मीरा जी :	...	...	१४८
चल-चलाव	...	...	१४८
एक तस्वीर	...	...	१५०
उजाला	...	...	१५१
रात की अनजान प्रयत्नी	...	...	१५१
जंगल में वीरान मंदिर	...	...	१५२
संयोग	...	...	१५३
मार्ग	...	...	१५३
मैखाने की चंचल	...	...	१५४

विविध

	पृष्ठ
हामिद अल्लाह 'अफसर' : ...	१५५
राष्ट्रीय गान ...	१५५
मौ० जफर अली खां : ..	१५६
सीता और तोता...	१५६
मौ० ताजवर : ...	१०७
आओ सहेली भूला भूले	१५७
मौ० बशीर अहमद : ...	१५८
ऐ खूबसूरती ...	१५८
हँस देंगे और गाएँगे	१५९
सआदत हुसैन 'मुजीब' : ...	१५९
पपीहे से ...	१५९
रविश सद्दीक्री : ..	१६०
फिर क्या तेरा मेरा रे	१६०
मौ० हामिद अली खां : ...	१६०
सरमायादारी ...	१६१
बाली बीबी की फरयाद	१६१
मौ० चिरागहसन 'हसरत' : ...	१६३
एक गीत ...	१६३
राजा महदीअली खां : ...	१६३
दुखी कवि ...	१६३

	पृष्ठ
'बहजाद' लखनवी : ...	१६४
सुन ले मेरा गीत ...	१६४
सिराजुद्दीन जफर : ...	१६४
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना ...	१६४
अहमद नदीम क़ासिमी : ...	१६५
सावन ..	१६५
'यलदरम' : ...	१६६
आहू ...	१६६
'मजीद' मलिक : ...	१६७
मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ ...	१६७
आगाज़ ...	१६७
सोहनलाल 'साहिर' : ...	१६८
कौन किसी का मीत ? ...	१६८
'फ़ाख़िर' हरियानवी : ...	१६८
वहीं ले चल मेरा चख़्खाँ ...	१६८
'अज्ञात' ...	१६९
चाह का भेद ...	१६९
मनोहरलाल 'राहत' : ...	१७०
ग़वालन ...	१७०
'शाद' आफ़ी : ...	१७१
कमल से ..	१७१

		पृष्ठ
लतीफ अनवर :	...	१७२
सपने में क्यों आते हो ?	...	१७२
‘क्रमर’ जलालाबादी :	...	१७२
ओ मेरे बचपन की कश्ती	...	१७२
खजानचंद ‘वसीम’ :	...	१७३
चंदा मामू	...	१७३
फूल फूल ऐ सरसों फूल !	...	१७३
बिहारीलाल ‘साबिर’ :	..	१७४
हठीले भँवरे	...	१७४

प्रवेश

वर्तमान उर्दू काव्य पर हिंदी का प्रभाव कैसे पड़ा, क्यों पड़ा और कब से पड़ना आरंभ हुआ और इस का इतिहास क्या है ? मुझे इन बातों से कुछ मतलब नहीं । मैं तो केवल यह कहना चाहता हूँ कि उर्दू कविता की वर्तमान धारा पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है, और खूब पड़ा है । 'ज़माना' कानपुर के किसी अंक में स्वर्गीय मुंशी प्रेमचंद जी ने भारत की सभी भाषा के संबंध में एक लेख लिखा था, जिस में दूसरी बातों के अतिरिक्त उन्होंने ने यह भी कहा था, कि उर्दूवाले हिंदी शब्दों के साथ लुआलूत का बर्ताव करते हैं । इस का उत्तर देते हुए उर्दू के प्रख्यात गल्प-लेखक मौ० ल० अहमद ने पंजाब के प्रसिद्ध मासिक पत्र 'नैरंगे-ख़याल' के एक अंक में लिखा था—“हालाँकि मैं समझता हूँ कि उर्दूवाले हिंदी की ओर स्वभावतया अधिक झुकाव रखते हैं । उर्दू के साहित्यिक सदैव हिंदी शब्दों के प्रयोग की कोशिश में व्यस्त दिखाई देते हैं, और उर्दू कवि अपनी कविताओं में न केवल हिंदी शब्द ही अधिक रखते हैं, बल्कि हिंदी भावों और हिंदी विचारों को भी अपनाने से परहेज़ नहीं करते ।” और यह है भी सत्य । जो भी कोई उर्दू काव्य का तनिक बारीकी से अध्ययन करेगा, उसे मौ० ल० अहमद के कथन की सत्यता का पता चल जायगा, उसे आधुनिक उर्दू कविता में हिंदी का प्रभाव साफ़ दिखाई देगा ।

पंजाब के प्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक हज़रत 'पाग़ल' ने (जिन का पाग़लपन इसी से जाहिर है कि वे अपने को पाग़ल न लिख कर ब्याकरण की बेड़ियों का मज़ाक उड़ाते हुए 'पाग़ल' लिखा करते हैं) एक जगह लिखा है :—

जेब में पैसा नहीं और रोटियों से तंग है,
लोग कहते हैं कि पाग़ल गाँधी टोपीपोश है ।

अर्थात्—‘लोग पागल को गाँधी टोपी और खादी से सुसज्जित देख कर समझते हैं कि पागल गाँधी का चेला हो गया है। उन्हें क्या मालूम कि उस के पास दूसरे मूल्यवान वस्त्र खरीदने को पैसा ही नहीं ?’

मैं भी जब यह कहता हूँ कि उर्दू काव्य पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है, तो मैं ऐसे विवश लोगों की कविताओं को देख कर ऐसा नहीं कहता, जो न हिंदी में कविता कर सकते हैं न उर्दू में, और इस लिए गंगा-जमनी भाषा में अपने कविता के शौक को पूरा किया करते हैं। मैं यह दावा उर्दू के उन महारथियों की उच्च कोटि की कविताओं को देख कर करता हूँ, जिन्होंने ने ‘बाँगे-दरा’, ‘शाहनामाए-इस्लाम’, ‘आहंगेर-ज़म’, ‘दर्दे-जिंदगी’ और ‘नैंगे-फ़ितरत’ जैसे उर्दू साहित्य में अपना सानी न रखनेवाले ग्रंथ लिखे हैं। मेरा इशारा महाकवि ‘इक़बाल’, अब्बुल असर ‘हफ़ीज़’, ‘वकार’ अंबालवी, अह-सान ‘दानिश’, पंडित इंद्रजीत शर्मा और अख़्तर शेरानी तथा दूसरे समर्थ कवियों की ओर है।

आधुनिक उर्दू काव्य की उस धारा को, जिस पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है, मैं तीन श्रेणियों में विभक्त करता हूँ—गज़लें^१, नज़्में^२ और गीत^३। यद्यपि यह प्रभाव पूर्णतया तो गीतों की सूरत में ही प्रस्फुटित हुआ है, तो भी गज़लों और नज़्मों पर हिंदी का जो प्रभाव पड़ा है, उस का ज़िक्र अत्यावश्यक है, क्योंकि इन्हीं दो रंगों के बाद गीतों का रंग शुरू होता है।

गज़लें

(क) गीतों तक पहुँचने के लिए उर्दू कविताएं प्रायः एक दो मरहलों से

^१ गज़ल वह कविता है, जिस में कई शेर होते हैं। इस में क़ाफ़िया और रदाफ़ (साधारणतया प्रत्येक शेर के पिछले दो शब्द) आपस में मिलते हैं; परंतु एक शेर विषय में दूसरे से सर्वथा विभिन्न होता है।

^२ नज़्म में विषय एक ही होता है और छंद विभिन्न होते हैं।

^३ गीत प्रायः हिंदी गीतों जैसे ही होते हैं।

अवश्य गुज़रती हैं। मैं ने ऐसा नहीं देखा कि कोई उर्दू कवि एकदम ही सरल सीधे गीत लिखने लगा हो। प्रारंभ उन की ग़ज़लों और नज़्मों में सरल भाषा के प्रयोग से ही होता है। आधुनिक कविताओं का अध्ययन करने से ज्ञात होगा कि प्रवृत्ति कठिन और क्लिष्ट शब्दों को छोड़ कर सीधी-सादी उर्दू में लिखने की ओर अधिक है।

प्रसिद्ध कवि श्री 'जिगर' मुरादाबादी के तीन शेर हैं; देखिए भाषा कितनी सरल है :—

उदासी तबीयत पै छा जायगी, उन्हें जब मेरी याद आ जायगी।
मेरे बाद हूँदोगे मेरी वफ़ा, मेरे साथ मेरी वफ़ा जायगी।
मुझे उस के दर पर है मरना ज़रूर, मेरी यह अदा उस को भा जायगी।

पंडित हरिचंद 'अख़्तर', एम० ए०, उर्दू के प्रसिद्ध कवि हैं। प्रायः उन की भाषा कठिन और भावों की उड़ान ऊँची होती है; परंतु हाल ही में उन की जो ग़ज़लें छपी हैं, उन में क्लिष्टता नाम को भी नहीं और फिर भावों की उत्कृष्टता भी वैसी ही है। देखिए कितने सरल शेर हैं और फिर ऊँचे भावों से कितने परिपूर्ण :—

आप का इंतज़ार^१ कौन करे ? और फिर बार-बार कौन करे ?
खुदफ़रेबी^२ की भी कोई हद है, नित नया एतबार^३ कौन करे ?
दिल में शिकवे^४ तो हैं बहुत लेकिन, अब उन्हें शरमसार^५ कौन करे ?

और फिर दो शेर हैं :—

मैं अपने दिल का मालिक हूँ, मेरा दिल एक बस्ती है,
कभी आवाद करता हूँ, कभी बर्बाद करता हूँ।
मुलाकातें भी होती हैं, मुलाकातों के बाद अकसर,
वे मुझ को भूल जाते हैं, मैं उन को याद करता हूँ।
इन शेरों में यद्यपि हिंदी शब्द नहीं हैं; लेकिन उर्दू इतनी आसान है

^१प्रतीक्षा। ^२अपने आप को धोका देना। ^३विश्वास। ^४उलाहने। ^५लज्जित।

कि हिंदी-भाषी भी इन्हें भली-भाँति समझ सकते हैं ।

हज़रत 'बहज़ाद' खलनवी की एक ग़ज़ल अपनी सरलता के कारण बड़ी प्रसिद्ध हुई है । चंद शेर देता हूँ :—

दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे,
ऐसा न हो तकदीर तमाशा न बना दे ।
मैं हूँ दूँ रहा हूँ वह मेरी शम्अ^१ किधर है,
जो बज़्म^२ की हर चीज़ को परवाना बना दे ।
ऐ देखनेवालो मुझे हँस-हँस के न देखो,
यह इश्क़ कहीं तुम को भी मुझ सा न बना दे ।
आखिर कोई सूरत भी तो हो खानए-दिल^३ की,
काबा^४ नहीं बनता है तो बुतखाना^५ बना दे ।

अब्बुल असर 'हफीज़' जालंधरी की ग़ज़लों में भी आप को यही रंग मिलेगा । एक ग़ज़ल देता हूँ :—

दिल अभी तक जवान है प्यारे, किस मुसीबत में जान है प्यारे !
तू मेरे हाल का खयाल न कर, इस में भी एक शान है प्यारे !
तल्ख़^६ कर दी है जिंदगी जिस ने, कितनी मीठी ज़बान है प्यारे !
ख़ैर फ़रियाद^७ बे असर ही सही, जिंदगी का निशान है प्यारे !
और फिर अपनी इस सरल भाषा के संबंध में स्वयं ही लिखते हैं :—
जंग छिड़ जाय हम अगर कह दें, वह हमारी ज़बान है प्यारे !

(ख) दूसरा रंग उर्दू ग़ज़लों का वह है, जिस में सरल उर्दू के साथ हिंदी के शब्दों का प्रयोग किया जाता है । यहां में एक बात कह दूँ । जब हिंदी शब्द उर्दू में आते हैं, तो उन की सूरत कुछ बदल जाती है, और इसी लिए उन के उच्चारण में भी परिवर्तन आ जाता है । इसी बदले हुए

^१दीपक । ^२सभा । ^३दिल का घर । ^४खुदा का घर । ^५बुतों की जगह ।
उर्दू शाबरी में बुत माशूक को कहते हैं । ^६कड़वी । ^७ज़ुल्म की शिकायत ।

उच्चारण से ये हिंदी शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। परंतु मेरा विषय चूँकि उर्दू काव्य पर हिंदी के प्रभाव तक ही परिमित है, इस लिए मैं इन शब्दों के उच्चारण इत्यादि के प्रश्न को न छेड़ूँगा।

इस रंग की ग़ज़लों भी उर्दू में काफ़ी लिखी गई हैं। दूसरे कवियों की बात दूर रही, स्वयं महाकवि स्वर्गीय 'इक़्बाल' अपनी ग़ज़लों में हिंदी शब्दों के प्रयोग की लालसा को नहीं छोड़ सके। वे अधिकतर फ़ारसी में लिखते थे और कदाचित् फ़ारसी में उन्हें उर्दू की अपेक्षा आनंद तथा सफलता भी अधिक मिली। परंतु हिंदी शब्दों की सरलता तथा माधुर्य ने उन से भी अनायास लिखवा लिया है :—

'इक़्बाल' बड़ा उपदेशक है, मन बातों में मोह लेता है, गुफ़्तार^१ का यह गाज़ी^२ तो बना, किरदार^३ का गाज़ी बन न सका। और फिर 'नवा शिवाला' में, जो आज भी स्कूल और कालेज के छात्रों, दूकानदारों और दफ़्तर के क्लर्कों, मतलब यह कि जनसाधारण को ज़बानों याद है, महाकवि 'इक़्बाल' लिखते हैं :—

सच कह दूँ ऐ बिरहमन गर तू बुरा न माने,
तेरे सनमकदों^४ के बुत हो गए पुराने।
अपनों से वैर करना तू ने बुतों से सीखा,
जंगो-जदल सिखाया वाइज़^५ को भी खुदा ने^६।
तंग आके मैं ने आखिर दैरो-हरम को छोड़ा,
वाइज़ का वाज छोड़ा, छोड़े तेरे फिसाने^७।
पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है,
स्वाके-वतन^८ का मुझ को हर ज़र्रा^९ देवता है।
आ ग़ैरियत^{१०} के परदे इक बार फिर उठा दे,

^१बोल। ^२विजयी। ^३कर्म। ^४मंदिरों। ^५उपदेशक। ^६मंदिर-मसजिद।

^७कहानियाँ। ^८देश की धूल। ^९कण। ^{१०}वैमनस्य।

नक्शे दुई^१ मिटा दें, फ़स्ले बहार^२ ला दें !
 सूनी पड़ी हुई है मुद्दत में दिल की बस्ती ,
 आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें !
 दुनिया के तीर्थों से ऊँचा हो अपना तीर्थ ,
 दामाने आसमां से उस का कलश मिला दें !
 हर सुबह उठ के गाएँ मंतर वह भीठे-भीठे ,
 सारे पुजारियों को मय^३ प्रीत की पिला दें !
 शक्ती भी शांती भी भक्तों के गीत में है ,
 धरती के वासियों की मुक्ती भी प्रीत में है ।

जनाब 'सागर' निज़ामी उर्दू के प्रख्यात कवि हैं । आप की भाषा में रस है, मस्ती है और सुंदरता है । देखिए, उन की निम्न-लिखित ग़ज़ल में उर्दू-हिंदी का कितना सम्मिश्रण है । लिखते हैं :—

यह महफ़िल में किस ने मधुर गीत गाया ?
 सँभालो सँभालो मुझे वज्द^४ आया !
 सियहग्वानए दिल में यह कौन आया ?
 ज़मीं मुसकराई फ़लक^५ जगमगाया !
 बड़ी भूल की हुस्न से दिल लगाया ,
 दीवाने यह है एक सपने की माया ।
 मुहब्बत में सरो-जयां^६ की न पृछो ,
 बहुत हम ने खोया, बहुत हम ने पाया ।
 न वह हैं न मैं हूँ न दीन और दुनिया ,
 जन्ने मुहब्बत^७ कहां ख़ांच लाया ।

१ भेद-भाव का नाम । २ वसंत ऋतु । ३ मदिरा । ४ बेहोशी की हद तक पहुँचनेवाली तन्मयता । ५ आस्मान । ६ हानि-लाभ । ७ प्रेम का उन्माद ।

ग़ज़ल मेरी 'सागर' वह नगमा^१ है जिस को ,
जवानी ने लिख्वा मुहब्बत ने गाया ।

(ग) 'क़ैस' जालंधरी उर्दू संसार में खूब चमके हैं । आप का कलाम
ज़ारसी में भी मिलता है । मैं आप की एक ग़ज़ल 'माया' देता हूँ, जिस में
यह रंग पूरे यौवन पर है, और यदि इसे हिंदी ग़ज़ल ही कह दिया जाय,
तो अनुचित न होगा :-

माया पर मत भूल रे प्राणी , माया तो है आनी-जानी ।
जीवन है वायू का झोंका , या नदिया का बहता पानी ।
यौवन रूप जवानी क्या है ? क्या है यौवन रूप जवानी ?
प्रेम से सब की सेवा कर तू , सेवा में है किस की हानी ?
त्याग बुरे पुरुषों की संगत , मुन दरदम संतां की वानी ।
ज्ञान की खाली बातें क्या हैं ? कर ले कुछ जग में ऐ ज्ञानी !
यह जग तो है रैन-बसेरा , किस बिरते पर तत्ता पानी ?
'क़ैस' प्रभू ने प्रेम लगा ले , दुनिया तो है आनी-जानी ।

नज़्में

(क) नज़्मों को ग़ज़लों और गीतों की दरम्यानी कड़ी समझ लीजिए ।
पहले-पहल उर्दू कविता ग़ज़लों, मसनवियों और मरसियों तक ही परिमित
थी । 'ग़ालिब', 'ज़ौक़', 'दाग़', 'मीर', 'सौदा' आदि पुराने कवियों के दीवान
आप को अधिकतर ग़ज़लों तथा मसनवियों आदि में ही मिलेंगे । नज़्में
काफ़ी देर बाद लिखी जाने लगी हैं, और आधुनिक युग की देन हैं । ये
नज़्में भी पहले मुश्किल उर्दू में लिखी जाती रहीं । बाद को जब सरल
उर्दू में लिखी जाने के कारण अधिक रोचक प्रतीत होने लगीं, तो ग़ज़लों
का दौर ख़त्म हो गया । आधुनिक युग के कवियों के दीवानों में आप को
इन्हीं नज़्मों का आधिक्य दिखाई देगा । इस के बाद वह युग भी आया,

जब इन्हीं नज़्मों में हिंदी के शब्दों का प्रयोग होने लगा, और फिर हिंदी शब्दों के सम्मिश्रण ने कवियों को इतना मोह लिया कि वे नज़्मों लिखने-लिखते हिंदी गीत लिखने लगे। इस रंग की नज़्मों भी एक हद तक हिंदी गीत बन गई हैं।

नए युग की ख़ालिस उर्दू नज़्म का नमूना देखिए। शीर्षक है—‘आए न वह बहार में, बीत चली बहार भी’। ‘वकार’ साहब लिखते हैं :—

दिलकशो^१ दिलफ़रेब^२ हैं, दश्त^३ भी राहगुज़ार^४ भी,
वाग़ भी हैं ग़िले हुए फूलों पै है निखार भी,
क्या करूं मैं बहार को, दिल पै हो इख़्त्यार भी,
रुख़सते सैर^५ दे मुझे, सदमए^६ इंतज़ार भी,

आए न वह बहार में, बीत चली बहार भी !
दिल की कली न ग़िल सकी, मेरे लिए बहार क्या ?
नज़्मते^७ लालाज़ार क्या, निकहते^८ मुश्कवार क्या ?
उन के बग़ैर आ सके दिल को मेरे करार^९ क्या ?
कहती हैं सच सहेलियां, मर्द का एतवार क्या ?

आए न वह बहार में, बीत चली बहार भी !
मौत पै बस नहीं मेरा, दिल नहीं इख़्त्यार में,
यह न ख़बर थी दुख मुझे, सहने पड़ेंगे प्यार में,
ऐशान्तरब^{१०} के थं ये दिन, खो दिए इंतज़ार में,
हसरतें दिल में रह गईं, आए न वह बहार में,

आए न वह बहार में, बीत चली बहार भी !

यही नज़्मों सरलता और सुंदरता की किस हद तक पहुँची हैं, यह मियां बशीर अहमद बैरिस्टर, मालिक तथा संपादक ‘हुमायूँ’ की आधुनिक नज़्मों

^१आकर्षक। ^२दिल लुभानेवाला। ^३मरुस्थल। ^४मार्ग। ^५सैर की आज्ञा।

^६दुख। ^७विव्रता। ^८सुगंधि। ^९चैन। ^{१०}सुख-आराम।

का पढ़ कर ही ज्ञात होगा । 'मेरे फूल' शीर्षक नज़्म में मियां बशीर अहमद लिखते हैं :—

मेरे घर में तुझ से नूर ,
मेरा टीला तुझ से तूर^१ ,
मेरी जन्नत^२ की तू हूर^३ ,
तेरी खुशी मुझे मंज़ूर ,
फूलों में ऐ मेरे फूल !

गाने गा और भूला भूल ।
तेरी बातों में है रस ,
विजली सा है तेरा मस^४ ,
उम्र है तेरी चार बरस ,
अल्लाह बस बाक़ी है हवस ,
फूलों में ऐ मेरे फूल !

गाने गा और भूला भूल ।

मियां साहब की 'संगतरे' शीर्षक कविता में सरलता अपनी चरम-सीमा को पहुँच गई है :—

संगतरे, रंगतरे, खुशनुमा,^१ रस भरे ,
पाँच-छः लीजिए ! इन का रस पीजिए !
ज़िंदगी आगही^२ , बार है, आर है !
जब तलक, रस न हो ! जब तलक, बस न हो !
काम सब छोड़ के , बाग़ में शाब से ,
मंगतरे तोड़ के , उन का रस पीजिए !
ऐश यूँ कीजिए ।

^१तूर वह पहाड़ था, जहाँ हज़रत मूसा को खुदा ने अपना जलवा दिखाया था, और जो उस ज्योति की तपिश से जल कर राख हो गया था । ^२स्वर्ग ।
^३अप्सरा । ^४स्पर्श । ^५मुंदर । ^६ज्ञान ।

(ख) और फिर, जैसा मैं ने कहा, इन सरल नज़्मों में कहीं-कहीं हिंदी के शब्द भरे जाने लगे। इस से इनकी सुंदरता और माधुर्य में जो वृद्धि हुई, वह निम्नलिखित नज़्मों से माफ़ प्रकट है : डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर', एम० ए०, प्रिंसिपल, एम० ए० आ० कालेज अमृतसर की एक नज़्म है :—

मान भी जाओ, जाने भी दो, छोड़ो भी अब पिछली बातें !
ऐसे दिन आते हैं कब-कब, कब आती हैं ऐसी रातें ?

मान भी जाओ, जाने भी दो !
देख लो वह पूरब की जानिब^१, नूर ने दामन^२ फैलाया है।
रात की खलअत^३ दूर हुई है, सूरज वापस लौट आया है।

मान भी जाओ, जाने भी दो !
जल-जल कर मर जानेवाले, परवानों^४ का डेर लगा है।
यह भी लेकिन देखा तुम ने, शमूअ^५ का क्या अंजाम हुआ है ?

मान भी जाओ, जाने भी दो !
मैयद जुलक़ार अली बुख़ारी, स्टेशन डारेक्टर, आल इंडिया रेडियो,
बंबई, की नज़्म 'जोगी' करुण-रस के साथ-साथ मिठास से कितनी भरी
हुई है : —

यह उस से जाकर पूछो, जिस का मजहब दुनियादारी है,
यह दुनिया कितनी अच्छी है, यह दुनिया कितनी प्यारी है !
हां, बीत गए वह दिन, जब था हंगामा हाओ-हू^६ बरपा^७,
अब दिल की बस्ती सूनी है, इक हू का आलम^८ तारी^९ है !
इस रोने पर, इस हँसने पर, हैरान न हो, इतना तो समझ,
वह जीने की तैयारी थी, यह मरने की तैयारी है !

^१तरफ। ^२आंचल। ^३उपोशाक। ^४पतंगों। ^५दीपक। ^६हाय-बाय का शोर।
^७जारी। ^८निस्तब्धता। ^९छाया।

इक और भी दुनिया बसती है, इस क्रोध की दुनिया के बाहर,
उम दुनिया में सुख मिलता है, यह दुनिया सब दुखियारी है।
ऐ मायावालो, अपना माया इस कुटिया से ले जाओ !
यह साधू प्रेम-पुजारी है, यह साधू प्रीत-मिखारी है।

(ग) उन नज़्मों में जहां उर्दू के मुश्किल शब्दों के साथ-साथ हिंदी के शब्द भी मौजूद हैं और नज़्म की सुंदरता का घटाने के बदले बढ़ाते हैं, मैं हजरत अहसान 'दानिश' और 'निशात' जायवी की दो नज़्मों देता हूं।
अहसान साहब की नज़्म है — 'बरसात के अंतिम दिन' :—

बरसात है ख़त्म इस महीने, कीने^१ से धुले हुए हैं सीने।
बदली जो बरस के थम गई है, गुलशन^२ पे^३ बहार जम गई है।
नाले हैं कि राग गा रहे हैं, जंगल हैं कि सनसना रहे हैं।
समर का मुँह सा धुल गया है, हर चीज़ का रंग खुल गया है।
नहरें-सी बनी हुई हैं राहें, पेड़ों की लचक गद्दी हैं बाहें !
अहसान हूं किम हाल में न पूछो, हूं किम के खयाल में न पूछो !

'निशात' जायवी की नज़्म है, 'चाँद की बस्ती'। लिखते हैं :—

दिलक़श औ^४ नूगानी^५ दुनिया, मदमाती मस्तानी दुनिया।
दुनिया है मतवारी सारी, मतवारी है बादे-बहारी^६।
फ़ितरत^७ प्यारी झूम रही है, दुनिया सारी झूम रही है।
नाला अंबर रौशन तार, नन्दे^८ नन्दे प्यारे प्यारे।
बस्ती में हर सू^९ है मस्ती, यह बस्ती है चाँद की बस्ती।

(घ) और फिर उर्दू नज़्मों में हिंदी का यह संमिश्रण इस हद तक बढ़ा कि नज़्मों गीत बन कर रह गईं। इस के बाद ही गीतों का बह युग आया, जो एक बार उर्दू संसार पर छाकर रह गया और अपनी व्यापकता में नज़्मों को भी मात कर गया। उर्दू के प्रसिद्ध मस्त कवि 'अख़्तर'

^१ ड्रेप । ^२ बाटिका । ^३ ज्योतिर्मय । ^४ मधुक्रतु की हवा । ^५ प्रकृति । ^६ तरफ़ ।

शेरानी की नज़्म 'ऐ इश्क कहीं ले चल' इस रंग का उत्तम उदाहरण है। सरलता और मीठेपन में यह नज़्म गीत ही बन गई है और इस की लोक-प्रियता का यह आलम है कि बीसियों बार छप जाने के पश्चात् आज तक बराबर छप रही है। उच्च कोटि की नज़्मों में जितनी यह गाई गई है, शायद ही कोई दूसरी नज़्म गाई गई हो। सीधी सरल भाषा है, मीठे-मीठे हिंदी के शब्द हैं और दुनियादारों की स्वार्थ-प्रियता से तंग आया हुआ कवि का हृदय है। लिखते हैं :—

ऐ इश्क कहीं ले चल इस पाप की बस्ती से ,
नफ़रतगहे^१ आलम से, लानतगहे^२ हस्ती^३ से ,
इन नफ़स - परस्तो^४ से, इस नफ़स - परस्ती से ,

दूर और कहीं ले चल , ऐ इश्क कहीं ले चल !
हम प्रेम - पुजारी हैं, तू प्रेम-कन्हैया है ,
तू प्रेम - कन्हैया है, यह प्रेम का नैया है ,
यह प्रेम का नैया है, तू इस का खेवैया है ,

कुछ फ़िक्र नहीं, ले चल , ऐ इश्क, कहीं ले चल !
दरहम ज़माने को, अब छोड़ रहे हैं हम ,
बेदर्द अज़ीज़ों^५ से मुँह मोड़ रहे हैं हम ,
जो आस कि थी वह भी बस तोड़ रहे हैं हम ,

अब ताब^६ नहीं ले चल, ऐ इश्क, कहीं ले चल !
आपस में क़ल औ' धोके संसार की रीतें हैं ,
इस पाप की नगरी में उजड़ी हुई प्रीतें हैं ,
यां न्याय की द्वारें हैं, अन्याय की जीतें हैं ,

सुख-चैन नहीं, ले चल , ऐ इश्क, कहीं ले चल !

^१उपेक्षा की जगह । ^२निंदा की जगह । ^३अस्तित्व । ^४कामियों ।

^५प्रियजनों । ^६संतोष ।

संसार के उस पार इक इस तरह की बस्ती हो ,
जो सदियों से इसा^१ की सूरत को तरमती हो ,
और जिस के मनाज़र^२ पर तनहाई^३ बरसती हो ,

यूँ हो तो वहाँ ले चल , ऐ इश्क़, कहीं ले चल !
वह तीर हो सागर का, रुत छाई हो फागन की ,
फूलों से महकती हो पुरवाई घने बन की ,
और आठ पहर जिस में भड़-बदली हो सावन की ,

जी बस में नहीं ले चल , ऐ इश्क़ कहां ले चल !
पच्छिम की हवाओं से आवाज़ सी आती है ,
और हम को समुंदर के उस पार बुलाती है ,
शायद कोई तनहाई का देस बताती है ,

चल, उस के करी^४ ले चल , ऐ इश्क़ कहीं ले चल !
बरसात की मतवाली घनघोर घटाओं में ,
कुहसार^५ के दामन की मस्ताना हवाओं में ,
या चाँदनी रातों की शफ़फ़ाफ़^६ फ़िज़ाओं^७ में ,

दिल चाहे वहाँ ले चल ! ऐ इश्क़ कहीं ले चल ।

(६) इस से पहले कि मैं तीसरे रंग का—गीतों का—ज़िक्र करूं, मैं यहाँ उन नज़्मों का ज़िक्र भी कर देना चाहता हूँ, जिन में हिंदी के शब्द चाहे इतने न हों, पर हिंदी भाव कूट-कूट कर भरे हुए हैं। मैं इस संबंध में एक कविता देता हूँ, जिस का उर्दू शीर्षक भी कवि ने 'मेघदूत' ही रक्खा है। इस के रचयिता जनाब 'मंज़र' सिद्दीक़ी अकबराबादी हैं। एक फुरक़त—वियोग—का मारा घटाओं के द्वारा अपनी प्रेमिका को अतीत की याद दिलाता हुआ अपने दुख की कहानी कहता है :—

^१मनुष्य । ^२दृश्य । ^३एकांत । ^४समीप । ^५पहाड़ । ^६उज्ज्वल । ^७वातावरण ।

यह काफ़िर घटाएं, यह काफ़िर घटाएं,
 नज़र में समाएं तो क्योंकर समाएं ?
 कहीं और बरसें, कहीं और जाए,
 मुनासिब यही है, न हम को मताएं ।
 घटाएं जो हमदर्द हैं तो खुदा रा,
 यह पैग़ामे^१ ग़म उन को मेरा सुनाएं ।
 कि ऐ कायनाते^२ मुहब्बत की देवी ।
 तेरे हिज़्र^३ का बार कब तक उठाएं ?
 खुदा मेहरबां है न तू मेहरबां है ।
 कहानी यह अपनी कहां जा सुनाएं ?
 मगर हा जिसे तू ने बिमरा दिया है ।
 तुझे याद वह दौरे-माज़ी^४ दिलाएं !
 वह अक्सर तेरा रूठ कर मुझ से कहना,
 हमें तुम मनाओ, तुम्हें हम मनाएं !
 जुदा था ज़माने से दुनिया हमारी ।
 प्रेमी हवाएं, अछूती हवाएं !
 मगर आह, ऐ इनक़लाबे^५ ज़माना ।
 कि अब हैं वफ़ाओ के बदले जफ़ाएं !
 वफ़ूरं ग़मोरज से खुल रहे हैं ।
 यह है आरज़ू अपनी हस्ती मिटाएं ।

एक नज़्म और है । रचयिता का नाम तो मालूम नहीं। परंतु नज़्म
 भाषा की सरलता के साथ हिंदी भावों और हिंदी के माधुर्य से कितनी
 ओतप्रोत है, इस का अनुमान केवल इसे पढ़ कर ही किया जा सकता है ।
 यह नज़्म उर्दू के प्रसिद्ध मासिक पत्र 'नैरंगे ख़याल' में प्रकाशित हुई थी

^१संदेश । ^२दुनिया । ^३वियोग । ^४पुराना समय । ^५परिवर्तन ।

काई साहब बिरहिन के हृदय में उठनेवाले भावों का चित्र इस कुशलता से खींचने हैं कि कलम चूम लेने को जी चाहता है। वर्षा ऋतु है और प्रिय-तम परदेश में और—

उमग इक जी मे उठ रही है, बटाए धिर-धिर के छा रही है;
पड़ोसिने भूलने को भूला, घने घने बन में जा रही हैं।
कहीं पे बादल बरस रहे हैं, कहीं पे बिजली चमक रही है;
दूरी-दूरी डालियों पे चिड़ियां, जगद-जगद चहचहा रही हैं।
लगा है सावन धिरा है बादल, पड़ा है भूला, लगी हैं लड़ियां;
बड़े-बड़े पींग चल रहे हैं, पड़ोसिने गात गा रही हैं।
उधर परीहे की 'पी कहां', छेड़ती है बैठे-बिठाए मुझ को;
उधर निगाड़ी यह कोयले और भी मेरा जी जला रही हैं।
जहां-जहां पड़ चुका है पानी, भरी हुई हैं वहां की भालें;
और उस में जाकर मुहागनें सब की सब भूषाभूष नहा रही हैं।
मुझे नहीं चैन बिन तुम्हारे, अकेले घर में उलझ रही हैं;
पहाड़ में दिन सता रहे हैं, मुहाना रात रुला रहा है।
हो तुम तो परदेस में ऐ साजन, मैं कैसे काटूंगी इन दिनों को ?
ऐ मेरे प्यारे तुम्हारी बातें, बहुत कलंजा दुग्वा रही हैं।

(च) इसी संबंध में यह अन्याय होगा, यदि मैं उर्दू के युग-प्रवर्तक कवि स्वर्गीय अजमतुल्ला का जिक्र न करूं। श्री अख्तर हुसेन रायपुरी ने उन के विषय में सुदर्शन जी के दिवंगत मासिक पत्र 'चंदन' में एक सुंदर लेख भी लिखा था। उर्दू में हिंदी शब्द तथा भाव लाने और क्लिष्ट भाषा को सरल बनाने में स्वर्गीय अजमतुल्ला का हाथ कुछ कम नहीं। आप ने उर्दू के दक्कियानूसी अरूज (पिंगल) और उर्दू के क्लिष्ट और दुरूह शब्दों के विरुद्ध एक भारी विद्रोह किया, और उर्दू में हिंदी भाव तथा हिंदी शब्द लाने पर ही बस नहीं की, बल्कि अरबी और हिंदी छंदों को मिला कर नई बहरें (छंद) बनाईं और उन में सुंदर कविताएं कीं।

नए छंदों में उन की कविता का नमूना देखिए। शीर्षक है, 'बरसात की रात'। लिखते हैं :—

वर्षा रुत है, घटा है छाई,
बालों को खोले रात है आई,
अधियारी में है गहराई,
भट्ठी लगी है हलकी-हलकी।

जानवरों ने लिया बसेरा,
तारीकी ने जग को घेरा,
छाया घटाटोप अंधेरा,
हां, कभी हंस पड़ती है बिजली।

नींद जो आई वक्त से पहले,
फूल से बालक पँखुड़िया मूदे,
सोए बेसुध औंधे-सीधे।

जल्दी-जल्दी घर का बखेड़ा।
सुंदर चित्रा ने निबटाया,
हर एक बिछौना बिछवाया,
पान बनाया, खाया मिलाया,
ज़ोर का आया मेंह का तरेड़ा।

होने लगों फिर घर की बातें,
बच्चों की दिन-भर की बातें,
बे-सिर की बे-पर की बातें,
और कुछ इधर-उधर की बातें।

कितना सुंदर चित्र है और भाषा कितनी सरल ! न शब्दों का गोरख-
धंधा है, न रूपों का इंद्रजाल !!

उर्दू में हिंदी-भाव लाने के लिए श्री अजमतुल्ला ने जो कुछ किया है,
उस का पता केवल आप की नज़्म 'मुझे प्रीत का यां कोई फल न मिला'

से ही लग सकेगा । वास्तव में यह नज़्म नहीं, एक कहानी है विहाग में गाई और करुणा रस में डूबी हुई । कथानक चाहे मुसलमान संस्कृति से ही संबंध रखता है; परंतु भाव वही हैं, जिन से हिंदी कविता ओतप्रोत है, और छंद भी सर्वथा नए हैं ।

एक मुसलमान युवती बचपन से अपने चचेरे भाई के साथ रही है । दोनों साथ इकट्ठे खेले-कूदे और पढ़े हैं । यौवन का देवता आता है और चुपके से दोनों के दिलों में प्रेम का संचार कर देता है । एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं । उन की माताएं यह देख कर उन के विवाह की बात पक्की कर देती हैं । लड़का उसे स्वयं पढ़ाता है, और फिर शिक्षा-प्राप्ति के लिए विलायत चला जाता है । वहां से वापस आकर एक ऊँचे सरकारी पद पर नियुक्त हो जाता है । लड़के का पिता अपने निर्धन भाई के यहां संपन्न पुत्र का विवाह नहीं करना चाहता, और उस की सगाई किसी रईस के घर कर देता है । उस की प्रेयसी दिल पर पत्थर रख कर उस के विवाह की तैयारी शुरू कर देती है । इस के बाद उस की सगाई भी कहीं हो जाती है और उस के विवाह की तैयारियां भी आरंभ हो जाती हैं; परंतु उसे इन तैयारियों से क्या मतलब ? वह तो मृत्युशय्या पर पड़ जाती है । इस स्थल पर उस दुखियारी विरह की मारी की रामकहानी उस की अपनी जबानी सुनिए :—

मैं नन्हों-सी जान गरीब बड़ी, कभी भूल के दुख न किसी को दिया !
न तो रूठी कभी न किसी से लड़ी, मेरी बातों ने घर को है मोह लिया !
मेरे सर में तुम्हारा ही ध्यान बसा, मेरी चाह के राज - दुलारे बने !
तुम्हें देवता जान के मन में रखा, मेरी भोली-सी आँखों के तारे बने !

शेखी ने कहा है—‘कविता हृदय के भावों की प्रतिच्छाया मात्र है ।’
दिल के दर्पण का इस से सुंदर चित्र और कौन उतार सकता है ? निराशा की मारी मृत्यु की बाट जोहती है, और तड़प-तड़प कर कहती है :—

मुझे प्रीत का यां कोई फल न मिला, मेरे तन को यह आग जला ही गई !
 मुझे चैन यहा कोई पल न मिला, मेरे मन को यह आग जला ही गई !
 मेरा एक जगह जो पयाम^१ लगा, मेरे दिल से तड़प के यह निकली दुआ,
 नहीं चाह ही दिल में तो ब्याह है क्या, तू खुदाया मुझे यूँही जग मे उठा !
 मुझे चाह ने खालिया धुन की तरह, मेरी जान की कल ही बिगड़-सी गई !
 मेरा जिस्म भी बन गया बन की तरह, योही विस्तरे मर्ग^२ पैपड़-सी गई !
 मुझे जीते-जी प्रीत का फल न मिला, मेरे तन को यह आग जला ही गई !
 मुझे प्रीत की रीत का फल न मिला, मेरे मन को यह आग जला ही गई !

निराशा और निराशाजनक भावों तथा उद्गारों का चित्र-चित्रण तो बहुतों ने किया होगा; परंतु निराशा की दबी हुई आहों का नश्वर जिस प्रकार अजमलुल्ला ने खींचा है, उस की नज़ीर बहुत कम मिलती है।

गीत

पिछले पृष्ठों को पढ़ने के बाद इस बात का पता चल जाएगा कि उर्दू कविता में एक नए युग का आविर्भाव हुआ है। एक नए रंग की कविता लिखी जाने लगी है। जिस प्रकार हिंदी कविता नायिका-भेद और राजा-महाराजाओं की स्तुति तथा विलास-भावनाओं के संकुचित युग से निकल कर मुक्ति के महान आकाश में चिड़ियों की भाँति विविध स्वरों से चहकने लगी है, उसी प्रकार उर्दू शायरी भी शमा-परवान, गुलों-बुलबुल, महबूबों-माशूक के जाल से निकल कर नई भावनाओं के साथ जगत में प्रवेश कर रही है।

एक ही तरह की गज़लों का दौर खत्म हुए भी देर हो चुकी। अब तो कवि नज़्मों की दुनिया से भी आगे निकल कर, कविता के एक नए संसार की सृष्टि कर रहे हैं। बड़े-बड़े शायर छोट-छोटे सीधे और सरल गीतों में

हृदय के कामलतम उद्गारों को व्यक्त कर के साहित्य में नई गंगा बहा रहे हैं। यह गीत पंजाब में सर्वसाधारण की ज़बान पर चढ़े हुए हैं और कुछ तो इतने लोकप्रिय हुए हैं कि गले में अमृत रखने वाले अपने मीठे, मादक स्वरों से गाते हुए इन से पंजाब की महफ़िलों को गुँजा देते हैं।

सुंदरता के जादू से दिलों का मोह लेने वाले इन गीतों को जन्म देने का श्रेय जालंधर की नररत्न-प्रभु भूमि में जन्म लेने वाले मौलाना अबुल असर 'हफ़ीज़' को है। अपने इस रंग के विषय में वह स्वयं ही लिखते हैं—

किया पावने नै नाले का मैं ने,
यह तज्जें स्वास है ईजाद मेरी।^१

और है भी ठीक। उन्होंने ने वे गीत लिखे हैं जिन में नाले गान बन गए हैं और आहें तानें। 'मन है पराए बस में' शीर्षक से उन का गान मेरे इस कथन का प्रमाण है।

साहित्य में भी क्रांति का पैगाम लाने वाले की क्रूर पहले कठिनाई से ही होती है। उन्होंने ने अपना इस प्रकार का पहला गीत 'कान्ह की बंसरी' लिख कर जब लाहौर के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक में भेजा, तो उस के संपादक ने, जो 'हफ़ीज़' साहब के घनिष्ठ मित्र थे, उन को 'इस बेगार टालने' पर बहुत उलाहना दिया, और गीत को आकर्षक स्थान न देकर एक कोने में छाप दिया। किंतु जादू वह जो सर पर चढ़ कर बोले। दूसरे ही दिन जब 'हफ़ीज़' साहब ने वही गीत अपनी जादू भरी आवाज़ में गाकर सुनाया तो महफ़िल फूट गई। उक्त संपादक महोदय भी वहीं बैठे थे। उन्होंने ने अपनी ग़लती का महसूस किया और जाना कि इस प्रकार के छोटे-छोटे गीतों की ईजाद एकदम फ़ज़ूल नहीं और साहित्य के ख़ज़ाने को और भी समृद्ध करने वाली है। दूसरे अंक में उन्होंने ने इस गीत को दोबारा, संपादकीय नोट में उस की विशेष प्रशंसा करते हुए छपा, और महीनों वह गीत

^१ मैं ने नाले का लय मे बंद कर दिया है, और यह नई तज्जें मेरी अपनी ईजाद है।

लोगों की ज़बान पर रहा ।

‘शाहनामा इस्लाम’ के लेखक, श्री ‘हफ़ीज’ इस रंग में लिखते हैं:—

बसरी बजाए जा !

कान्ह मुरली वाले नंद के लाले ,

बसरी बजाए जा !

प्रीत में बसी हुई अदाओं^१ में ,

गीत में बसी हुई सदाओं^२ से ,

ब्रजवासियों के झोंपड़े बसाए जा ,

सुनाए जा, सुनाए जा !

कान्ह मुरली वाले नंद के लाले ,

बसरी बजाए जा !

बसरी की लय नहीं है आग है ,

और कोई शय^३ नहीं है आग है ,

प्रेम की यह आग चार सू लगाए जा !

सुनाए जा, सुनाए जा !

कान्ह मुरली वाले नंद के लाले ,

बसरी बजाए जा !

इस के बाद गीतों में पंजाब का कवि-समाज बह चला, और बरबस बह चला । इस गीत का प्रभाव अभी तक इतना बाकी है कि ‘दर्दे ज़िंदगी’ और ‘हदीस-अदब’ के रचयिता हज़रत अहसान ‘दानिश’ ने हाल ही में लिखा है—

ब्रजवासियों में शाम, बसरी बजाए जा ।

मस्तिशां उबल पड़े, मदभरी सदाओं से ;

प्रेम-रस बरस पड़े, मनचली हवाओं से ;

^१भावभंगियो । ^२आवाज़ों । ^३वस्तु ।

मुसकरा रही है शाम, श्याम मुसकराए जा ।
 ब्रजवासियों में शाम, बंसरी बजाए जा ।
 गोपियों को सुध नहीं, मस्तियों में जोश है ;
 रागरंग में है गङ्गा^१, रंग मयप्ररोश^२ है ।
 भूमती है कायनात^३, भूम कर भुमाए जा ।
 ब्रजवासियों में शाम, बंसरी बजाए जा ।

कृष्ण के गीत

‘हफ़ीज़’ साहब के इस गीत के बाद गोकुल के इस प्रेमावतार ने, कविता के संसार का चिर जाग्रत रखनेवाले बंसरीवाले ने राग की दुनिया में अगणित गीतों का निर्माण कराया, और सांप्रदायिकता के गढ़ पंजाब के उर्दू कवियों से कराया । सच है शायरों का कोई मजहब नहीं, यदि कोई धर्म है तो प्रेम । आज यदि कवियों के हाथ में विश्व के संचालन का भार और अधिकार हां तो देश और धर्म की तंग दीवारें खड़ी न रह पाएं और दुनिया की चप्पा-चप्पा ज़मीन भाई-भाई के खून से तर न हो ।

मौलवी मक़बूल हुसैन अहमदपुरी, जो उर्दू में अपने मीठे-मीठे गानों के कारण प्रसिद्ध हैं, और जिनकी कविता पर ब्रजभाषा का रंग ग़ालिब ‘हुमायूँ’ में लिखते हैं—

बंसीधर महाराज हमारे ,
 हृदय-कुंज में बसी बजाओ !
 सब भक्तों के राजा हो तुम ,
 प्रेम-गीत से मन को रिझाओ ,
 तुम सब प्यारों के प्यारे हो ,
 आओ प्रीत की रीत सिखाओ ,

^१ डूब गया । ^२ मदिरा बेचने वाला । ^३ सृष्टि ।

राधा-स्वामी, अंतर्यामी,
परमानंद की राह सुभाओ !
बंसीधर महाराज हमारे,
हृदय-कुंज में बंसी बजाओ !

और 'अदब-लतीफ' पत्रिका के एक दूसरे गीत में आप विह्वल होकर पुकार उठे हैं—

अब तो श्याम से उलझें नैन !
कोई बुलाए हरि के घर से,
बंसी बजाए प्रेम-नगर से,
दिल रूठा अब दुनिया भर से,
मन की डोर लगी ईश्वर से,
क्या जानूं आई है रैन !
अब तो श्याम से उलझें नैन !

भक्तों की इस भक्ति से परे, जिस का प्रदर्शन ऊपर के गीतों में किया गया है. भगवान् कृष्ण से संबंधित कविता का एक और रूप भी है इस में जुदाई के गीत लिखे गए हैं । जब कृष्ण गोकुल को छोड़ कर मथुरा जा बसे तो उन के विरह में गोपियां जिस प्रकार तड़पती थीं, उस का पता केवल इस एक पद से लग जाता है, जब ऊधव के आने पर कोई गोपी रो कर, सिहर कर, कह उठती है—

ऊधव व्रज की दसा निहारो !

और इसी विरह की उदासी में—जब मथुरा से कोई संदेश नहीं आता और तड़प-तड़प कर सवेरा करने वाली गोपी फिर संध्या के आने पर विह्वल हो उठती है । उस का चित्र 'नशतर' जालंधरी ने एक गीत में खींचा है—

तड़प-तड़प कर भर हुई थी, ना आया पैगाम !

कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम !

बादल गरजे बिजली चमके, उठी घटाएं शाम !

कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम !

आँख में आँसू, कमक हृदय में, फिर आई है शाम !

कन्हैया, उजड़ चला मन-ग्राम !

पंजाबी भाषा के प्रख्यात कवि लाला धनीराम जी ने भी 'आह्वान' शीर्षक एक कविता में श्याम का आवाहन करते हुए लिखा है:—

आजा, शाम बिहारी आजा !

शाम घटा लाइयां घनघोरा ,

बाग उठा लये सरते मोरों ,

हुन ता शामा तेरियां लोड़ा ,

बुझे दिला बिच जोत जगाजा !

आजा, शाम बिहारी आजा^१ !

और हिंदी भाषा में तो मीराबाई सूरदास आदि के गीतों में न जाने कितने आवाहन, कितनी मनुहारें और कितने अभिसार भरे पड़े हैं। उर्दू में भी बीसियों ऐसे गीत लिखे गए हैं जिन में घनघोर घटाओं, पुरशोर हवाओं और उन्मत्त मोरों को देख कर कोई गोपी अपने चितचोर श्याम को पुकार उठती है। उन गीतों में से मैं किसी युवक रामप्रसाद 'नसीम' का एक गीत देता हूँ। कितना दर्दभरा और मर्म स्पर्शी है !

घटाएँ फिर आईं घन घोरा ,

हवाएँ चलती हैं पुर शोर !

मस्त परीहा ,

वेसुध कोयल ,

और पागल है मोर !

^१ ऐ मेरे श्यामबिहारी तू आजा ! ऐ श्याम, घनघोर घटाएँ छाई है, मोरों ने अपनी भंकार से बागों को सर पर उठा लिया है। ऐ श्याम, अब तो तेरा अभाव ही अखरता है। आजा, और बुझे हुए दिलों में आग लगा दे !

उर्दू काव्य की एक नई धारा

घटाएं घिर आईं घनघोर !

बिजली चमके ,

बादल बरसे ,

आन मिलो चित चोर !

घटाएं घिर आईं घनघोर ,

हवाएं चलती हैं पुरशोर !

वसंत के गीत

चलने लगा बिल्लूर का सागर किनारे जू,

पत्थर में जान फूँक दी बादे-बहार ने ।^१

(क़ैस जालंधरी)

उस वसंत ऋतु को आते देख कर, जिस के आगमन पर पत्थरों तक
में भी जान आ जाती है, उर्दू का एक कवि अपने गम को भूल जाना
चाहता है और निश्चित हो कर कहता है;—

छलकता हुआ कैफ़^२ का जाम ले कर ,

नसीम बहारा^३ का पैग़ाम ले कर ,

बसंत आ रहा है, बसंत आ रहा है !

जलाएगा अब क्या भला सोज^४ हम को ,

भुलाएंगे रंजो मुहन^५ और ग़म को ,

^१ बिल्लूर (शीशे) का प्वाला नदी के किनारे चलने लगा है—अर्थात् वसंत के समीरण से मतवाले होकर मयक्वार नदी के किनारे जाकर मदिरा-पान कर रहे हैं, और मदिरा का पात्र इस हाथ से उस हाथ में चल रहा है । कवि कहता है कि वसंत की बयार में वह जादू है कि पत्थर अर्थात् जड़ पदार्थों में भी इस ने जान फूँक दी है ।

^२मस्ती । ^३वसंत का समीरण । ^४दर्द । ^५दुख ।

बसंत आ रहा है, बसंत आ रहा है !

अपने गीत 'पुरानी बसंत' में अब्बुल अस्सर 'हफीज़' भी इसी भाव से प्रेरित होकर कहते हैं—

उम्र घट गई तो क्या, डोर कट गई तो क्या ?

यह हवाए तुंदो-तेज़, रुख पलट गई तो क्या ?

आ गई बसंत रूत

और इक पतंग दे !

रंग दे, रंग दे कदीम रंग !

और पंडित इंद्रजीत शर्मा, जिन्होंने उर्दू में अपनी पुस्तक 'नैरंगेफ़ितरत' लिखने के बाद इस रंग को भी अपने गीतों से काफी समृद्ध बनाया है 'बसंत' शीर्षक गीत में लिखते हैं—

आओ सखी री चलें कुंज में लड़ाई है हरियाली ,

फूलों की भरमार है ऐसी लदाई है डाली-डाली .

गेदा और गुलाब खड़े हैं लिए हाथ में प्याली ,

आँख खोल कर ताक-भाँक में नरगिस है मतवाली !

इसी उल्लास के रंग में एक और भी गीत है । लिखने वाले कोई 'वनवासी' हैं :—

सजनि, आओ बसंत मनाए !

प्रीत के ही वे रंग जमाए !

सुंदर निर्मल, हो फुलवार !

और जहा हो,

फूलों की महकार !

भवरो की गुजार !

ऐसे में फिर खुशी मनाएं !

सजनि, आओ बसंत मनाएं !

परंतु दुनिया में सुख ही सुख हो यह बात तो नहीं । सुख की छाया में

दुख है, हर्ष के दामन में व्यथा है, उल्लास की गोद में विषाद है। वसन में सब ही उल्लास और हर्ष से विभोर हो उठते हों, इस दुस्वी संसार में यह कहाँ ! 'ग़ालिब' ही कहते हैं :—

उग रहा है दरो दीवार से सब्ज़ा ग़ालिब ।

हम बयाबा में हैं और घर में बहार आई है ॥

अबुल असर 'हफ़ीज़' भी जहाँ सरसों के फूलने का, सखियों के फूलने का, तरुणों के गीत गाने का, मनचलों के पतंग उड़ाने का जिक्र करते हैं, वहाँ उस युवती को भी नहीं भूलते, जिस ने वसन के आने पर फूलों के पीले गहने ताँ पहन लिए हैं परंतु प्रियतम परदेस में हैं इस लिए—

है नगर उदाम

नहीं पी के पास

गमो रंजो यास^१

दिल को पड़े हैं सहने

उसी विरहिन के हार्दिक मर्म को पंजाब के तरुण कवि, जनाबे 'क़ैस' जिन्होंने ने उर्दू ग़ज़लों से काफ़ी आरसे तक पंजाब में सिक्का जमा कर इस रंग में लिखना आरंभ किया है, एक सरल गीत में व्यक्त करते हैं—

फ़ली फ़ुलवारी-फ़ुलवारी :

फूल-फूल फूले लहराए :

भूम-भूम कर भँवरा गाए ;

मटर्का क्यारी-क्यारी !

फ़ली फ़ुलवारी-फ़ुलवारी !

सखिया भूलें और भुलाएं ,

रल-मिल कर सब मगल गाएं ,

मैं पापिन दुखियारी !

फूली फूलवागी-फूलवारी !

और फिर वसंत के दिनों में यौवन-मदमाती दुलहिन किस प्रकार
सिहर कर मिश्रित से अपनी सखी से कहती है यह 'प्रीतम' ज़याई के गीत
में देखिए :—

सजनि, लिख भेजो कोई पाती !
आई बसत पिया नहीं आए ,
किस बिध चैन दुखी मन पाए !
आग विरह की जिया जलाए ,
बान कही नहीं जाती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

और नाना देते हुए लिखो, कि—

वा रसिया भूले विरहन को ,
खो वेठी मैं जीवन-धन को ,
चैन नहीं है पापी मन को ,
नाम जपूं दिन-राती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

लिखो कि—

घर को आओ भिखारन के धन !
सदक^१ तुम पर जीवन यौवन ,
लौट आओ परदेसी साजन ,
फ़ितरन^२ है मदमाती !
सजनि, लिख भेजो कोई पाती !

और फिर वसंत के दिन मालिन को सरसों के फूल लाते देख कर
विरहिन दुखित हो जाती है, और चिढ़ कर उस से कहती है

^१ निष्ठावर । ^२ प्रकृति ।

ऐ मालिन इन फूलों को तू, जा ले जा मेरे सामने से;
 यह लहू रुलाती है मुझ को, सूरत मतवाली सरसों की ।
 यह ज़र्दी इन की लाली है, पीलापन है गहना इन का;
 मैं जन्म-जली दुख की मारी, लूँ छीन न लाली सरसों की ।
 जब आए बसंत मेरे मन का, तो लाख बसंत मनाऊँ मैं;
 सरसों के हार पिरोऊँ मैं, और गीत बसंत के गाऊँ मैं ।

होली के गीत

होली और बसंत का चोली-दामन का-सा साथ है । एक की याद आते ही दूसरे का चित्र आँखों के सम्मुख खिंच जाता है । उन दिनों की स्मृति भी जागृत हो उठती है जब वसंतोत्सव मनाए जाने थे, और होली खेली जाती थी : जब भारत खुशहाल था, संपन्न था और देश का कोना-कोना ब्रज बन जाता था; नाचता, गाता और फाग मनाता था । फिर यह कैसे संभव था कि भगवान् कृष्ण और बसंत के गीत तो गाए जाते पर होली को विस्मृति के गर्त में फेंक दिया जाता ?

इस रंग में होली के गीत भी गाए गए हैं, और खूब गाए गए हैं, परंतु उन में उल्लास नहीं है, हर्ष नहीं है । जब ब्रज वह ब्रज नहीं रहा तो होली फिर वह होली कहां रहती ! आज कल जो होली खेली जाती है वह होली कहां है । होली का स्वाँग मात्र है । 'वक्रार' साहब ने इसी वर्तमान दशा का चित्र खींचा है । एक दुखिया अपनी सखी से कहती है:—

होली खेलें किस के सँग आली ?

ब्रज में अब वह बात नहीं है, कान्हा वाली बात नहीं है ।
 जीवन का वह रंग नहीं है, प्रेम का पहला सग नहीं है ॥
 नगर-नगर से प्रीत उठी है, डगर-डगर से रीत उठी है ।
 खेल कहां ? इस खेल में चूके, सखियां भूकीं बालक भूके ॥
 कौन से रँग में चोली रंगाऊँ, कौन से मुँह से फाग मुनाऊँ ?
 बस मैं नहीं है मन साजन का, राग रंग रूप है मन का ॥

मुरली मूक, टूटा मृदंग आली ।

होली खेलें किस के संग आली ?

और फिर मज्जदूर की होली में भावों की तीव्रता देखिए—

कण्ट उठाए औ^१ दुख भेले ,

मैं ने कितने पापड़ बेले ,

मेरे रक्त से होली खेले ,

सरमाया^१ चालाक !

नगा रह कर सर्दी काटी ,

भूका रह कर स्वाक भी चाटी ,

नाचे माटी ऊपर माटी ,

मेरी होली स्वाक !

और अपनी दीन दशा से दुखी होकर अछूत पुकार उठता है : —

होली आई कैसे खेलूं ?

मेरा रंग है फीका-फीका ,

कंबख्ती बदहाली-सी का ,

हाल बुरा है मेरे जी का ,

होली आई कैसे खेलूं ?

हिंदू कुछ बेरंग हैं मुझ से ,

आमादाये-जंग^२ हैं मुझ से ,

मेरा मी दिल तंग है मुझ से ,

होली आई कैसे खेलूं ?

लेकिन फिर भी होली के दिन रंग उड़ाया जाता है । स्वाँग ही सही, पर त्योहार निभाया जाता है । सखी उदास है, वह होली न खेले, अछूत और श्रमी दुखी हैं, वे होली न खेलें, और कवि भी इन दुखियों के दुख से

^१ पूँजीवाद । ^२ लड़ने को तैयार ।

दुखी हो कर होली न खेलें, परंतु दूसरे तो खेलेंगे । उस सूरत में शायर का कर्तव्य केवल नसीहत करना रह जाता है, यदि होली खेलना ही है तो ऐसी होली खेल जिस से—

बिछड़े हैं जो वह मिल जाए ,
मन की कलिया फिर खिल जाए ,
वेरा देखें औ' हिल जाएं .
तेरे घर का मेल !
ऐसी होली खेल !

एकता के गीत

कृष्ण के संबंध में गीत लिखने के बाद मौलाना 'हफ़ीज़' ने एक प्रीत का गीत लिखा, जिस में सांप्रदायिकता को मिटा कर एकता का राज्य स्थापित करने की अपील उन्होंने ने की । गीत लंबा है, यहां पूरा नहीं दिया जा सकता फिर भी एक दो बंद देखिए:—

अपने मन में प्रीत बसा ले,
अपने मन में प्रीत !
मन-मदिर में प्रीत बसा ले, ओ मृग्व, ओ भोले-भाले !
दिल की दुनिया कर लं रौशन, अपने घर में जात जगा ले !
प्रीत है तेरी रीत पुरानी, भूल गया ओ भारत वाले !
भूल गया ओ भारत वाले ,
प्रीत है तेरी रीत !
बसा ले, अपने मन में प्रीत !
क्रोध-कपट का उतग डेरा, छाया चारा खूट अंधेरा ,
शैख बरहमन दोनों रहज़न^१, एक से बढ़ कर एक लुटेरा ;

जाहरदारों^१ की संगत में, कोई नहीं है सगी तेरा ,

कोई नहीं है सगी तेरा ,

मन है तेरा मीत !

बसा ले, अपने मन में प्रीत !

भारत माता है दुखियारी, दुखियारे हैं सब नर-नारी ,

तू ही उठा ले सुंदर मुरली, तू ही बन जा श्याम मुरारी ,

तू जागे तो दुनिया जागे, जाग उठे सब प्रेम पुजारी ,

जाग उठे सब प्रेम पुजारी ,

गाएं तेरे गीत !

बसा ले, अपने मन में प्रीत !

पंजाब सांप्रदायिकता के लिए बदनाम है और पंजाब के मुसलमान सांप्रदायिकता के कट्टर अनुयायी कहे जाते हैं । उसी पंजाब के मुसलमान कवि के मुँह से सांप्रदायिकता के विरुद्ध ऐसी बात निकलना क्या गौरव का विषय नहीं है, और क्या यह नवयुग की प्रतिनिधि हिंदी भाषा के प्रभाव का स्पष्ट प्रमाण नहीं ?

दूसरा गीत मैं मौलवी मक़बूल हुसैन अहमदपुरी का देता हूँ जिस के एक-एक शब्द से एकता का भाव टपका पड़ता है । गीत का शीर्षक है— 'प्रेमपुजारी' । प्रेम का अर्थ यहां एकता से है—

हम तो प्रेम-पुजारी !

धर्म प्रेम का सब से अच्छा, प्रेम की शोभा मारी ;

कोई माने या ना माने, हम तो प्रेम-पुजारी !

आशा है यह अपने मन की, प्रेम कन्हैया आए !

मांस-मांस को अपना कर ले, ह्रिदय में रम जाए !

विपदा कटे हमारी ।

हम तो प्रेम-पुजारी !

गाएं भजन बंसी वाले के, ख्वाजा^१ की जय बोलें ;
 बड़े पीर^२ की आसा ले कर मन की धुंड़ी खोलें !
 नाव चले मँझधारी ।
 हम तो प्रेम-पुजारी !
 दास बनें कमलीवाले के, रामचंद्र के दरवारी !
 कहें मगन हों 'अहमदपुरी'^३ सब मे हमारी यारी !
 सब से लाज हमारी ।
 हम तो प्रेम-पुजारी !

मौलाना 'वक्कार' ने भी वर्तमान फूट के विरुद्ध आवाज़ उठाई है और कहा है:—

जगत में घर की फूट बुरी !
 फूट ने रघुवर घर से निकाले पापन फूट बुरी ,
 रावन से बलवान पिछाड़े जल गई लंकपुरी ,
 जगत में घर की फूट बुरी !
 फूट पड़ी तो करबल^४ जाकर हुए हुसेन^५ शहीद^६ ,
 मान हो जिन का सारे जग में मारे उन्हें यज़ीद^७ ,
 जगत में घर की फूट बुरी !
 फूट ने अपना देश बिगाड़ा खो दी सब की लाज ,
 बना हुआ है देश अखाड़ा फूट बुरी महाराज ,
 जगत में घर की फूट बुरी !
 तन से कपड़ा, पेट से रोटी फूट ने ली हथियाय ,
 धन बल मान सभी कुछ अपना हम ने दिया गँवाय ,
 जगत में घर की फूट बुरी !

^१ख्वाजा मुहैयन दीन चिश्ती । ^२ख्वाजा ग़ौस समदानी जिन को भारत में 'बड़ा पीर' भी कहा जाता है । ^३मौलवी मक़बूल हुसेन अहमदपुर के रहने वाले हैं । ^४करबला । ^५हज़रत हुसेन । ^६बलिदान । ^७हज़रत हुसेन का घातक ।

देश के गीत

पंजाबी भाषा में तो आप को सैकड़ों देश के गीत मिलेंगे, परन्तु उर्दू में सब से पहले शायद महाकवि 'इक़बाल' ने ही देश का गीत लिखा । देश के बच्चे तथा युवक उसे लय और तन्मयता से गाते हैं -

मार ज़रा मे अच्छा हिंदोस्ता हमारा ।
हम बुलबुलें हैं उस की, वह गुलिस्ता^१ हमारा ॥
गुलबत^२ मे हो अगर हम, रहता है दिल बतन में ।
समझो हमें वहा ही, दिल हो जहा हमारा ॥
परबत वह सब से ऊँचा, हमसाया^३ आममा का ।
वह संतरी हमारा, वह पामवा^४ हमारा ॥
गोदी में खिलती है ज़िम की हज़ारों नदिया ।
गुलशन है ज़िन के दम से रूके जना^५ हमारा ॥
मजदब नही मिखाता आपस मे वैर ख्यना ।
हिंदी है, हम बतन है हिंदोस्ता हमारा ॥

इसी दौर में उन्होंने ने भारतीय बच्चों का राष्ट्रीय गीत 'मेरा बतन वही है, मेरा बतन वही है' और 'नया शिवाला' लिखे थे । अपने अंतिम दिनों में वह यह मय पीना छोड़ चुके थे, परन्तु प्याला आज भी दूसरों के हाथों में घूम रहा है । कवि 'अख्तर' शेरानी गाते हैं —

भारत, सब की आँख का तारा भारत ,
भारत है जन्नत का नज़ारा भारत ,
सब से अच्छा सब से न्यारा भारत ,
दुख-सुख में दुख-सुख का सहारा भारत ,
प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत !

^१उपवन । ^२निवासन । ^३पड़ोस । ^४रक्त । ^५वह जिस पर स्वर्ग का भी ईर्ष्या हो ।

उर्दू काव्य की एक नई धारा

शाही शानो-शौकत वाली बस्ती ,
 इज्जत वाली अजमत^१ वाली बस्ती ,
 मदियों की जिंदा शोहरत^२ वाली बस्ती ,
 तारीखों^३ का आग का तारा भारत ,

प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत !

कैसी भानी-भानी हवाएँ इस की ,
 कैसी नीली-नीली घटाएँ इस की ,
 कैसी उजली-उजली फिज़ाएँ इस की ,
 दुनिया में जन्नत का नजारा भारत ,

प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत !

यह गीत गाने के लिए लिखा गया है । सब मिल कर एक साथ इस पद को गाते हैं—‘प्यारा-प्यारा देश हमारा भारत’ और फिर दो व्यक्ति मिल कर अन्य पद गाते हैं । फिर सब वहीं पद गाते हैं ।

भारतवर्ष और महात्मा गांधी एक नाम होकर रह गए हैं, जैसे गोकुल और कृष्ण, फिर यह कैसे संभव था कि देश के गीत गाए जाते और महात्मा गांधी का गीत न गाया जाता ! इस नए युग में यह गीत भी गाया गया है और इस के गानेवाले हैं प्रसिद्ध मुसलमान राष्ट्रीय कवि ‘सागर’ निज़ामी । ‘महात्मा गांधी’ शीर्षक गीत में वे लिखते हैं—

कैसा सत हमारा

गांधी

कैसा संत हमारा !

दुनिया गो र्थी वेंरी उस की दुश्मन था जग सारा ,
 आगिब मे जब देखा साधू वह जाता जग हारा ,
 कैसा सत हमारा

गांधी

कैसा मत हमारा !

सच्चाई के नृ^१ में इन के मन में है उजियारा ,
बातिन^२ में शक्ती ही शक्ती ज़ाहिर^३ में बेचारा ,

कैसा मत हमारा

गांधी

कैसा मत हमारा !

बूढ़ा है या नए जन्म में बर्मा का मतवाला ,
मोहन नाम सही पर माधू रूप धर्ती है सारा ,

कैसा मत हमारा

गांधी

कैसा मत हमारा !

भारत के आकाशपै है वह एक चमकता तारा ,
सचमुच जानी सचमुच मोहन सचमुच प्यारा-प्यारा ,

कैसा मत हमारा

गांधी

कैसा मत हमारा !

यह गीत 'कोरस' में गाने वाले हैं । इन की लय और तान भी वैसी ही है । इन को पढ़ते समय प्रतीत भी ऐसा ही होता है जैसे देश-प्रेमियों का जलूस-स्वदेश प्रेम से विभोर होकर यह गीत गाते-गाने जा रहा है ।

वैसे तो देश और उस की विभिन्न समस्याओं के संबंध में इतने गीत लिखे गए हैं कि केवल देश के गीतों से ही एक पुस्तक तैयार हो सकती है । 'हुमायूँ' के १९३८ के वार्षिक अंक में श्री हामिद अल्लाह 'अफ़सर' मेरठी का एक सुंदर गीत 'भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से न्यारा

हैं' उद्धृत हुआ है, जो आगामी पृष्ठों में दिया गया है, यहां मैं मौलवी मुहम्मद फ़ैज़ लुधियानवी, मुंशी फ़ाज़िल के गीत का एक बंद देना चाहता हूं। सोणु हुणू देश-वासियों को शकलत की नींद से जगाने के लिए ही यह गीत लिखा गया है—

आन पड़ी है मुश्किल भारी,
लेकिन तुम पर नाद है तारी^१,
जाग उठा है खलकत^२ सारी,
सुन कर बेदारी^३ का राग,
ऐ हिंदी, तू अब तो जाग !

माया के गीत

अतीत काल से संतजन माया को कोसते आए हैं। कबीर ने लिखा है—

माया महा दगनी हम जानी ।

निरगुन फाँस लिए कर डोले, बोले मधुरी बानी ।

केशव के कमला हैं बेदी, शिव के भवन भवानी ।

माया के विषय में इस युग के प्रायः सभी कवियों ने गीत लिखे हैं। मैं यहां एक-दो गीत दूंगा। माया के संबंध में अधिक लोकप्रिय होनेवाला गीत जो बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में उद्धृत होने के बाद जन-साधारण की ज़बान पर चढ़ गया है वह कवि मनोहरलाल राहत का गीत है। यह सब से पहले सुदर्शन जी की मासिक पत्रिका 'चंदन' में निकला था। कवि लिखता है:—

बाबा, सुन लो मेरा गीत !

दुखिया मन है दुखिया काया,
छूट गया है अपना पराया,
दुनिया क्या है ? माया, माया !

^१छाई। ^२सृष्टि। ^३जागरण।

माया के सब मीत हैं लेकिन ,
 माया किस की मीत ?
 बाबा, सुन लो मेरा गीत !
 माया वाले लाभ के बंदे ,
 तन के उजले मन के गंदे ,
 झूठी दुनिया झूठे धंदे ,
 कोई नहीं है संगी-साथी ,
 सब की झूठी प्रीत !
 बाबा, सुन लो मेरा गीत !
 माया ही से प्यार है सारा ,
 झूठा यह संसार है सारा ,
 खोटा कारोबार है सारा ,
 गीत का कोई खरा नहीं है ,
 सब की खोटी रीत !
 बाबा, सुन लो मेरा गीत !

इसी सिलसिले में स्वर्गीय अब्दुल रहमान बिजनौरी का एक गीत 'जांगी की सदा' भी काफ़ी मर्मस्पर्शी है। मैं इस के दो बंद नीचे देता हूँ—

यह निथरी-निथरी आँखें ,
 यह लबी-लंबी पलके ,
 यह तीखी-तीखी चितवन ,
 यह मुंदर-मुंदर दर्शन ,
 माया है, सब माया है !
 यह गोरे-गोरे गाल ,
 यह लबे-लबे बाल ,
 यह प्यारी-प्यारा गरदन ,
 यह उभरा-उभरा यौवन ,

माया है, सब माया है !

माया की मदिरा पीकर गहरी नींद में सोने वालों को जगाने के लिए श्री अमरचंद 'कैम' ने भी एक सुंदर गीत लिखा है—

उठ निद्रा से जाग ऐ प्यार, उठ आलस का त्याग ऐ प्यारे !
तेरे जागे जाग उठेंगे, तेरे सोए भाग, ऐ प्यारे !
इस धन से क्यों खेल रहा है, यह धन तो है नाग, ऐ प्यारे !
मन चंचल है, थामे रखना, चंचल मन की बाग, ऐ प्यारे !
आशा तृष्णा जाल सुनहरी, इन दोनों से भाग, ऐ प्यारे !
माया एक मनोहर छल है, इस माया को त्याग, ऐ प्यारे !
'वकार' साहब का यह गीत भी काफ़ी शिक्षाप्रद है—

रंग रूप रस सब माया है !

इस माया की चाल से बचना, इस माया के जाल से बचना ;
इसने बहुतों का मन भरमाया है ।

रंग-रूप-रस सब माया है !

रंग की लहरें जाल की तारें, मन-पछी उलझा कर मारे ;
इस में फँस कर मन पछुताया है !

रंग-रूप-रस सब माया है !

रंग है क्या, इक नाभ^१ का धोका, रूप है क्या, इक गीष्म का धोका ;
रस क्या ? ढलती फिरती छायी है !

पंडित इंद्रजीत शर्मा के एक-दो चौपदे भी देखिए:—

माया आनी - जानी है ,

माया बहता पानी है ,

माया रूप कहानी है ,

त्याग रे मृग, माया त्याग !

^१शुद्धि—यह शब्द पंजाबी भाषा का है ।

माया को तू मीत न जान ,
इस वैग्न की प्रीत न जान ,
मीधी इस की रीत न जान ,

त्याग रे मूरख, माया त्याग !

जान पाप का मूल इसे ,
जान दुखो का मूल^१ इसे ,
याद न कर अब भूल इसे ,

त्याग रे मूर्ख, माया त्याग !

संसार

कवियों ने संसार को कई पहलुओं से देखा है, और ऐसा ज्ञात होता है कि उन के हाथ भ्रांति के सिवा कुछ नहीं आया। पंजाब के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि साईं बुल्लेसाह ने इसे भीतर से देखने का उपदेश दिया है :—

इस दुनिया बिच अंधेरा है ,
इह तिलकन बाज़ी वेहड़ा है ,
बड़ अंदर देखा केहड़ा है ,

बाहर खफ़तन पड़े दुहेदीऐ^२ !

वे सूफ़ी थे फ़कीर थे, कदाचित् उन्होंने ने ऐसा किया हां, परंतु जन-साधारण ना ऐसा नहीं कर सकते और जन-साधारण के दुखों से दुखी कवि इस के भीतरी रूप को देख कर कब शांत हो कर संताप से बैठ सकते हैं ? अबुल अमर हफ़ीज^३ संसार को दुखी देखते हैं और एक गीत में कहते हैं:—

^१ माला । ^२ साई बुल्लेसाह कहते हैं कि इस दुनिया में चहुँदिस अंधेरा ही अंधेरा है, वह तो एक फ़िसलने आगन को नाई है । जो आता है फ़िसल जाता है । ये बावरी, तू इसे भीतर से देख । पागल, बाहर ही क्यों सर पटक रही है ?

दुखिया सब संसार ,

प्यारे, दुखिया सब संसार !

मोह का दरिया, लोभ की नैया, कामी खेवनहार ,

मौज के बल पर चल निकले थे, आन फैसे मँझधार ,

प्यारे, दुखिया सब संसार !

और इन दुनिया वालों की दुनियादारी से भी कवि दुखी है:—

तन के उजले, मन के मैले, धन की धुन अमवार ,

ऊपर - ऊपर राह बतावे, भीतर से बटमार ,

प्यारे, दुखिया सब संसार !

‘अहसान’ साहब ने भी ‘संसार’ पर एक गीत लिखा है और इसे सपना कहा है:—

मीस नवा कर भरना रोए, छोड़ के उत्तम देस ।

उस का चिंता राम ही जाने, जिस का पी परदेस ॥

मावन औ फिर काली बदली, बूँदनियों के तार ।

रीत जगत की प्रांत से खाली, सपना है समार ॥

इंद्रजीत शर्मा इसे ‘फूठ’ समझते हैं । समझते हैं संसार में मत्त्य कुछ नहीं, नित्य कुछ नहीं। सब फूठ है । इस लिए कहते हैं:

भूटा है यह दुनियादारी, भूटा है बोहार ,

प्रेम है भूटा, प्रीत है भूटी, भूटा है सब प्यार ,

प्यारे भूटा सब संसार !

गिश्ते-नाते भूठ के बंधन, हैं जी का जंजाल ,

भूठ का चारों ओर जगत में फैल रहा है जाल ,

प्यारे भूटा सब संसार !

भूठे ज्ञानी, भूठी बानी, भूटा दीन उपदेश ,

भूठी रीत जगत की बाबा, देश हो चाहे विदेश ,

प्यारे भूटा सब संसार !

भूठी नैया, भूटा खंघट, भूठे हैं पतवार,
भवसागर में आन फँसे हैं, कैसे हो उद्धार ?

प्यारे भूटा सब संसार !

पंडित बिहारीलाल 'साबिर' का जग में प्रेम दिखाई देता है और वे लिखते हैं:—

यह जग प्रेम-पुजारी है बाबा !

बिरहन का मन प्रेम का मंदिर ,

प्रियतम इस मंदिर के अंदर ,

ईश्वर प्रेम, प्रेम है ईश्वर ,

इस का गत न्यायी है बाबा !

यह जग प्रेम-पुजारी है बाबा !

और इतनी भिन्न बातों का देख कर कोई क्या निर्णय कर सके ? वास्तव में न संसार सपना है, न भूठ है, न प्रेम-पुजारी है, कुछ है तो अपने मन का प्रतिबिम्ब है । जैसा किसी का मन हाता है वैसा ही उसे संसार लगता है ।

जीवन

जीवन क्या, जग में भाँकी है !

भँकार कौन बीणा की है ?

है चमक मंघ की, बिजली की ,

यह फुदकन है किस तितली की ?

डोरी यह किम के है कम में ,

जो उड़ा रहा दुनिया भर में ?

यह उलझन कैसा बाँका है !

श्री उदयशंकर भट्ट ने अपनी 'जीवन' शीर्षक कविता में कुछ ऐसे ही प्रश्न किए हैं । हाँ, यह उलझन ही है ।

जीवन माया है अथवा माया ही जीवन है, इस का कोई पता नहीं

चलता । वास्तव में माया, संसार और जीवन तीनों ही रहस्य हैं । जहां कवि माया और संसार की गुथी को नहीं सुलझा सके, वहां जीवन की गुथी उन से क्या सुलझती !

उर्दू के इस दौर में जीवन पर भी गीत लिखे गए हैं । मैं एक गीत देता हूं, जिस में जीवन, संसार, और माया तीनों पर ही प्रकाश डाला गया है । कवि लिखता है:—

जीवन दुख की पोट है प्यारं ,

जीवन दुख की पोट !

जीवन का अभिमान भी झूठा, ख्याति और सम्मान भी झूठा ,
झूठा इस की चोट ऐ प्यारं, झूठी इस की चोट !

जीवन दुख की पोट है प्यारं ,

जीवन दुख की पोट !

जन्म पै मृग्य, क्यों मुसकाए ? मर्ग पै क्यों कोई नीर बहाए ?
काल के मन में खोट ऐ प्यारं , काल के मन में खोट !

जीवन दुख की पोट है प्यारं ,

जीवन दुख की पोट !

झूठा है संसार का सपना, झूठा झूठे प्यार का सपना ,
माया की यह ओट है प्यारं, माया की यह ओट !

जीवन दुख की पोट है प्यारं ,

जीवन दुख की पोट !

‘वक्त्र’ साहब ने लिखा है—

मोह चंचल की नदिया पर है, माया-रूपी वाट ,
आशा नैया, काम खेवैया, लोभ है इस के पाट ,
जीवन है इक रैन अंधरी, साँस दुखों की वाट !
सम्मुख केजली-बन है भयानक, चिंता मन का रोग ,
टेढ़ा मारग, लगा हुई है बाघ के मुँह को चाट ,

जीवन है इक रैन अंधरी, सांस दुगो की बाट !

रहस्यवादी गीत

हिंदी में आजकल छायावाद की बड़ी भ्रम है। रहस्यवाद का ही दूसरा नाम छायावाद है। हिंदी का सब से पहला रहस्यवादी कवि कबीर हुआ है। आजकल तो हिंदी में रहस्यवाद की बड़ी सुंदर कविता हो रही है। उर्दू साहित्य भी हिंदी की इस धारा से प्रभावित हुआ है। मौलाना 'वक्फार' ने 'उस पार' शीर्षक कविता में लिखा है—

मुझ पे चला है मंतर किम का ? धरती किम की अबर किस का ?
सूरज किस का सागर किम का ? कौन बसत उस पार ?

सजनी, कौन बसत उस पार ?

नीला अबर सुंदर तारे, यह सागर वे मोती सारे,
चाँद की नैया धारे-धारे, किरणों का पतवार !

सजनी, कौन बसत उस पार ?

बन के ऊँचे वृक्ष घनेगे, चीते शर औ' लाल बघेरे,
फिरते हैं दौड़े शाम-मवेगे, मोरो की झकार !

सजनी, कौन बसत उस पार ?

हिंदी के छायावादी कवियों के सम्मुख यह चीज़ कदाचित् बहुत फीकी जान पड़ेगी, किंतु इस से यह तो ज्ञात हो ही जायगा कि हिंदी भाषा ही नहीं, उस के भावों का भी उर्दू की इस नई धारा पर प्रभाव पड़ा है।

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' अपने काव्य 'अनंत के पथ पर' में ऐसी ही अनंत के पथ पर चलनेवाली का चित्र खींचते हैं जो सृष्टि और इस की अद्भुत चीज़ों को देख कर आश्चर्यान्वित रह जाती है और उस के हृदय में ऐसे ही प्रश्न उठते हैं। वह भी पूछती है:

इस रत्न-जटित अबर को, किम ने वसुधा पर छाया ?
करुणा की किरणें चमका, क्यों अपना आप छिपाया ?

नभ के परदे के पीछे, करता है कौन इशारे ?
 सहसा किस ने जीवन के, खोले हैं बंधन सारे ?
 इसी 'किस' की तलाश में वह अपनी कुटिया से चल देती है । 'वक्कार'
 साहब लिखते हैं—

पीत का किम की रोग लिया है ? ऐश को छाड़ा सोग लिया है ,
 याद में किम की जोग लिया है ? त्याग दिया घर-बार ,
 सजनी, कौन बमत उस पार ?

जोत जगी है किस की मन में ? बीत रही है किस की लगन में ?
 हूँट रही हूँ किस को बन में ? किस के हूँ बलिहार ?
 सजनी, कौन बमत उस पार ?

ज्ञान का सागर लहरें मारे , ध्यान की नैया धारे-धारे ,
 साँस हैं नैया खंवन द्वारे , कठिन बड़ी मँझधार !
 सजनी, कौन बमत उस पार ?

'प्रेमी' जी की 'अनंत के पथ पर' चल निकलने वाली भी ऐसा ही
 कहती है:

किम का अभाव मानस में , सहसा शशि-सा आ चमका ?
 है क्या रहस्य, बतला दे, कोई इस अंतर-तम का ?
 इस सरल-तरल नयनों में, किस की उज्ज्वल छवि छाई ?
 किम ने मेरे प्राणों में, अपनी तस्वीर बनाई ?
 अब पथ भूली उम मुख का, पाया यह कंटक-कानन ,
 किस ओर बहा जाता है, अब मेरा आकुल जीवन ?

इन दोनों कविताओं का देने से मेरा तात्पर्य कदापि यह दर्शाना नहीं
 कि 'वक्कार' साहब ने प्रेमी जी की कविता को देख कर अपनी कविता लिखी
 है । कहना केवल यह है कि उर्दू में भी, हिंदी जैसी, हिंदी के भावों से
 आत-प्रात कविताएं लिखी जा रही हैं ।

यों तो उर्दू के कवियों पर रहस्यवाद का प्रभाव खूब रहा है ।

नक्श फरियादी है किस की शखिण तहरीर का ।

कागर्जा है पैरहन हर पैकरो तस्वीर का ॥

'ग़ालिब' का यह शेर रहस्यवादी कविता का उत्तम उदाहरण है । उर्दू ग़ज़लों में बीसियों ऐसे शेर मिल जायेंगे और प्राचीन ढंग की ग़ज़लों कहनेवाले आजकल के उर्दू कवियों में भी यह रहस्यवाद किम्पी न किसी अंश में पाया जाता है । 'बर्क' का एक सरल पर रहस्यवादी शेर है:—

सौ बार यहां हम आए भी , यह बात न लौकिक जान सके :

यह आना-जाना कैसा है , क्यों आते-जाते रहते हैं ?

परंतु इस विषय के जो गीत उर्दू के कवि आजकल लिख रहे हैं उन में हिंदी से जो भाव तथा भाषा-स्वाम्य है, मेरा अभिप्राय उस की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने से ही है ।

विरहिन के गीत

संसार का साहित्य वियोग की करुण भावनाओं से भरा हुआ है ।
श्रीयुत पंत लिखते हैं :—

वियोगी होगा पहला कवि

आह से उपजा होगा गान ।

उर्दू में भी हिज्रा-फ़िराक़ सदैव से कवियों के आकुल मन में उथल-पुथल मचाते रहे हैं । वियोग चाहे किसी का हो हृदय को विकल कर देता है, रुला देता है । कौन जाने इस संसार में दिन-रात वियोग की अग्नि में कितने हृदय जल कर भस्म हो रहे हैं ! भायुक पंजाब के प्राणों पर तो वियोग का साम्राज्य ही है । अपने माता-पिता की जुदाई के खयाल से ही पंजाबी बहन सिहर उठती है और जी में रो कर गा उठती है—

मादा चिड़िया दा चवा वे, बाबल असा उड़ जाना ।^१

^१ऐ पिता, हम सहेलियों का गुट तो चिटियों के चंबे (भुट) जैसा है, हमें तो एक न एक दिन विभिन्न दिशाओं में उड़ जाना है ।

और फिर—

खेवून दे दिन चार नी माए बरनत नाहीं ।^१

पंजाबी युवती फुरकत की मारी बैठी है । कौवा मुँडेर पर आकर कौय-कौय करता है परंतु निराशा इस हद तक बढ़ गई है कि कौवे के बोलने से भी आशा नहीं बँधती । जल कर उसे कहती है—

तेरा काँ काँ कागा आइया, मेरे जी नू साइं ।

आह न आए, अगवा पक गइया, बात कई दिहाइं ।

चगा है जल जल बुझ जाइये, मुकन सगर पुआइं ।

दास भला की तेरा कागा, कर्म असाइं माइं ।^२

उर्दू कविता में विरहिन के गीत हिंदी के प्रभाव के बाद ही लिखे गए हैं । उर्दू का हिज्रो-फिराक़ प्रेमी को ही तड़पाता रहा, प्रेमिका को नहीं, परंतु जहां हिंदी ने अन्य बातों में पंजाबी की उर्दू कविता पर प्रभाव डाला है, वहां हिंदी की कविता के करुण स््रोत ने भी उर्दू शायरों को मोहित किया है ।

विरहिन के गीतों का आरंभ कैसे हुआ, इस विषय पर मैं कुछ नहीं कह सकता । इतना ही कहना काफी है कि इस शीर्षक से अनगिनत गीत

^१ चार दिन ही तो खेलने के हैं ऐ मा, मुझे मत रोक !—उस एक ही वाक्य में माता-पिता के जुदाई के खयाल और सुसल के व्यस्त जीवन का क्लेश और उस से उत्पन्न होनेवाली कैसी हस्यन्त मौजूद है, इस का पाठक भली भाँति अनुमान कर सकते हैं ।

रहे बाग, तेरा काय-काय मेरे जी को जलाती है । प्रतीक्षा करने-करते मेरी आँखें पक गइं, दिन पर दिन बात गए, पर वे नहीं आए (तेरे बोलने से आशा बँधे तो कैसे बँधे ?) विरह की आग में तिल-तिल जलने से तो अच्छा है कि शीघ्र ही जल कर सदैव के लिए बुझ जायें । (फिर दूसरे क्षण जब निराशा चरम सीमा तक पहुँच जाती है तो, विरहिन कहती है) 'ऐ कौवे भला इस में तेरा क्या दोष है, हमारे ही भाग्य मंद है । '

लिखे गए हैं। मुझे याद है आठ-नौ साल पहले जब पंजाब में ऐसे गीत नज़र न आते थे, मैं ने स्वयं एक गीत 'विरहिन का बसंत' शीर्षक से लिखा था, जो गवर्नमेंट कालिज होशियारपूर के हिंदी कवि-सम्मेलन में पढ़ा गया था। श्री 'हफ़ीज़' होशियारपुरी^१ ने भी, जो उस समय उस कालेज के छात्र थे, एक गीत लिखा था और मुसलमान होते हुए भी हिंदी में अच्छा गीत लिखने पर उन की विशेष प्रशंसा भी हुई थी।

मौलाना, 'वक्कार,' पंडित बिहारी लाल, पंडित इंद्रजीत शर्मा, श्री 'कैस' और दूसरों ने विरह भावनाओं को प्रदर्शित करने वाले बीसियों गीत लिखे हैं। हाल ही में उर्दू के प्रख्यात कवि मौलाना 'फ़ाख़िर' हरियानवी, जिन्होंने 'वहां ले चल मेरा चरखा जहां चलते हैं हल तेरे,' 'जफ़रवाल' आदि नज़्में लिख कर उर्दू में काफ़ी ख्याति प्राप्त की है, 'विरहिन का गीत' शीर्षक से एक गीत लिखा है:—

घर है सूना रात उदास ?

दीर्घ दिन अधियारी राते , कैमे गुज़रेगा बरमाते !

भूढ़ा था सब उन का बाते , रहता है अब यह विश्वास !

घर है सूना रात उदास !

मे दुखियारा पीत का मारा , पड़ गई मुझ पर विपता भारी ,

मन में सुलग रही अधियारी , कौन बुझाए दिल का प्याम ?

घर है सूना रात उदास !

छाई हैं घनघोर घटाए , चलती है पुरशोर हवाए ,

मन के भीत अगर आ जाए , तो पूरी हो मन का आस ।

घर है सूना रात उदास !

इसी संबंध में श्री 'हफ़ीज़' होशियारपुरी का एक गीत देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता। कोई विरह की मारी बँधी है , प्रतीक्षा करते

^१'हफ़ीज़' जालंधरी और 'हफ़ीज़' होशियारपुरी, एम० ए०, दो भिन्न काब हैं।

करते संध्या हो जाती है, परंतु उस का प्रियतम नहीं आता, जल कर कह उठती है:—

आग लगे इस मन को आग !

लो फिर रात विरह की आई , चारों ओर उदामी छाई ,
जान मेरी तन में धबराई , अपनी क्रिस्मन अपने भाग ।

आग लगे इस मन को आग !

काली और बरमती रैन , उस बिन नींद को तरसे नैन ,
जिस के साथ गया सुख चैन , उस की याद कहे, अब जाग ।

आग लगे इस मन में आग !

जिस दिन से वह पाम नहीं है , कोई खुशी भी राम नहीं है ,
जीने तक की आम नहीं है , जान को है अब तन से लाग !

आग लगे इस मन में आग !

कौन जिए औ' किस के सहारे , माटे-माटे बोल मिधारे ,
गात कहा वे प्यारे-प्यारे ! अब न तान न अब वह राग !

आग लगे इस मन में आग !

और फिर जल कर ताना देते हुए कहती है:—

दरम दिखा कर जा छिप जाए , कौन ऐसे से प्रीत लगाए ?

क्यों अपनी कोई दमा सुनाए , छोड़ मुहब्बत का खटराग ?

आग लगे इस मन में आग !

श्री अमरचंद्र 'कैस' का गीत 'पी दर्शन की प्यास' भी काफ़ी लोकप्रिय हुआ है । लिखते हैं:

फुलवाड़ी में फूल हैं फूले ,

सखियों ने डाले हैं भूले ,

वह अपना दासी को भूले ,

होकर किस के दास ?

लगी है पी-दर्शन की प्यास ।

मुख को मतलब बेचैनों से ?
 काम है सारा दिन बैनों से ,
 कितने दूर है वह नैनो से—
 जो थे हर दम पाम ?
 लगी है पी-दर्शन की प्याम !
 बरसो बीते आँख लगाए ,
 इक जां पर मौ-मौ दुख पाए ,
 ये दिन आए उन ना आए—
 टूट चली है आम !
 लगी है पी-दर्शन की प्याम !

मैं मानता हूँ कि इन गीतों में 'सखी, वे मुझ से कह कर जाते', 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल', 'तुम दुख बन इस पथ से आना', और ऐसे ही दूसरे उच्च कोटि के हिंदी गीतों की उड़ान नहीं, परंतु इतना मैं कहूँगा कि इन सब में दिल है, दिल की कसक और दिल के उद्गार भी हैं और भाषा के अत्यंत सरल होने के कारण यह दिल में घर भी कम नहीं करते !

स्मृति के गीत

स्मृति के गीत भी वास्तव में विरह के गीत ही हैं, परंतु गत शीर्षक में मैंने उन गीतों में से कुछ दिए हैं जो 'विरहिन' के नाम से लिखे गए हैं और यह शीर्षक तनिक व्यापक है। इस बात के अतिरिक्त मैं वर्तमान शीर्षक में यह भी दिखाना चाहता हूँ कि किस भौति विभिन्न कवियों ने एक ही भाव से प्रेरित होकर गीत लिखे हैं। कविता वास्तव में भावों का चित्र होती है और चूँकि इस संसार में एक-जैसी परिस्थितियों में फँसे हुए मनुष्यों के दिलों में एक-जैसे उद्गार उठ सकते हैं, इस लिए उन भावों को जिस भाषा का चोला पहनाया जाता है, वह भी एक-जैसी हो सकती है। अच्छी कविता है भी वही जिसे पढ़ कर उस परिस्थिति से दाँ-चार होनेवाले उस में अपने ही हृदय की प्रतिच्छाया देखें।

दिलवाले लोगों के जीवन में स्मृति भी काफ़ी दर्द पैदा किया करती है। श्रीमती महादेवी वर्मा की एक कविता में विरहिन का सारा जीवन बरसात की रात बन कर रह गया है, क्योंकि जीवन-आकाश पर कोई सुधि बन कर, स्मृति बन कर छा रहा है। लिखा है :—

बाहर घन तम, भीतर दुःख तम, नभ में विद्युत् तुम में प्रियतम ,
जीवन पावस रात बनाने, सुधि बन छाया कौन ?
हां तो वर्षा ऋतु में, वर्षा ही क्यों, शीत, ग्रीष्म, पतझड़, वसंत, सब ऋतुओं
में ही कौन जाने किस की सुधि किस के दिल का तड़पाती रहती है !

पंजाबी भाषा के कवि नंदकिशोर 'तेरी याद' नामक कविता में लिखते हैं:—

जिस बेले पत्तिया दे पकवे, हस हस पौन हिलादी ए ,
जिस दम कुदरत धरती उत्त पल्ले नवे बिछांदी ए ,
फुलां दे जद मुखवा उत्त आंस आँसू टपकांदी ए ,
अग मुहब्बत दी दिल जिम दम बुलबुल दा गरमांदी ए ,
तेरी याद दिला दे जानी क्यों उम बेले आंदी ए ?^१

श्री अखतर हुसेन रायपुरी के भाई श्री मुजफ़्फ़र हुसेन 'शमीम' ने, जो अपनी कविताओं में सरल हिंदी शब्द भर कर उन्हें संगीतमय बना देते हैं, एक गीत लिखा है। वह ऐसे ही भावों से परिपूर्ण है।

जब पिछले पहर का कोयल उठ कर प्रात के गीत सुनाती है ,
जब शय के महल में सुबह की तुल्हन आग्वे मलते आती है ,
जब सर्द हवा हर पगडंडा पर लहराती बल ग्वाती है ,

^१ जिस समय बयार हँस हँस कर पत्तों के पंखों को झिलाता है, जिस समय प्रकृति धरती पर नए पल्लव बिछा देती है, जब फूलों के मुखों पर आंस अपने आँसू टपकाती है, और जब बुलबुल के हृदय में प्रेम की आग धधक उठती है; ऐ हृदयों के प्यारे उम समय सुभे तेरी स्मृति क्यों नूतन बन बन आती है ?

जब बात सबा से करने में एक-एक कली शरमाती है ,
जब पहली किरण सूरज की उठ कर सैरे चमन को जाती है ,
आकाश से ले पाताल तक इक मस्ती सी छा जाती है ,
तब क्या जाने कबगत सबा चुपके में क्या कह जाती है ?
फिर दर्द-सा दिल में होता है, फिर याद तुम्हारी आती है !

पंजाब के तरुण उर्दू कवि रणवीर सिंह 'अमर' ने भी अपनी एक कविता में बिल्कुल एक ऐसे ही चित्र खींचा है । लिखते हैं :-

जब नीले-नीले आँवर पर घनघोर घटा छा जाती है ,
औ' सावन का मखमूर^१ हवा जब गिंदो^२ को बहकाती है ,
शामोश आँधेरी रातों में, जब बिजली दिल दहलाती है ,
औ' काली-काली बदली जब नयनों से नार बहाती है ,
उस वक़्त मेरे प्रीतम मुझ पर मदहोशा-सी छा जाती है ,
इक दर्द-सा दिल में उमता है और याद तुम्हारी आती है ।

श्री फ़िदा पटियालवाली का गीत ('तब याद सताती है तेरी') ऐसे ही भावों से ओतप्रोत है ।

प्रेम के गीत

प्रेम के बिना दुनिया में कुछ नहीं । यही स्वर्ग है; नरक भी यही है । कहीं यह अपनी प्रशंसनीय सूरत में मौजूद है और कहीं अपने निदनीय रूप में ।

एक आत्मा एक बार एक फ़रिश्ते से दो-चार हुई और उस से पूछने लगी—'स्वर्ग का सब से निकटवर्ती मार्ग कौन-सा है, ज्ञान का या प्रेम का ?' फ़रिश्ते ने आश्चर्य से आत्मा को ताकते हुए कहा, 'क्या ये दो पृथक् मार्ग हैं ?'

विख्यात कवि हज़रत आज़र^३ जालंधरी ने भी लिखा है :—

^१मस्त । ^२मतवाली ।

जो दिल कि मुहब्बत का गुनहगार नहीं,
जो दिल कि मुहब्बत का सजावार नहीं,
पत्थर है उसे दिल न कहो ऐ 'आज़र',
जिस दिल को मुहब्बत से सरोकार नहीं ।

फिर आप जानते हैं कवि और सब कुछ होते होंगे, पत्थर-दिल नहीं हांते और वह भी पंजाब के कवि—जहां प्रेम का शाश्वत दरिया 'हीर-राँभा,' 'सस्सी-पुन्नू', 'साहनी-महीवाल', जैसे प्रेमियों के अमर अफ़सानों की सूरत में बहता है; जहां रिंद और सूफी एक ही समय इस चरमे से स्फूर्ति प्राप्त करते हैं ! अपनी प्रेमिका की संग-दिली को देख कर पंजाब का सच्चा प्रेमी पुकार उठता है :—

हीरे नी मुन मेरीये हीरे आसा वाग राभन मर वहना ।^१

और पंजाब के देहात की प्रेमिका साफ़ शब्दों में कह देती है:—

राँभा जोगी त मैं जागियानी, उस दा खातिर भरसां पानी ।

तो फिर यह कैसे संभव था कि पंजाब में कविता का कोई युग आता और उस में प्रेम के गीत न लिखे जाते ? इस युग के प्रे़क कवि ने प्रेम के गीत लिखे हैं । मैं इन में से केवल दो यहाँ देना चाहता हूँ । एक उर्दू के प्रसिद्ध कवि और लेखक डाक्टर महम्मद दीन 'तासीर', प्रिंसिपल, इस्लामिया कालेज, अमृतसर का और दूसरा फ़ार्मन क्रिश्चियन कालेज के किसी मुसलमान छात्र सिराजुद्दीन 'ज़फ़र' का । पहला गीत इस प्रकार है:—

तुम भी प्रीत करो तो जानो , हम दुखियों की फ़रियादों को ।

दिल में ठोस उठे तो दिल से , तुम भूलो सब वेदादों^२ को !

प्रीत करो तो जानो !

प्रीत करो अपने जैसे से , सुंदर सूरत पत्थर दिल से ,

^१ हे मेरी हीर जैसी प्रेमिका, मुन मैं तो तेरे कारण राँभे की भाँति मर जाऊँगा—पंजाब का हर प्रेमी राँभा है, और हर प्रेमिका हीर । ^२ अत्याचार

दर दर सर टकराओ जैसे , दीवानी मौजें साहिल से !

प्रीत करो तो जानो !

प्रीत के शोले^१ ऐसे लपकें , जल-बुझ जाएं सब गुन-औगुन !

ना कोई अपना ना कोई दूजा , ना कोई बैरी ना कोई साजन !

प्रीत करो तो जानो !

‘जफ़र’ का गीत है:—

रोग लगा बैठा — कर के तुझ मे प्रीत !

मेरी ठडी माँसे आग ,

मेरी आँहें दीपक राग ,

मेरे नगमे दुख के गाँत ,

रोग लगा बैठा — कर के तुझ मे प्रीत !

मेरी आँखें वर्षा पैर ,

मेरा हर आँसू बेचैन ,

रोते रहना मेरी रीत !

रोग लगा बैठा — कर के तुझ मे प्रीत !

प्रकृति के गीत

मैं वसंत के संबंध में लिखे गए गीतों का पहले उल्लेख कर चुका हूँ । वे भी एक तरह प्रकृति से ही संबंध रखते हैं । परंतु सर्दी-गर्मी, बारा-बाटिकाओं, पहाड़ों और वनों के संबंध में भी इस दौर में गीत लिखे गए हैं ।

मौलाना मक़वूल अहमद ने सर्दी को लेकर एक गीत लिखा है । मौलाना ने सर्दी के साथ ही एक देहाती कुटुंब का जो वर्णन किया है वह सुंदर तो है ही पर साथ ही यथार्थ भी कितना है, इस का पाठक स्वयं अनुमान कर सकेंगे । लिखते हैं:—

आया है जाड़े का मौसम, मन मन चले हवा पिछुवाई ।

^१ज्वालाएँ ।

शाम हुई सूरज है पीला, धूप में हलकी ज़रदी छाई ।
 गिरे कबूल, कौवे लौटे, काँव-काँव कर धूम मचाई ।
 आया है जाड़े का मौसम, मन मन चले हवा पिलवाई ॥
 मानादीन, बिहारी, बीग, हैं ये तीनों भाई-भाई ।
 नबरदार के खेत में मिल के, करते हैं तीनों नरवाई ।
 आया है जाड़े का मौसम, मन मन चले हवा पिलवाई ॥
 घास का गट्टा मिर पर रखे, नदी पार से तीनों भाई ।
 आए और बहन ने ज़ल्दी, कड़वा^१ डाल चिलम सुलगाई ।
 आया है जाड़े का मौसम, मन मन चले हवा पिलवाई ॥
 आग ताप के बैठे तीनों, जब तन में कुछ गर्मी आई ।
 ढोल उठा कर बिरहे छेड़ें, कबित पढ़ें, गाई चौपाई ।
 आया है जाड़े का मौसम, मन मन चले हवा पिलवाई ॥

और फिर सर्दियों की रात का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

पग्व पग्वरू कोई न डाले, मार्य-मार्य दे कान सुनाई ।
 हवा बजाए मीठी वन में, काली रात अंधेरी छाई ।

खाते-पीते कुनबे का ज़िक्र करने के बाद फ़ाक़ामस्तों की बाबत लिखते हैं:—

ऐसी रात में ऐ परमेश्वर राम आई कब कड़ी कमाई ।
 मेहनत करने वाले ने जब पूरे पेट न रोटी खाई ॥

भारत के सुप्रसिद्ध उर्दू कवि मौलाना 'सीमाब' अकबराबादी के सुपुत्र
 श्री एजाज़ सिद्दीक़ी ने तुहिन-कण और तारों पर एक सुंदर गीत लिखा है—

ऐ सुंदर ऐ अचपल तारों, ऐ ख के जानी मय्यारी^२,
 माँझ भई और लगे चमकने, काले बदरा बीच दमकने,
 जग को मोधी बात बताते, ईश्वर का उपदेश सुनाते,

^१ तमाख । ^२ धूमने वाला सितारा ।

दूर भई जग की अधियारी, मोवन लागी दुनिया मारी ।
 ओम पड़ी मोती बरमाए, फूल औ' पात के मुँह धुलवाए,
 दूध पै अपना रंग जमाया, सब्जों को पुष्पराज बनाया,
 भर दी ओम से डाली-डाली, मगरी गत करी रखवाली,
 भोर भई तो माँद पड़े तुम ! पापी जग में रूढ़ गए तुम !

लोरियां

हर देश में और देश की हर भाषा में लोरियां हैं । लिखने में यह बहुत कम आती हैं, पर हर देश, हर नगर और हर गाँव में स्त्रियां अपनी सीधी सरल ज़बान में लोरियां गाती हैं । कवि भी कभी-कभी लोरियां लिखते हैं और उन की लिखी हुई लोरियों में सरलता के साथ-साथ कविता भी होती है ।

‘यशोधरा’ में श्री मैथिलीशरण जी गुप्त ने एक बहुत सुंदर लोरी लिखी है । लोरी का यह निम्नलिखित पद दुःखिनी यशोधरा के हृदय में प्रति-पल जलने वाली अग्नि का द्योतक है: —

रहे मंद ही दीपक माला,
 तुझे कौन भय कष्ट कमाला ?
 जाग रही है मेरी ज्वाला,
 सो मेरे आश्वासन मो !

उर्दू कविता के इस रंग में भी लोरियां लिखी गई हैं । पंडित मोहन लाल ‘साहिर,’ बी० ए० ने भी एक लोरी लिखी है । लोरी देनेवाली मां यहां भी यशोधरा जैसी परिस्थिति में है, और भाव इस में गुप्त जी की लोरी जैसे ही हैं । लड़के का पिता उस की मां को छोड़ गया है । मां बच्चे को सुलाती और अपने दुःख की कहानी कहती है । एक बंद देखिए—

सो जा मेरे राजदुलारे, सो जा मेरी आँख के तार,
 तेरी मा ने गुम का गहना, बच्चे तेरी खातिर पहना !
 मैं न रहूँगी तब तू रहना, जब वह आएँ तब यह कहना—

रो-रो के अम्मा बेचारी , तक-तक कर थक-थक कर हारी ,
गिन-गिन कर रातों के तारे ! सो जा मेरे राजदुलारे !

एक मुसलमान मां की लोरी है—

सो जा मेरे प्यारे, सो जा !

मेरे राजदुलारे, सो जा !

नोंद की परियाँ आआ आआ, मांढी-मांढी लोरियाँ गाओ ;

मेरी जान है नन्हा प्यारा, मेरा मान है नन्हा प्यारा ,

ज्यों-ज्यों तू परवान^१ चढ़ेगा, जग में मेरा नाम बढ़ेगा ,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !

मेरे राजदुलारे सो जा !

हिम्मत अज़मत^२ चाकर तेरी , हशमत^३ शौकत चाकर तेरी ,

तख्त भी तेरा ताज भी तेरा , बख्त भी तेरा बाज^४ भी तेरा ,

कैसे-कैसे काम करेगा , पैदा जग में नाम करेगा ,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !

मेरे राजदुलारे सो जा !

धूम में तेरा ब्याह रचाऊ , गोरी चिट्ठी बेगम लाऊ ,

धन औ' दौलत तुझ पर वारूँ , राज को तेरे मदक़े^५ वारूँ ,

गोद खिलाऊँ तेरे बच्चे , सो जा सो जा मेरे बच्चे ,

सो जा मेरे प्यारे सो जा !

मेरे राजदुलारे सो जा !

एक दूसरी लोरी सुनिए । देहात की मुसलमान मां लारी दे रही है—

चमगादड़ ने धूम मचाई, धुममा छाया राम दोहाई ,

^१जवान होगा । ^२प्रतिष्ठा । ^३शान-शौकत । ^४कर जो छोटे राजा बड़े राजाओं को देते हैं । ^५निश्चावर ।

आई रात अँधेरी छाई, हरयाली^१ ने लोरी-गाई,
अगला भूले बगला भूले,
सावन मास करेला फूले^२।

प्यारी नींद का प्यारा आना, भारी पलकों में पढ़चाना,
लो हम गाएं प्रेम का गाना, अल्लाह आमों^३, तुम से जाना—

अगला भूले बगला भूले,
सावन मास करेला फूले।

हामिद, सरवर, नैयर सोया, मोहन अपने घर पर सोया।
जो था बाहर भीतर सोया, सोजा, सो जा, सब घर सोया!

अगला भूले, बगला भूले,
सावन मास करेला फूले।

बच्चे को नींद से जगाने के लिए भी लोरियां गाई जाती हैं। पंजाब की मां अपने 'कान्ह' को जगाने के लिए पल भर में यशोदा बन जाती है और बच्चे को प्यार से जगाती हुई कहती है:—

बार्मा रोटी मजरा मक्खन, नाल देनिया दही,
जागिये गोपाललाल, जागदा क्यों नहीं^४?

गीतों के इस रंग में भी बच्चे को जगाने समय गाई जाने वाली लारों के दो बंद देता हूं:—

जागो मेरे प्यारे जागो!

दिल में बसने वालो जागो, मनमाहन मतवाले जागो,
घर भर के उजियाले जागो, गुल्शन-दिल के लाले जागो,

^१लोरी देने वाली का नाम। ^२एक देहाती लोरी का पहला बंद जिस का लोरी से कोई संबंध नहीं होता। ^३आमीन का संक्षिप्त रूप। ^४बासी रोटी और ताज़ा मक्खन तेरे लिए तैयार है, मैं तुम्हें साथ में दही भी दे रही हूं, ऐ मेरे गोपाल, जाग! तू जागता क्यों नहीं?

उर्दू काव्य की एक नई धारा

मादकता के प्याले जागो ,
जागो मेरे प्यारे जागो !
तुतली बोली बोल मुनाओ , उछा, दौड़ा, गोद में आओ ,
लस्मी पीओ माखन खाओ , गुड़िया लेकर उसे नचाओ ,
घर भर में इक राम रचाओ ,
जागो मेरे प्यारे जागो !

मज़ाक और व्यंग्य के गीत

मैं ने गीतों के विभिन्न रूप केवल यह दर्शाने के लिए दिए हैं कि उर्दू काव्य के इस रंग ने भी व्यापक सूरत प्राप्त की है। इस युग में काव्य के हर पहलू पर गीत लिखे गए हैं। इन में व्यथा है, विरह है, प्रेम है, अग्नि है प्रकृति-सौंदर्य है, रहस्यवाद या छायावाद है, और भी प्रायः सब तरह के रस हैं। एक रस है जिस के संबंध में मैं अभी तक कुछ नहीं कह पाया, और वह है हास्यरस। परंतु यदि इस युग की कविताओं की छानबीन की जाए तो आप को हास्यरस की कविताएं भी मिलेंगी। यह बात और है कि कहीं हम ज़ोर से हँस दें कहीं मुसकरा कर रह जाएं और कहीं हमारी हँसी दिल की चारदीवारी तक ही परिमित रह जाय। 'वज़ार' साहिब के 'मेरे फूट गए हैं भाग' नामी गीत का ही लीजिए। देखिए पंजाब के अनपढ़ कुटुंब के द्वंद्वमय गृह-जीवन के चित्र के साथ ही गीत में व्यंग्य की कितनी अधिक पुट है। मास बहू की नालायकियों का रोना रोती है, उसे गालियां देती है और साथ बावैला भी किए जाती है:—

चरखे तार न चूल्हे आग , मेरे फूट गए हैं भाग !

बहु अभागिन जब से आई ,

रहती है हर गंज़ लड़ाई ,

पीने खाने में चतुराई ,

काम को कहती है खटगाग ! मेरे फूट गए हैं भाग !

इधर-उधर की बातें कर ले ,

स्वाँग हज़ारों दिन में भर ले ,
 नाम जो चाहो, लाखों धर ले ,
 मुहफ़्ट, बोले जैसे काग ! मेरे फूट गए हैं भाग !
 चटक-मटक में सब से न्यायी ,
 गुन जो देखो औगुनहारी ,
 कुल-खोनी यह चंचल नागी ,
 इस को इस ले काला नाग ! मेरे फूट गए हैं भाग !

मि० 'मुज़फ़्फ़र' अहसानो ने शिक्षित बेकारों की दशा का कैसा व्यंग्य
 एक चित्र खींचा है ! लिखते हैं:—

भूक लगी है भूक ! मुज़फ़्फ़र , भूक लगी है भूक !
 बी० ए० कर के बेकारी है ,
 जीने तक में लाचारी है ,
 नादारी ही नादारी है ,
 हूक उठती है हूक ! मुज़फ़्फ़र , भूक लगी है भूक !
 नादारी में प्रात लगाई ,
 प्रात लगा कर मुह की ग्वाड़े ,
 बिन पैसे का बाप न भाई ,
 चूक गया मैं चूक ! मुज़फ़्फ़र , भूक लगी है भूक !
 'आज़र' जालंधरी ने लिखा है—

पैसे के हैं दुनिया में तलबगार बहुत ,
 बन जाते हैं पैसे से यहां यात्र बहुत ,
 पैसा हो अंगार पास तो फिर ऐ 'आज़र' ,
 ग़मख़वार बहुत, मूनमो दिलदार बहुत ।

इसी पैसे के विषय में पंडित इंद्रजीत शर्मा ने एक गीत लिखा है—

पैसा है सग़ताज जगत में, पैसा है सग़ताज !
 पैसे ही का सग़दारी है, पैसे ही का राज ।

पैसा है तो मान है प्यारे, पैसा है तो लाज ।
 पैसा है सरताज जगत में, पैसा है सरताज !
 जब तक पैसा रहे गाँठ में, कोई न बिगड़े काज ।
 पैसा है तो सेठ कहावे, बिन पैसे मुहताज ।
 पैसा है सरताज जगत में, पैसा है सरताज !

‘ईंट का पत्थर’ शीर्षक कविता में ‘आतिश’ हरियानवी लिखते हैं—
 भेड़ ने बरसा उन कटाई, क्यों ग्वाएँ पर तरम कसाई ।
 शेर की मूँछ से बाल जो तोड़े, किस ने इतनी हिम्मत पाई ?
 क्यों करता है उस को ‘जी, जी’, जिस ने तुझ पर ईंट उठाई ?
 जिस ने तुझ पर ईंट उठाई, उस को पत्थर मार ।

अंतिम शब्द

अंत में दो एक बातें इन गीतों और पुस्तक में दिए गए संकलन के बारे में कह कर इस लंबी भूमिका के लिए मैं पाठकों से क्षमा चाहूँगा ।

पहली बात तो यह है कि शायद उच्च कांठि की हिंदी कविता का रसास्वादन करनेवाले पाठकों को इन में हिंदी गीतों की सी उड़ान तथा उन के गूढ़ भाव न दिखाई दें और वे इन को देख कर आधुनिक उर्दू कविता के संबंध में गलत राय कायम कर लें । उन पाठकों से मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि इन गीतों को समालोचना की कसौटी पर कसते समय यह बात भूल नहीं जानी चाहिए कि गीत उर्दू के शायरों के लिखे हुए हैं, जिन में से अकसर हिंदी लिपि तक से अपरिचित हैं, जिन के पास सुंदर तथा जँचे-तुले हिंदी शब्दों का इतना आधिक्य नहीं जितना हिंदी कवियों के पास है, और जिन्हें शब्दों की उपयुक्तता का भी इतना ज्ञान नहीं । उन को कठिनाइयों का हिंदी का वह कवि भली-भाँति समझ सकेगा जो उर्दू लिपि तक से अपरिचित हो और फिर भी उर्दू नज़्में तथा गज़लों अथवा उर्दू मसनवियां व रुबाइयां लिखने का प्रयास करे । फिर भी जैसा मैं ने पहले कहा था हिंदी और उर्दू के मिश्रण से पैदा होनेवाले इन गीतों

में बहुत कुछ है—व्यथा-वेदना, आशा-निराशा, हर्ष-उल्लास, उमंग-तरंग, विषाद-अवसाद के साथ-साथ इन में हृदय है और उस की कसक तथा उस के कामलतम उद्गार भी हैं। यदि सरलता और भाव-प्रधानता उत्तम काव्य की खूबियाँ हैं, तो यह गीत अवश्य ही काव्य के उत्तम उदाहरण हैं, और साहित्य में इन का अपना स्थान रहेगा, और मैं यह कह दूँ कि जन-साधारण का क्लिष्ट और दुरूह शब्दों से पुर, गूढ़ भावोंवाली कविताओं के मुक्ताबल में ये गीत अधिक अपने समीप जान पड़ेंगे और जनता इन्हें अधिक प्यार करेगी और अपनाएगी।

दूसरी बात मैं इन गीतों में प्रयुक्त हिंदी शब्दों तथा उन के उच्चारणों के बारे में कहना चाहता हूँ और वह, जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ, यह है कि इन गीतों में हिंदी शब्द कुछ तब्दीलियों के साथ प्रयोग किए गए हैं। इस के तीन कारण हैं। सब से बड़ा कारण इस परिवर्तन का यह है कि हिंदी के बहुत से शब्द उर्दू लिपि में शुद्ध लिखे नहीं जा सकते और चूँकि यह गीत उर्दू लिपि में लिखे गए हैं, उर्दू कवियों द्वारा लिखे गए हैं और उर्दू मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों में छपे हैं, इस लिए जैसे ये शब्द उर्दू लिपि में आ सकते थे वैसे ही कवियों ने इन का प्रयोग किया है। उदाहरण के तौर पर 'शक्ति', 'शांति' आदि शब्दों को उर्दू में लिखते समय 'शक्ती' तथा तथा 'शांती' ही लिखा जायगा और इस लिए महाकवि इक़बाल तथा दूसरे कवियों ने इन्हीं बदले हुए उच्चारणों से इन का प्रयोग किया है। जैसे: --

शक्ती भी शांती भी भक्तों के गीत में है।

दूसरा कारण इस तब्दीली का पंजाबी भाषा है। पंजाबी भाषा वास्तव में संस्कृत से ही निकली हुई है, परंतु शताब्दियों के हेरफेर से इस में बहुत अंतर आ गया है। उर्दू के इन गीतों में प्रयोग होनेवाले शब्दों में, बहुत से कवियों ने, वही उच्चारण हिंदी का उच्चारण समझ कर प्रयुक्त किया है। उदाहरण के तौर पर 'तत्व' का पंजाबी भाषा में 'तत' और

‘सत्य’ को ‘सत’ कहा जाता है। कवि इक़बाल ने पंजाबी हॉन के कारण इन संस्कृत शब्दों का वही उच्चारण लिया है जो पंजाब में प्रचलित है।
उदाहरणतया :—

जान जाए हाथ में जाए न सत,
है यहाँ इक बात हर मज़हब का तत।

मैं ने इस संग्रह में जो गीत दिए हैं उन में आप को ऐसे हिंदी शब्द भी मिलेंगे जो पंजाबी भाषा में बदलने के बाद उर्दू में लिए गए हैं।

तीसरा कारण यह है कि आधुनिक उर्दू काव्य पर हिंदी का जो प्रभाव पड़ा है, वह हिंदी की आधुनिक कविताओं का ही नहीं वरन् ब्रजभाषा से लेकर खड़ी बोली तक में लिखी जानेवाली सब कविताओं का है। इस लिए इन गीतों में आप को ब्रजभाषा के शब्दों का भी बाहुल्य मिलेगा। यह विषय अपने में ही काफी लंबा है और मैं इसे भाषा-संबंधी छान-बीन करनेवालों के लिए छोड़ कर संग्रह में दिए गए गीतों के संबंध में कुछ कहूँगा।

उर्दू काव्य के इस युग में इतने गीत लिखे गए हैं कि उन से कई संग्रह तैयार हो सकते हैं। इस छंटे से निबंध में सब गीत देना न तो ठीक है न संभव ही, इस लिए जहां तक मुझ से हो सका है मैं ने हर ‘स्कूल’ के कवियों के गीत देने का प्रयास किया है। फिर भी हो सकता है कुछ रह गए हों। साथ ही संग्रह में मैं ने वे नज़में व गज़लें भी दे दी हैं जो हिंदी के बहुत समीप हैं। उद्देश्य मेरा केवल हिंदी-भाषियों को उर्दू के इस युग की कविताओं से परिचित कराना है और साथ ही मैं इस अभियोग का उत्तर देना चाहता हूं जो पंजाब पर लगाया जाता है कि पंजाब हिंदी के लिए मरुभूमि है। इन गीतों में मैं ने कुछ कवियों को छोड़ कर अधिकतर गीत पंजाब के उर्दू कवियों के ही दिए हैं और उन में भी उर्दू के मुसलमान कवियों का अधिक स्थान दिया है। उर्दू कविता की वत-मान धारा को देख कर कौन कह सकता है कि पंजाब हिंदी के लिए मरु-

भूमि है, और यहां हिंदी से लुआलूत का बर्ताव किया जाता है ?

इन गीतों का संग्रह करने में मुझे तीन वर्ष से अधिक लग गए और यथासंभव मैं ने इसे १९३८ तक अप टू डेट बनाने का प्रयास किया है, पर फिर भी हो सकता है कि कुछ सुंदर गीत मेरी दृष्टि से न गुजरे हों। इस के लिए मुझे अपनी मुसीबतों और परेशानियों से शिकायत है, जिन के कारण मैं कुछ अर्से के लिए पत्र-पत्रिकाओं का भली-भाँति अध्ययन नहीं कर सका। कानून के अध्ययन और आर्थिक कठिनाइयों के अतिरिक्त मेरी पत्नी की लंबी बीमारी और मृत्यु इस काम में बड़ी बाधा बनी रही। मेरी न्यून-ताओं और त्रुटियों के अतिरिक्त इस बात का विचार करके कि उर्दू में इन गीतों की कोई छपो हुई पुस्तक नहीं, और संकलन के लिए मुझे अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं का ही आश्रय लेना पड़ा है, पाठक यदि इस संग्रह में कोई खामी पाएं तो मुझे क्षमा कर दें।

अंत में यह कृतज्ञता होगी, यदि मैं उन कवियों को धन्यवाद न दूं जिन्होंने ने मुझे अपनी कविताएं इस संग्रह में छापने की आज्ञा देने की कृपा की है। इस काम में सहायता देने के लिए जिन पत्र पत्रिकाओं के संपादकों ने मुझे सहायता दी उन का भी मैं बहुत आभारी हूं।

उपेंद्रनाथ अरक

१८४, अनारकली, लाहौर

‘हफीज़’ जालंधरी

‘शाहनामा-ए-इस्लाम’ ‘नगमाज़ार’ और ‘सोज़ोसाज़’ के रचयिता, युग-प्रवर्तक कवि श्री ‘हफीज़’ जालंधरी के संबंध में, यहां मैं इस से अधिक कुछ न कहूँगा कि ‘हफीज़’ आधुनिक युग के उन दो-तीन कवियों में से एक हैं जिन्होंने उर्दू कविता के रुख को पलट दिया है, जो उर्दू में एक नया रंग लेकर आए हैं, और जिन के इस रंग को जन-साधारण ने अपने दिलों में स्थान दिया है। दूसरी खूबियों के अतिरिक्त ‘हफीज़’ के गीतों में नए छंद, मादक संगीत और स्थानीय रंग, ये तीन गुण उल्लेखनीय हैं। इन्होंने खूबियों के कारण, ‘हफीज़’ अरब और फ़ारस के कवि न हो कर अपने देश के—अपने भारत के—कवि हैं।

परमात्मा के हज़ूर में

तू ही सब का पालनहार !

तू ने यह संसार बनाया , इतना साग खेल रचाया ।
मोती हारे सोना रूपा , तेरी दौलत तेरी माया ।
दिन के रुख^१ पर तेरा परतब^२ , रात के सिर पर तेरा नाया ।
फूलों से धरती को ढांपा , तारों से आकाश सजाया ।
आग हवा मिट्टी श्री^३ पानी, सब में जांदा रो^३ को पाया ।
तू ही पालनहार है सब का, सब तेरे बालक हैं खुदाया !

तू सब से ख़ुश है प्यार !

तू ही सब का पालनहार !

^१मुख । ^२प्रतिध्वि । ^३चेतन, जिन में जान है ।

हर इक ने यह बात है मानी, कोई नहीं है तेरा सानी^१ ।
 दुनिया फ़ानी^२ है तू बाक्की^३, तू बाक्की है दुनिया फ़ानी ।
 तेरे नाम से हो जाती है, पैदा मुश्किल में आसानी ।
 दान भी तेरा, देन भी तेरा, तू ही दाता तू ही दानी ।
 तेरे भरोसे पर जीते हैं, क्या ज्ञानी औ' क्या अज्ञानी ।
 क्या मुफ़लिम^४ औ' क्या ज़रदार^५ !
 तू ही सब का पालनहार !

बसंत

(बसंती तराना से)

लो फिर बसंत आई, फूलों पै रंग लाई ।
 चलो बे-दरंग^६,
 लबे आवे-गंग^७,
 बजे जलतरंग,
 मन पर उमंग छाई, फूलों पै रंग लाई !
 लो फिर बसंत आई ।

आफ़त^८ गई ग़िज़ां^९ की, किस्मत फिरी जहा की ।
 चले मैगुसार^{१०},
 सुए लालाज़ार^{११},
 मये परदादार^{१२},
 शीशे के दर मे भाँकी, किस्मत फिरी जहाँ की ।
 आफ़त गई ग़िज़ां की ।

^१तेरे जैसा दूसरा । ^२नश्वर । ^३अमर । ^४निर्धन । ^५धनी । ^६बे-रोकटोक, बे-ख़टके । ^७गंगा के पानी के किनारे । ^८आपत्ति, मुसाबत । ^९पतझड़ । ^{१०}मय (मदिरा) पीनेवाले । ^{११}बाग़ की ओर । ^{१२}शीशे के परदे में छुपी हुई मदिरा ।

फूली हुई है सरसों, भूली हुई हैं सरसों ।
 नहीं कुछ भी याद ,
 यों ही बमुराद^१ ,
 यों ही शाद-शाद,^२
 गोया रहेगा बरसों, भूली हुई है सरसों ।
 फूली हुई है सरसों ।

लड़कों की जंग देखो, डोर औ’ पतंग देखो ।
 कोई मार खाए ,
 कोई खिलखिलाए ,
 कोई मुस्कराए ,
 तिकली^३ के रंग देखो, डोर औ’ पतंग देखो ।
 लड़कों की जंग देखो ।

है इश्क^४ भी जनू^५ भी, मस्ती भी जोश-खू^६ भी !
 कहीं दिल में दर्द ,
 कहीं आह सद् ,
 कहीं रग ज़र्द ,
 है यूं भी और यू भी ! मस्ती भी जोश-खू भी ,
 है इश्क और जनू भी ।

इक नाज़नी^७ ने पहने, फूलों के ज़र्द गहने ।
 है मगर उदाम ,
 नहीं पी के पास ,

^१सफल मनोरथ । ^२उल्लसित । ^३बचपन । ^४प्रेम, अनुराग । ^५उन्माद ।

^६रक्त का जोश । ^७तरुणी ।

गुमो रंजो-यास ,
दिल को पड़े हैं सहने , इक नाज़नी ने पहने
फूलों के जर्द गहने^१ ।

रखवाला लड़का

('तारों भरी रात' से)

रखवाला लड़का, खेतों का दूल्हा , बंसी बजा कर, गाने का रमिया ,
मेड़ों के ऊपर, फिगता है तन्हा^२ , हाथों में बंसी, पैरों से नंगा ,
अलबेले पन में , अमली फवन में ,
गोकुल के वन में , जैमे कन्हैया !
बंसी की लय में गुम हैं फिजाएं , फिगती हैं मदहोश^३ हर सू हवाएं !
जादू है क्या है ? या माजजा^४ है !
कोहो-बयाबां,^५ खेत और मैदां, बाहोश^६ बेहाश, सब खुद फरामोश !
क्यो ओ गलेबाज^७ ! तेरा यह अदाज ,
यह साज^८ यह साज^९ , तुझ को पता है ।
जादू है क्या है ? या मोजजा है !

^१ हफाज की बहार ईरान का बहार नहीं हिंदुस्तान की बहार है, जिसे भारत में बसंत कहते हैं । हफाज के यहा बसंत में सरसो फूलती है; खेतों और बाटिकाओं में हिंदुस्तानी बहार आती है; लटकते छेर और पतंग के लिए आपस में लटने हैं—कोई मार खाता है, कोई हँसता और कोई झिलझिलताता है । खून में जोश आता है, प्रेम और उन्माद में गमता पैदा होती है । दूसरी ओर घर में एक सती, पतिव्रता तर्गनी है, जिस ने उत्सव का खातिर शकुन मनाने के लिए फूलों के पाले गहने तो पहन लिए हैं, परंतु चूंकि प्रियतम परदेस में हैं, इस लिए उदास है । यह है हफाज का स्थानाय रंग जो उसे भारत का कवि बनाता है । ^२ अकेला । ^३ मदमत्त । ^४ अलौकिक । ^५ पहाड़ और मरुस्थल । ^६ होश वाले । ^७ मादक कंठवाले । ^८ दर्द । ^९ साज के अर्थ बाजे के होने हैं, रखवाले का साज उस की बंसरी ही है ।

जाग सोज़े इश्क़ जाग

जाग सोज़े-इश्क़^१ जाग , जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

जाग काम देवता , फ़ितना-हाए नौ^२ जगा ।

बुझ गया है दिल मेरा , फिर कोई लगन लगा ।

सर्द हो गई है आग । जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

पड़ गई दिलों में फूट , क्या बजोग^३ पड़ गया ?

पिरध्वी पर चार कुंठ एक सोग पड़ गया ।

सर निगूं है शेषनाग । जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

तू ने आँख बंद की , कायनात सो गई ।

हुस्ने खुद-पसद^४ की , दिन में रात हो गई ।

जर्द पड़ गया सुहाग । जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

तू जो चश्म वा करे^५ , हर उमंग जाग उठे ।

आहो-नाला^६ जाग उठे , राग रंग जाग उठे ।

जोग से मिले विहाग । जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

फिर उसी उठान से , तीर उठे कमां^७ उठे ,

सब्र^८ की ज़वान में , शोरे-अल्ल-अमां उठे !

जाग उठे दिलों के भाग । जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

जाग ऐ नज़र-फ़रोज़^९ , जाग ऐ नज़र-नवाज़^{१०} ,

^१प्रेम की जलन । ^२नए फ़ितने-फ़साद । ^३वियोग का पंजाबी उच्चारण ।

^४आत्म-गर्व । ^५आँख खोले । ^६निःश्वास और क्रंदन । ^७कमान । ^८संतोष ।

^९नयनों को अच्छे लगने वाले । ^{१०}आँखों को ठंडक पहुँचाने वाले ।

जाग ऐ ज़माना-सोज़^१, जाग ऐ ज़माना-साज़^२ !
जाग नींद को त्याग ! जाग सोज़े-इश्क़ जाग !

मन है पराए बस में

पूरब में जागा है सबेरा, दूर हुआ दुनिया का अंधेरा,
लेकिन घर तारीक^३ है मेरा ।
पच्छिम में जागी हैं घटाएं, फिरती हैं सरमस्त हवाएं,
जाग उठो मैखाने^४ वालो, पीने और पिलाने वालो,
जहर मिलाओ रस में !
मन है पराए बस में !

बाग़ में बुलबुल बोल रही है, नरगिस^५ आँखें खोल रही है,
शबनम^६ मोती रोल रही है ।
आम पै कोकिल कूक उठी है, सीने में इक हूक उठी है,
बन जाऊं न कहीं सौदाई^७ ! जानवरों की राम-दुहाई,
चुभती है नस-नस में ।
मन है पराए बस में !

बीत गया दिन रात भी आई, तारों ने महफ़ल भी सजाई,
उस ने मगर सूरत न दिखाई ।
वहम^८ कई टाले हैं मैं ने, तारे गिन डाले हैं मैं ने,
वादे का तो किस को यक़ीन^९ है, आँख में लेकिन नींद नहीं है,
नींद ने खाली क़समें ।
मन है पराए बस में ।

^१दुनिया को जलाने वाले । ^२ज़माने को देखे हुए चालाक । ^३अंधेरा । ^४मदिरालय । ^५पुष्प विशेष । ^६ओस । ^७पागल । ^८शंका । ^९विश्वास ।

लोगो छोड़ो दुनियादारी, जान गया उलफ़त^१ मैं तुम्हारी,
तह कर दो यह नसीहत^२ सारी ।

मुझ को तुम से काम ही क्या है ? मेरा नंगो-नाम^३ ही क्या है ?
इस दुनिया की प्रीत यही है, रस्म यही है रीत यही है,
टूट गईं सब रस्में !
मन है पराए बस में !

कौन बताए उलफ़त क्या है ? दिल क्या, दिल की हकीकत^४ क्या है ?
मर मिटने में लज्जत^५ क्या है ?

बेदर्द इस को क्या पहचाने ? जिस पर बीती हो वह जाने !
देख ऐ ज्ञानी, दुनिया है फ़ानी^६ ! हाय मुहब्बत, हाय जवानी !
आग लगी है इस में ।
मन है पराए बस में !

दोस्तो उस का नाम न पूछो, कुछ भी नहीं है, काम न पूछो,
उस के सिवा पैग़ाम^७ न पूछो—

मेरा भी तुम नाम न लेना, मिल जाए तो यों कह देना—
इक दीवाना^८ चुप रहता है, कहता है तो यह कहता है,
‘मन है पराए बस में !
मन है पराए बस में !’

एक अभिलाषा

(‘पुरानी बसंत’ से)

रंग दे, रंग दे क़दीम^९ रंग !

रंग दे क़दीम रंग, बेदरेग^{१०}, बेदरंग^{११},

^१प्रेम । ^२शिक्षा, उपदेश । ^३मान-प्रतिष्ठा । ^४वास्तविकता । ^५आनंद ।

^६नश्वर । ^७संदेश । ^८पागल । ^९पुराना । ^{१०}निस्संकोच । ^{११}निश्चित ।

उर्दू काव्य की एक नई धारा

जिस की ज़ौ^१ से मात हो, रंगबाज़िएं फिरंग^२ ।
इश्क के लिवाम को, रंग शोखो-शग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
एक ही उमग दे, एक ही तरंग दे,
दीन धर्म मिट न जाय, पासे नामो-नग^३ दे !
दामने दराज़^४ दे, या क़वाए तंग^५ दे,
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
उम्र घट गई तो क्या, डोर कट गई तो क्या ?
यह हवाए तुंदो^६ तेज़, रुख पलट गई तो क्या ?
आ गई बसत रुत, और इक पतंग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !
मुलह हों कि जग हो, साथियों का संग हो ।
सब हमें पसद है, खून हो कि रंग हो ।
खून हो कि रंग हो, एक रंग रंग दे !
रंग दे, रंग दे क़दीम रंग !

प्रेम-प्रदर्शन

मेरे दिल का बाग़, प्यारी, मेरे दिल का बाग़ ।

^१चमक । ^२विदेश की रंगबाज़ी । ^३नाम और इज़त का विचार । ^४खुला दामन । ^५तंग चोला । ^६मंद ।

मैं हूं दिल के बाग़ का माली, लाया हूं फूलों की डाली ।
नाज़ुक नाज़ुक फूल हैं जैसे, उजले औ’ बेदाग़^१,
ऐसे ही बेदाग़ है प्यारी, मेरे दिल का बाग़ ।
प्यारी, मेरे दिल का बाग़ !

उलफ़त^२ का इहमाम^३, प्यारी, उलफ़त का इहमाम—
उलफ़त है फूलों का गहना, खुशबूओं में रहना-महना !
मद्धम, हलकी, भीनी-भीनी, इन फूलों की बाम !
मीठा-मीठा दर्द हो जैसे, उलफ़त का इहमाम ।
प्यारी, उलफ़त का इहमाम !

उलफ़त का इज़हार^४, प्यारी, उलफ़त का इज़हार—
मेरी ठंडी-ठंडी आहें, तेरी यह हैगन निगाहें,
इन फूलों की हर डाली है, इक गुलशन बेग़ार^५ !
इन फूलों की रगत जैसे, उलफ़त का इज़हार !
प्यारी, उलफ़त का इज़हार !

अंधी जवानो

घटाएं छाई हैं घनघोर ; घटाएं छाई हैं घनघोर !
घटाएं काली-काली, तूब बरमने वाली,
मतवाली, पुरशोर ! घटाएं छाई हैं घनघोर ।
गुलशन की गुलपोश अदाएं, आमों की तामोश फ़िज़ाएं,
कोयल की मदहोश सदाएं, बन में बोल रहे हैं मोर !
घटाएं छाई हैं घनघोर !

जवानी ले आई बरसात ; जवानी ले आई बरसात !

^१ बिना दाग़ के (उज्ज्वल) । ^२ प्रेम । ^३ अनुभूति । ^४ प्रदर्शन । ^५ अकंटक ।

जवानी, हाय, जवानी ! सरशोरी^१ नादानी^२,
 मस्तानी, बदज़ात ! जवानी ले आई बरसात ।
 बैठा हूं अब मर्ग^३ किनारे, कगता हूं हूरो के नज़ारे,
 आह, निगाहें, आह, इशारे ! झाई निगह^४ पर काली रात ।
 जवानी ले आई बरसात !

मुहब्बत आहों का तूफ़ान ; मुहब्बत आहों का तूफ़ान !
 मुहब्बत प्यारी-प्यारी, मीठी सी बीमारी,
 बेचारी, अनजान ! मुहब्बत आहों का तूफ़ान,
 इक कश्ती मल्लाह से ख़ाली, मैं ने उठा तूफ़ान में डाली,
 इस कश्ती का अल्लाह वाली, पार लगाएगा रहमान !
 मुहब्बत आहों का तूफ़ान !

^१ उद्दता । ^२ मूर्खता । ^३ मृत्यु । ^४ दृष्टि ।

‘सागर’ निज़ामी

यू० पी० के इस जादूगर का नाम किस ने नहीं सुना ? अपने कल-कंठ से निकले हुए मादक संगीत का आवरण अपने सरल गीतों और सुंदर नज़्मों को पहना कर श्रोताओं को उस ने बीसियों बार मुग्ध किया है । मुशायरों में उस के तराने गूँजते हैं, रेडियो पर उस के नग़मों सुनाई देते हैं । ‘सागर’ की भाषा सीधी-सादी हिंदुस्तानी है, और भावों में हिंदी की पुट है । अलंकार उस की उँगलियों पर खेलते हैं और जब वह अपनी जादू-भरी आवाज़ में गाता है तो फ़िज़ा का कण-कण सूम कर रह जाता है ।

तुम मुझ से क्यों रूठे ?

मेरे मन में प्रेम जो फूटा, तुम मुझ से क्यों रूठे ?
चंद्रमा^१ आकाश से फूटा, धरती से गुल-बूटे,
ताक-भाँक की धुन में सूरज चमका, तारे टूटे,
रात मिलन के कारन दिन से साँझ की नगरी छूटे,
तुम मुझ से क्यों रूठे ?

प्रीत की छाती से नदी फूटी, शोर मचाती,
मौजों का सारग बजाती, मीठे नग़मों गाती,
मीठे-मीठे नग़मों गाती, मोती खूब लुटाती,
जिम ने देखे, उम ने पाए, जिम ने पाए, लूटे ।
तुम मुझ से क्यों रूठे ?

सीपी की गोदी में मोती, घुट-घुट कर रह जाए,

चमक-दमक में से उस की सीपी काँपे औ' थरीए ,
 बरखा की इक बूद का बोसा^१ मोती को गरमाए ,
 मोती सीपी के पट खाले औ' घबरा कर फूटे ।
 तुम मुझ से क्यों रूठे ?

टहनी में कुछ कलियां फूटीं, कलियों में सौ रंग ,
 रंगों से इक खुशबू बरसा औ' खुशबू से उमंग ,
 कंवल-कंवल भँवरों ने छेड़ा ऋतू-राज का चग^२ ,
 शबनम के सौ प्याले इक चुम्मे के दहन^३ में टूटे ।
 तुम मुझ से क्यों रूठे ?

पुजारन

ऐ मंदिर का राज^४ पुजारन, ऐ फ़ितरत^५ का साज़^६ पुजारन !
 प्रेम-नगर की रहने वाली, हर की बतियां कहने वाली ,
 साँधी-साधी भोली-भाजी, बान निराला गात निराली ,
 गर्दन में तुलसी की माला, दिल में इक खामोश शिवाला ,
 ओठों पर पैमाने^७ रक्कमा^८, आँखों में मैखाने रक्कमां ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनप पुजारन !

भीनी-भीनी बू^९ सारी में, सारी मद में तू सारी में ,
 आँखों में जमुना की मौजे, बालों में गंगा की लहरें ,
 नूर तेरे रुखमारे हसीं^{१०} पर, रंगों टीका पाक जबीं^{११} पर ,

^१चुबन । ^२बाजा विशेष । ^३मुग । ^४रहम्य । ^५प्रकृति । ^६बाजा ।

^७मदिरा का प्याला । ^८नृत्य करना हुआ । ^९सुगंधि । ^{१०}सुंदर कपोल । ^{११}

पवित्र मस्तक ।

जैसे फलक^१ पर सुब्ह का तारा, रौशन रौशन प्यारा प्यारा ,
शर्मीली मासूम^२ निगाहें, गोरी-गोरी नाजुक बाहें ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

फूलों की इक हाथ में थाली, मोहन^३, मदमाती, मतवाली ,
नाची नजरें निरखी चितवन, मस्त पुजारन हरि की जोगन ,
चाल है मस्तानी मतवाला, और कमर फूलों की डाली ,
दिल तेरा नेकी की मंजिल, लाखों बुतयानों का हामिल^४,
हस्ती तुझ में भूम रही है, मस्ती आँखें चूम रही है ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

नूर के तड़के^५ घाट पै जाकर, गंगा का सम्मान बढ़ा कर ,
फिर लेकर खुशबूए मारी, चंदन, जल, औ^६ दूब सुपारी ,
सुब्ह के जलवों को तड़पा कर, नज़ारों^७ से आँख बचा कर ,
ऐ मंदिर में आनेवाली, प्रेम के फूल चढ़ाने वाली ,
हस्ती भी है गुल्शन तुझ में, सूरज भी है रौशन तुझ से ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

लौट चली तू करके पूजा, देख लिया ईश्वर का जलवा ,
ठहर-ठहर ऐ प्रेम-पुजारन, मैं भा कर लूं तेरे दर्शन !
देख इधर धूपट को हटा कर, अपने पुजारी पर किरपा^८ कर ।
सब की पूजा जुहदो-ताऊत^९, मेरी पूजा तेरा उलफत !
हरि का घर है तेरा पैकर^{१०}, तू खुद है इक मुदर मंदिर ।

^१आकाश । ^२अकलुष । ^३मुंदर । ^४सार । ^५प्रातःकाल । ^६दृश्यों । ^७कृपा ।

^८नेकी । तपस्या । ^९मुख ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

आँख में मेरी है इक आँसू, जैसे हो नदी पै जुगनू,
माला में इस को शामिल कर, यह मोती है तेरे क्राबिल^१ ।
ध्यान से अपने प्राण बचा कर, पाँव में तेरे आँख मिला कर,
प्रेम का अपने नीर बहा दू, सब कुछ तुझ पै भेट चढ़ा दूँ ।
पापी दिल मेरा सुख पाए, मेरी पूजा क्यों रह जाए ?

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

आ तेरी सूरत को पूजूं, मैं जीवित मूरत को पूजूं !
तू देवी मैं तेरा पुजारी, नाम तेरा हर साँस से जारी ।
लाग को आग ने तन को भूना, फिर मंदिर है दिल का सूना ।
मन में तेरा रूप बसा लूँ, तुझ का मन का चैन बना लूँ !
छिप जा मेरे दिल के अंदर, हो जाए आबाद यह मंदिर !

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

तुझ को दिल के गीत सुनाऊ, फिर चरनों में सीस नवाऊं !
तीन लोक, आकाश भुका दूँ, धरती का शक्ती लचका दूँ !
तारे, चाँद औ' भूरे बादल, बाग, नदी, दरिया औ' जंगल,
पर्वत, रूख औ' मसजिद मंदिर, साक्री पैमाना औ' सागर,
दुनिया हो तेरे क़दमों पर, क़दमों के नीचे मेरा सर !

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

एक पुजारन एक पुजारी, प्रीत की रीते कर दें जारी,

देश में प्रीत और प्यार को भर दें, प्रेम से कुल ससार को भर दें ,
लोभ मोह के बुत को तोड़े , पाप, क्रोध का नाम न छोड़े ,
प्रेम का रस दौड़े रग-रग में , हो इक प्रेम की पूजा जग में ,
दोनों इस धुन में मर जाए , तीरथ एक अजीब^१ बनाएं ।

ऐ देवी का रूप पुजारन !

तेरा रूप अनूप पुजारन !

यह फूल भी उठा ले

जल्बं तेरे अनाखे, गुमज़ं^२ तेरे निराले ,
चितवन है सार्धी-सादी, तंबर है भोले-भाले ,
कुहनी तक आस्तीन, आंचल कमर में डाले ,
रुखसार^३ गोरे-गोरे, यह बाल काले-काले ,

ओ फूल चुनने वाली !

इक हाथ टोकरी पर, इक हाथ है कमर पर ,
ढलका हुआ दुपट्टा, ताजे-गरूर^४ सर पर ,
है इक नज़र कदम पर, औ' इक कदम नज़र पर ,
क्यों यह खराम^५ तेरा, पामाल कर^६ न डाले ?

ओ फूल चुनने वाली !

तू फूल चुन रही है, औ' फूल भड़ रहे हैं ,
बल तेरी ल्योरियों में, रह-रह के पड़ रहे हैं ,
क्या तेरी टोकरी में तारे से जड़ रहे हैं ?
हसरत^८ से बाग़ वाले फिरते हैं दिल सम्हाले !

ओ फूल चुनने वाली !

फूलों में मैं ने अपना दिल भी मिला दिया है ,

^१विचित्र । ^२अदाएं । ^३कपोल । ^४गर्व का मुकुट । ^५चाल । ^६पददलित ।

फूलों में मिल मिला कर वह फूल बन गया है ।
 आएगा काम तेरे, यह तेरे काम का है ।
 ओ फूल चुनने वाली, यह फूल भी उठा ले !
 ओ फूल चुनने वाली !

भिखारन

देख के दिल भर आया मेरा, आ मैं भर दूँ कामा^१ तेरा ।
 लूट ले जितना लूटा जाए, माँग ले जो कुछ माँगा जाए ,
 दिल ले ले, ईमान भी ले ले, ज़ाँ चाहे तो जान भी ले ले ।
 वह भी तेरा दिल भी तेरा, सामाने-महफ़िल^२ भी तेरा ,
 सागर तेरा साँकी तेरा, तू मेरी, और बाँकी तेरा ,
 आह भिखारन, वाह भिखारन !
 आह न भर लिह्लाह भिखारन !
 आ मैं तेरे बाल सँवारूँ, नज़ारों से गाल सँवारूँ ,
 रूह बना कर तन में रक्खूँ, आँखों की चितवन में रक्खूँ ,
 बन जा, बन जा, दिल की रानी, इस दुनिया में कर सुल्तानी !
 मैं तेरा जोगी बन जाऊँ, दर परमाथल बन कर आऊँ ,
 तुझ से माँगूँ भाग्य सकुं^३ की, हो जाए तकर्माल जनुं^४ की !
 आह भिखारन, वाह भिखारन !
 आह न कर लिह्लाह भिखारन !

भिखारी की सदा

वात न पृछे बाबा कोई !
 वात न पृछे कोई बाबा दर दर दी आवाज़ ,

^१प्याला । ^२सभा का सामान । ^३शक्ति । ^४उन्माद की पूर्णता ।

क्या बजता है अब भी पापी यह जीवन का माज ?
 तूफ़ां मर पर गत अँधेरी हरदम इक मँझधार ?
 मेरा प्याला नैया है और किस्मत खेवनहार !
 बात न पूछे बाबा कोई !

यह गढ़ तारों के हममाये^१, यह ऊँचे अस्थान ,
 यां माँगे पर भी मिलता है, कब भिक्षु का दान ?
 जिस को देखो दाता है औ' सब दाता है चोर ,
 इस नगरी में सब कोई बाबा पक्का लाल कठोर ,
 बात न पूछे बाबा कोई !

चाँद सितारे लानत भेजें, सूरज दे धत्कार ,
 बैठे-बैठे ध्यान में मुक्त को धक्के दे संसार ।
 माया बिन जीवन है जग में जीवन का अपमान ।
 नाया ही जंजाल है बाबा, माया ही निर्बान !
 बात न पूछे बाबा कोई !

‘अखतर’ शेरानी

‘अखतर’ पंजाब का वह जवान शायर है जिस ने उर्दू में ‘रूमानी शायरी’ (‘रोमांटिक पोण्ट्री’) का सूत्रपात किया है। उस की कई कविताओं में आप अपने आप को चाँद सितारों की घाटियों में पाएँगे — जहाँ फूलों की सुगंधि से बयार उन्मत्त है, जहाँ संसार का कोलाहल चुप हो गया है, और जहाँ स्निग्ध ज्यास्ना की चादर ओढ़े ‘रीहाना’ ‘मरजाना’ या ‘सलमा’ कवि की थकी हुई रूह को शांति प्रदान करने आती है। ‘अखतर’ ने ठीक अर्थों में चाहे गीत न लिखे हों पर उस की अधिकांश नज़्में गीतों की-सी मिठास रखती हैं, और पंजाब के नौजवान उन्हें गा-गा कर झूमा करते हैं।

बाँसुरी की धुन

बरसात का यह मौसम, यह नीलगूँ^१ घटाएं,
 यह बागोवन का आलम, यह गुलफ़िशों फ़िज़ाएं^२,
 यह रस भरी हवाएं!
 यह रंगो बू के तूफ़ान, यह विरज के नज़ारे,
 यह जन्नती ख़याला^३, ज़मना के यह किनारे,
 यह सीन प्यारे-प्यारे!
 यह कांयलों की कूक, यह मोर की सदाएं^४,
 यह नाज़नीने आहूँ^५, औँ यह ग़रीब गाएं,
 यह नरशागू फ़िज़ाएं!
 सब्ज़ा^६ निखर रहा है, वादी^७ महक रही है,

^१नीली। ^२फूल बरसाने वाला वातावरण। ^३स्वर्गीय क्यारियाँ। ^४स्वर।

^५भृगुझौनी सी तरुणी। ^६हरियाली। ^७घाटी।

नश्या बिखर रहा है , बुलबुल चहक रही है ,
फ़ितरत^१ बढ़क रही है !

ठहरो मगर यह आवाज़ , देखो कहां से आई ?
यह निकहते-फ़सूँसाज़^२, किस गुलिस्ता से आई ?
किस आसमा से आई ?

इस बाँसुरी की लय में , अल्लाह क्या असर^३ है ?
इस उड़ने वाली मय में , क्या सहर कारगर है^४ ?
जो है वह बेग़बर है !

यह कौन इस समय में , बर्सा बजा रहा है ?
इस दर्जा मस्त लय में , उलफ़त लुटा रहा है ?
नग़में बहा रहा है ।

देखो तो पास चल कर , शायद है कोई जोगी ,
या गाँव से निकल कर , आया है कोई भोगी ।
संसार का बरोगी^५ !

शायद कोई रिषा है , सन्यास की लगन में !
शायद कोई मुनी है , मसरूफ़^६ कीर्तन में !
तौहीद^७ के भजन में !

हां आओ पास चल कर , पूछें कि नाम क्या है ।
तलवों से आँखें मल कर , पूछें की काम क्या है ।
इस का पयाम^८ क्या है ?

ठहरो ज़रा, निगाहें पहचानता हैं इस को ,
फ़ितरत की जलवागाहें^९, सब जानती हैं इस को ,

^१ प्रकृति । ^२ मंत्रमुग्ध कर देनेवाली सुगंधि । ^३ प्रभाव । ^४ कौन सा भारी
हू किया है । ^५ वैरागी । ^६ निमग्न । ^७ परमात्मा के भजन में । ^८ संदेश । ^९ जहां
कृति अपने पूर्ण प्रकाश में रहती है ।

औ' मानती हैं इस को !

हां, हां यह वंसीवाला , चूकी नजर हमारी ,
यह विरज का ग्वाला , है नंद का मुरारी ।

औ' आरजू^१ हमारी !

इक जांशो सरमर्दा^२ में , बर्मी बजा रहा है ,
दुनियाए बेखुदी^३ में , फितने उठा रहा^४ है ,
महशर^५ जगा रहा है !

बर्मी में से परेशा, नगमें मचल रहे हैं ।
या मैकड़ों गुलिस्ता, करवट बदल रहे हैं ।

औ' फूल उगल रहे हैं !

यह नगमें सुन के फितरन , खोई सा जा रही है ,
मौसीक्रिये मुहब्बत^६ के ज़ख्म खा रही है ,
औ' मुमकरा रही है ।

एक देहाती गीत सुन कर

सुनो यह कैसी आवाज़ आ रही है ? कोई गाँवों की लड़की गा रहा है ।
महर^६ के धुंधले-धुंधले मंज़रो^७ को , शरावे नगमा^८ से नहला रही है ।
उठी है शायद आटा पीसने को , कि चक्का की सदा^९ भी आ रही है ।
गमों से चूर अपने नन्हे दिल को , तराना^{१०} छेड़ कर बहला रही है ।
फिज़ा^{११} पर, वस्त्रियों पर, जंगलों पर, धुआँधार एक बदली छा रही है ।
छमाछम मेह की बूँदें पड़ रही हैं , कि सावन की परी कुछ गा रही है ।
यह बादल हैं कि है सावन के सपने , हवा जिन को उड़ा कर ला रही है ।
यह बिजली है कि इक मरमर की नागिन, धुएँ के भाल पर लहरा रही है ।

^१आकाँक्षा । ^२मस्ती के जोश में । ^३निमग्नता के संसार में । ^४प्रलय । ^५प्रेम-
संगीत । ^६प्रातःकाल । ^७दृश्यो । ^८संगीत की सुरा । ^९आवाज़ । ^{१०}संगीत ।

^{११}प्रकृति ।

यह बूँदें हैं कि बिजली आममां मे, सितारे तोड़ कर बरसा रही है ।
 यह बादल का गरज, बिजली का कड़का, खुदाई सारी लरजी^१ जा रही है ।
 मगर वह गमजदा^२ मासूम^३ लड़की, बराबर गीत गाए जा रही है ।
 कुछ ऐसा नातवा^४ नगमा है गोया, कोई नन्हीं कली मुरझा रही हैं ।
 घरों पर, खेतियों पर, क्यारियों पर, उदामी ही उदामी छा रही है ।
 यह घर सुसगल होगा शायद इस का, जभी मावाप की याद आ रही है ।
 जभी मसरूफ^५ है आदोफुगा^६ में, जभी गमगीन लय में गा रही है ।

“यह बरखा रुत भा बीती जा रही है !

हवा जो गाँव को महका रही है, मेरे मैंके से शायद आ रही है !
 घटा की ऊदी-ऊदी चुनरियों मे, मेरी मखियों की बू-बाम आ रही है ।
 मुझे लेने न आए अच्छे बावल, तुम्हारी याद आफत ढा रही है ।
 मेरी अम्मा को हो इस की खबर क्या, कि चंपा इस जगह घबरा रही है ।
 न ली भैया ने भी सुध-बुध हमारा, जहा से चाह उठती जा रही है ।
 भला क्यों कर थमें आँसू कि जी पर, उदामी की बदरिया छा रही है ।
 गया पीगें बढ़ाने का जमाना, वह अमरियों पै कोयिल गा रही है ।”
 योंही वह अपनी गमगीन रागनी मे, दगे-दीवार को तड़पा रही है ।
 सियाही उड़ती जाती है उफक^७ मे, अरूमे-मुब्ह^८ बढ़ती आ रही है ।
 शिवाले में गजर^९ भी जाग उठा, ठनाठन-ठन की आवाज़ आ रही है ।
 कोई चिड़िया निकल कर घोंसले मे, घने जंगल में मंगल गा रही है ।
 कोई बकरी कहीं करती है में-में, कोई बल्लिया कहीं चिल्ला रहा है ।
 मगर इन सब से वे पगवा वह लड़की, बराबर गीत गाए जा रही है ।
 इसे सुन-सुन के कब तक सर धुनेगे ? वम ‘अखतर’ सोने दो, नींद आ रही है ।

^१कौपी । दुखी । ^३सगल हृदय । ^४दुर्बल । ^५मलिन । ^६शोकदगार ।
^७प्राची । ^८सुबह की दुलहन । ^९धंश ।

परदेसी की प्रीत

परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !
हारे हुए की जीत है झूठी, दुनिया की यह रीत है झूठी ,
परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !

परदेसी से दिल का लगाना, बहते पानी में है नहाना !
कोई नहीं नदिया का ठिकाना, रमतें जोगी किस के मीत ?
परदेसी की प्रीत है झूठी, झूठी परदेसी की प्रीत !

उड़ती चिड़िया गाती जाए , मीठा गीत मिठास बहाए ,
यूं परदेसी मन को लुभाए , उड़ गई चिड़िया उड़ गया गीत !
परदेसी की प्रीत है झूठी , झूठी परदेसी की प्रीत !

मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

(‘कलियां’ से)

न फूलों की तमन्ना^१ है, न गुलदस्तों की हसरत है ,
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

अभी उलटा नहीं बादे-बहारी^२ ने नक्राब^३ इन का,
अभी महफूज^४ है इक खिलवते रंगों^५ में ख्वाब इन का,
अभी सरमस्तियों में रात दिन सोने की आदत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों से मुहब्बत है !

अभी टूटा नहीं सूरज की किरनो से हिजाब^६ इन का,
अभी रुसवा^७ नहीं है गुलफरोशो^८ में शबाब^९ इन का,

^१आर्काद्या , ^२वसंत का समीरण । ^३धूँधट । ^४सुरक्षित । ^५रंगीन पकौड़े ।

^६लज्जा । ^७बदनाम । ^८फूल बेचनेवालों । ^९जवानी ।

अभी छाई हुई दोशीजगी^१ की सादा रंगत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों में मुहब्बत है !

बहागिस्तान के मंदिर की इन को देविया कहिए ,
जो गुल को कृष्ण कहिए, इन को उस को गोपिया कहिए,
कोई जाने मलाहत^२ है कोई काने सवाहत^३ है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों में मुहब्बत है !

कोई छूले अगर इन को, तो यह कुम्हला के रह जाएं ,
हया^४ में इस कदर डूबे कि बस मुग्धा के रह जाएं ,
अभी अल्हड़पने के दिन हैं, शरमाने की आदत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों में मुहब्बत है !

मेरा ब्रम हो तो ‘अखतर’ में इन्हीं का रंग हो जाऊँ !
हमेशा के लिए इन चंपई परदों में सो जाऊँ !
मुझे इन की रसीली गोद में मरने की हसरत है ।
मुझे तो कुछ इन्हीं बीमार कलियों में मुहब्बत है !

ऐ इश्क हमें बर्बाद न कर

ऐ इश्क न छेड़ आ आ के हमें, हम भूले हुआँ को याद न कर ,
पहले ही बहुत नाशाद^५ हैं हम, तू और हमें नाशाद न कर ,
किस्मत का सितम^६ ही कम नहीं कुछ, यह ताजा सितम ईजाद^७ न कर,
यों जुल्म न कर बेदाद^८ न कर , ऐ इश्क हमें बरबाद न कर !

^१कौमायं । ^२हलका रंग । ^३लाल और श्वेत रंग । ^४शर्म । ^५दुखी ।

^६अत्याचार । ^७आविष्कार । ^८जुल्म ।

जिस दिन से बँधा है ध्यान तेरा, धबराए हुए से रहते हैं ,
हर वक़्त तसव्वुर^१ कर-कर के, शरमाए हुए से रहते हैं ,
कुम्हलाए हुए फूलों की तरह, कुम्हलाए हुए से रहते हैं ,
पामाल^२ न कर, बर्बाद न कर, ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर !

जिस दिन से मिले हैं, दोनों का, भव चैन गया आगम गया ,
चेहरों से बहारे-मुब्द गइं, आँखों से फ़रोग़ शाम^३ गया ,
हाथों में खुशी का जाम छुटा, आँटों से हँसी का नाम गया ,
ग़मगीन बना, नाशाद न कर, ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर !

रातों को उठ-उठ गेते हैं, रोगों के दुआए करते हैं ,
आँखों में तसव्वुर, दिल में ख़लश, सर धुनते हैं, आँहें भरते हैं ,
ऐ इश्क़ यह कैसा रोग लगा, जीते हैं, न ज़ालिम मरते हैं ,
यह जुल्म तू ऐ जल्लाद न कर , ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर !

दो दिन में ही इहदे तिफ़ली^४ के, मायूम^५ ज़माने भूल गए ,
आँखों से व' खुशियाँ मिट-सी गईं, लव^६ को वे तराने भूल गए ,
उन पाक^७ बहिश्ती ख़्वाबों^८ के, दिलचस्प फ़िसाने भूल गए ,
इन ख़्वाबों से यूँ आज़ाद न कर , ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर !

उम जाने हया^९ का बस नहीं कुछ, बेबस है पराए बस में है ,
वेदद दिलों को क्या हो ख़बर, जो प्यार यहा आपस में है ,
है बेबसी ज़हर और प्यार है रस, यह ज़हर छिपा इस रस में है ,
कहती है हया फ़रयाद न कर , ऐ इश्क़ हमें बर्बाद न कर !

^१कल्पना ^२परदलित । ^३संध्या की रौनक । ^४वचन का ज़माना । ^५सरल ।

^६बोँठ । ^७पवित्र । ^८स्वर्गीय स्वप्न । ^९देश के मित्र ।

निर्वासित

(‘आ देस से आनेवाले बता’ से)

आ देस से आनेवाले बता , किम हाल में है याराने वतन ?
आवागए-गुरवत^१ को भी मुना , किम रग में है कनआने^२ वतन ?
वे बागों वतन , फिरदौसे वतन , वे सरवे^३ वतन रीहाने^४ वतन ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी वहा के बागों में , मस्ताना दवाएं आती हैं ?
क्या अब भी वहां के परवत पर , घनघोर घटाएं छाती हैं ?
क्या अब भी वहा की बरखाएं , वैसी ही दिलों को भाती हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी वतन में वैसी ही , सरमस्त नजारें होते हैं ?
क्या अब भी मुहानी रातों को , आकाश पै तारे होते हैं ?
जो खेच हम खेला करते थे , क्या अब भी वे सारे होते हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या शाम पड़े सड़कों पे वही , दिलचस्प अंधेरा होता है ?
आँ गलियों की धुंधली शमआँ पर , साया का बसेरा होता है ?
बागों की बनेगी शाखा में , जिस तरह सवेरा होता है !

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी वहा वैसी ही जवा , और मदभरी रातें होती हैं ?
क्या रात भर अब भी गीतों की , आँ प्यार की बातें होती हैं ?
वे हुस्न के जादू चलते हैं , वे इश्क की घाते होती हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी वहा के पनघट पर , पनहारिया पाना भरती है ?

अँगड़ाई का नक्शा बन-बन कर , सब माथेपै गागर धरती हैं ?
और अपने घरों को जाते हुए , हँसती हुई चुहलें करती हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

बरसात के मौसम अब भी वहां , वैसे ही मुहाने होते हैं ?
क्या अब भी वहां के बागों में , झूले और गाने होते हैं ?
और दूर कहीं कुछ देखते ही , नौ-उम्र दीवाने होते हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी पहाड़ी चोटियों पर , बरसात के बादल छाते हैं ?
क्या अब भी हवाएं साहिल^१ के , वे रमभरे भोके आते हैं ?
क्या रसिया^२ की ऊँची टेकरी पर , लोग अब भी रमिया^३ गाते हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी पहाड़ी घाटियों में , घनघोर घटाएं गूँजती हैं ?
साहिल के घनेरे पेड़ों में , वर्षा की हवाएं गूँजती हैं ?
भाँगुर के तराने जागते हैं , मोगो की मदाएं गूँजती हैं ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या शहर के गिर्द अब भी हैं रवां^४ , दरयाए हसीं^५ लहराए हुए ?
ज्यों गोद में अपनी मन के लिए , नागन के कोई थराए हुए ?
या नूर की हँसली हूर^६ की गरदन में हो आयां^७ बल खाए हुए ?

आ देस से आनेवाले बता !

क्या शाम को अब भी जाते हैं , अहवाब^८ किनारे दरिया पर ?
वे पेड़ घनेरे होते हैं , शादाब^९ किनारें दरिया पर ?
और प्यार से आकर भाँकना है , महताब^{१०} किनारे दरिया पर ?

आ देस से आनेवाले बता !

^१समुद्रतट की वायु । ^२स्थान विशेष । ^३एक गीत । ^४बहता हुआ ।

^५सुंदर नदी । ^६सुंदरी । ^७स्पष्ट । ^८मित्र । ^९लहरानेवाले । ^{१०}चाँद ।

क्या आम के ऊँचे पेड़ों पर, अब भी वह पपीहे बोलते हैं ?
शाखों के हरेरी ^१ परदों में, नगमों के खजाने खोलते हैं ?
सावन के रसीले गीतों से, तालाब में अमरस ^२ धोलते हैं ?

ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी गजरदम ^३ चरवाहे, रेवड़ को चराने जाते हैं ?
और शाम के धुँधले सायों के हमराह ^४ घरों को आते हैं ?
और अपनी रसीली बाँसरियों में, इश्क के नगमों गाते हैं ?

ओ देस से आनेवाले बता !

क्या ‘भाँची’ पै अब भी सावन में, वर्षा की बहारें लाती हैं ?
मासूम घरों से भोर भए, चक्री की मदाएं आता हैं ?
और याद में अपने मैके की, बिछुड़ी हुई सखियां गाती हैं ?

ओ देस से आनेवाले बता !

शादाबो शगुफ़ता ^५ फूलों से, मामूर ^६ हैं गुलज़ार ^७ अब कि नहीं ?
बाज़ार में मालन लाती है, फूलों के गुँधे हार अब कि नहीं ?
और शौक से टूटे पड़ते हैं, नौखंज ^८ खरीदार अब कि नहीं ?

ओ देस से आनेवाले बता !

क्या हम को वतन के बाग़ और मस्ताना फ़िज़ाएं भूल गईं ?
वर्षा की बहारें भूल गईं, सावन की घटाएं भूल गईं ?
दरया के किनारे भूल गए, जंगल की हवाएं भूल गईं ?

ओ देस से आनेवाले बता !

क्या अब भी किसी के सीने में, बाकी है हमारी चाह बता ?
क्या याद हमें भी करता है, यारों में कोई आह बता ?
ओ देस से आनेवाले बता, लिल्लाह बता लिल्लाह बता !

ओ देस से आनेवाले बता !

^१हरे । ^२अमृत । ^३सवरे । ^४साथ । ^५ताज़ा और खिले हुए । ^६भरे हुए ।

^७बाग । ^८युवक ।

अमरचंद्र 'कैस'

कैस साहब ने वास्तव में गीत लिखे हैं। इस रंग में उन की कविताएं किसी न किसी राग अथवा रागिनी के आधार पर लिखी गई हैं और जोग, बिहाग, दरबारी कानड़ा, केदारा आदि किसी न किसी में गाई जा सकती हैं। संगीतमय होने के अतिरिक्त उन की कविता 'भाषा की कविता' है। शब्दों के चुनाव में विशेष चातुर्य से काम लिया गया है और प्रायः यमक आदि अलंकारों ने कविता में चमत्कार पैदा कर दिया है।

गंगा से

तू नदियों की रानी, गंगे ! तू नदियों की रानी ।

तेरे पानी के आगे है, अमृत पानी-पानी^१, गंगे !

तू नदियों की रानी ।

प्यारे-प्यारे गाने तेरे, मीठी-मीठी बानी, गंगे !

तू नदियों की रानी ।

भूम-भूम कर बहती है तू, तेरी चाल सुहानी, गंगे !

तू नदियों की रानी ।

^१ पानी-पानी होना के अर्थ है—जजा जाना। साथे-साथ अर्थ में कवि कहत है कि 'ऐ गंगा तेरा पानी इतना हितकर है कि उस के आगे अमृत भी शर्मा कर रह जाता है।' पानी का अर्थ आव (यमक) भी होता है। पहले पद में पानी का अर्थ चमक लेने से भाव और भी सुंदर हो जाता है और फिर इस पानी के साथ पानी-पानी आ जाने से कितनी खुशी पैदा हो गई है—यही भाषा की कविता। कैस की कविता में भाषा की सुंदरता पग-पग पर मिलेगी, शब्दों का चुनाव ऐसा होगा कि अनायास दाद देने को जा चाहेगा।

मेरा जीवन

तू जीवन है मेरा, प्रियतम ! तू जीवन है मेरा ।

तुझ से चारों कूँट उजाला, तुझ बिन घोर अँधेरा ।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा ।

तुझ बिन दिन है, रैन भयानक, तुझ में साँझ, सबेरा ।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा ।

ज़हर हलाहल, तेरी दूरी, अमृत दर्शन तेरा ।
प्रियतम ! तू जीवन है मेरा ।

क्या उस दम साजन आएगा ?

जब कली-कली गिर जाएगी, औ’ फूल-फूल मुरझाएगा,
जब रूख-रूख सूना होगा, बूटा-बूटा कुम्हलाएगा,
जब पत्ता-पत्ता सूखेगा, भँवरा-भँवरा उड़ जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

जब ढंडी-ढंडी वायू, आहें भर-भर कर मो जाएँगी,
जब नीली-नीली, काली-काली बदली गुम हो जाएगी,
जब रूखा-रूखा फीका-फीका समां जगत पर छाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

जब दुखिया पापी नैन मेरे, थक-थक जाएँगे रो-रो कर,
जब इक-इक दुःख, इक-इक सकट छा जाएगा मेरे मन पर,
जब तड़प-तड़प औ’ कलप-कलप कर दम बाहर हो जाएगा,
क्या उस दम साजन आएगा ?

उन बिन

किस बिध बीतेगी, उन बिन काली रात ?

बिजली पल-पल छिन-छिन तड़पे, बादल कड़-कड़, कड़-कड़ कड़के ,
पानी रिम-रिम रिम-रिम बरसे, आई यौवन पर बरसात !

मैं भरती हूँ ठंडी आहें, मैं तकती हूँ उन की गहें ।
बह, आ' मुझ पापिन को चाहें ? यह तो है अनहोनी बात !

क्या जाने क्या गुजरे मुझ पर ? जी बबराता है रह-रह कर !
ऐसा सूना है उन बिन घर, जैसे कोई रुख बिन पात !

पपीहा

बरछी तेरी पुकार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

तेरी लय में तीर भरे हैं, तेरे गाने नशतर-मे हैं ,
तेरी कूक, कटार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

बादल आए पी नहीं आए, बिजली-सी मन पर लहराए ,
पी-पी बार-बार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

रात अँधेरी पानी बरसे, धक-धक-धक धड़के जो डर से ,
सूना है घर-बार, पपीहे, बरछी तेरी पुकार !

आ मिल गाएं गीत !

नीली-नीली बदली छाई, ठंडी-ठंडी वायू आई॥

हलकी-हलकी बूँदें बरसें, नैन तेरे दर्शन को तरसें॥

आ' मिल गाएं गीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

मंद-मंद कलियां मुसकाएं, भूम-भूम बेलें लहराएं !
तुझ बिन रह-रह जी घबराए, तू आए तो मन कल पाए ।
यह अग्नी हो शीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

आ मिल-मिल कर झूला झूलें, जग के सारे संकट भूलें,
सेर करें हम प्रेम-नगर की, आ जा, बरखा का यह रत भी,
जाय न यो ही बीत ! साजन, प्रीत हमारी रीत !

दर्शन-प्यासी

प्रियतम मुख दिखला !
मुझ से तू क्यों रूठ गया है, मेरा दोष बता ?
प्रियतम मुख दिखला !
मेरी जाँ^१ नयनों में आई, और न अब तड़पा ।
प्रियतम मुख दिखला ।
मैं हूँ तेरी, तेरी हूँ मैं, तू मेरा हो जा ।
प्रियतम मुख दिखला !

याद

सुंदर-सुंदर, कोमल-कोमल, प्यारे-प्यारे फूल खिले ।
पीले-पीले, लाल-लाल और न्यारे-न्यारे फूल खिले ।
नन्ही-नन्ही कलियां रह-रह, मंद-मंद मुसकाती हैं ।
ठंडी-ठंडी हलकी-हलकी वायू से लहराती हैं ।

मन को हर-हर लेनेवाला, सब्ज-सब्ज, सब्जा लहका ।
क्यारी-क्यारी बाग-बाग, है सब वायू-मंडल महका ।

नर्म-नर्म, शाश्वें मस्ती में भूम-भूम लहराती है ।
हरी-हरी वेलें पेड़ों से लिपटी-लिपटी जाती हैं ।

उजले-उजले पंछी, खुश-खुश गाते-गाते उड़ते हैं ।
उड़ते-उड़ते गाते हैं औ' गाते-गाते मुड़ते हैं ।
कलिया खुश हों-होकर, हँस-हँस कर कुंजों में गाती हैं ।
भूला भूल-भूल कर माँठी-मीठी तान उड़ाती हैं ।

पर इक बेमुख पर जां दे-दे कर मैं जीवन खाती हूँ !
उम की याद में रह-रह कर मैं आँसू हार पिरांती हूँ !

अज्ञमत अल्लाह खाँ

श्री अख़तर हुसैन रायपुरी लिखते हैं—“स्वर्गीय अज्ञमत अल्लाह ने जब कविता शुरू की उस समय वे जवानी की चौखट पर खड़े थे, दूसरे नौजवानों की तरह उन के लिए भी दुनिया बाग़ों और बहारों के सिवा कुछ न थी। उन के दिल में भी रूप की प्यास थी। उन की कविता भी जवानी के रस में डूबी हुई है। लेकिन उस में एक दर्द है मीठा-मीठा, उस में एक कसक है आनंद देने वाली ! उसे पढ़ने के बाद ऐसा मालूम होता है जैसे कोई नशा उतर गया है; जैसे किसी खूबसूरत चीज़ के पास से हम उठ कर चले आए हैं।”

उन के छंदों और उन की कविता में करुण-रस के संबंध में मैं पहले लिख चुका हूँ। यहां केवल इतना लिखना चाहता हूँ कि अज्ञमत अल्लाह दिल्ली के निवासी थे, वहीं से डिग्री ली और हैदराबाद के शिक्षा-विभाग में इन्सपेक्टर नियुक्त हुए। आप के जीवन का उद्देश्य उर्दू-हिंदी का एक ही लड़ी में पिराना था। किंतु मृत्यु ने इस हानहार युवक को हम से छीन लिया। अभी आपने २६ बहारें भी न देखी थीं कि १९२८ में आप का देहांत हो गया।

तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये पड़ोसी हम, पै यह हाल था कि घरों में खिड़की बनाई थी।

ये अज़ीज़^१ हम, यह ख़याल था कोई शौ^२ न हम में पराई थी।

तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

^१प्रिय। ^२वस्तु।

वह जो खेलते थे हँसी-हँसी, हमें खेल की सभी बात थी,
न बुरी-बुरी, न भली-भली, यही धुन थी दिन, यही रात थी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

वह लड़ाइयां भी कभी-कभी, कभी रूठना, कभी मन गए,
अभी कन्नियां तो मिलाप अभी, अभी चुटकियां, अभी कहकहे,
तुम्हे याद हो कि न याद हो ?

वह हमारी आँख-मचोलियां, वह छिपों को हूँद निकालना,
यूं ही नाचना, यूं ही तालियां, यूं ही हाथ पैर उछालना,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

वह तुम्हारी गुड़िया की शादिया, वह मेरा बरात का इंतज़ाम^१,
मेरा बाजा टीन का, मीटिया, बड़ा शोरो-गुल, बड़ी धूम-धाम,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

मेरा बन के क़ाज़ी वह बैठना, कि बयान इस का फ़ज़ूल है,
मेरा पूछना वह कड़क के—‘क्या मिया गुड्डे गुड़िया क़बूल है ?’
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

तुम्हें उन्म^२ था तो मुझी से था, था लड़कपना पै यह हाल था,
मेरी बात ने तुम्हें खुश किया, मेरा अपना दिल भी निहाल था,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

यो ही खेल-खेल के जब कभी, कोई दूल्हा बनता दुल्हन कोई,
मेरी तुम हमेशा बन्नी^३ बनी, बहुत इस पै उड़ती थी जो हँसी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

हमें क्या ख़बर थी बसंत की, गए दिन भी आँ’ वह पड़ोस भी,
था पढ़ाई से न निश्चित^४ जी, पड़ी यादे-तिफ़ली^५ पै ओस-सी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

मुझे दी पढ़ाई ने फिर निजात^१, लगी आने ब्याह की अकल भी,
मुझे याद आई पराई बात, वह तुम्हारी भोली-सी शक भी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

हुआ याद से मुझे जोश भी, पै यह याद ख़्वाब की नक़ल थी,
न था इन दिनों कोई होश भी, गए दिन दिनों की शक भी,
तुम्हें याद हो कि न याद हो ?

बरसात

(मुक्त छंद में)

आए बादल काले-काले,
भूमते हाथी मतवाले,
उड़ते, फिरते, तुलते, झुकते,
एक अँधेरी देकर छाए,
डेरे चार तरफ़ डाले।
पवन के घोड़े सहमे ठिठके,
जिस ने दिल पर बोझ-सा रक्खा,
गर्मी से दिल घबराया,
एक ख़मोशी, सन्नाटा-सा।
वह आकाश के बिगड़े तेवर,
त्योरी पर बल-सा आया,
बरसेगा औ' बरमाएगा।
बिजली चमकी अगारा-सी,
आग की नागन लहराई,
लहरिया काढ़ा, बेल बनाई,

भाप के दरिया में कुदस्त^१ ने ,
 नूर^२ की मछली तैराई ,
 इधर-उधर तड़पी तड़पाई ।
 बादल बिखरे, नीला अंबर ,
 डूबते सूरज ने भूँका ।
 किरण सुनहरी, तिरछी-तिरछी ,
 बिखर हवा में, खुलती-खेलती ,
 मेघ का सारा रंग लिया ,
 आकाश पै इक आग लगाई ।
 नीला अंबर, तनहा सूरज ,
 रंग में डूबे हुए बादल ,
 खुली फुनगो में हलकी धूप ।
 धोई नहाई भूमी सुंदर ,
 सर पै सुनहरा-सा आँचल ,
 कुदस्त का एक सुहाना रूप !

दिल न यहां लगाइए

दाम^३ में यां न आइए, दिल न यहां लगाइए ,
 जान मिली है इम लिए दुख में उसे गँवाइए !
 उम्र हवा है कुछ नहीं, माँम में सब उड़ाइए ,
 दाम में या न आइए, दिल न यहां लगाइए !

इस का इलाज कुछ नहीं, दिल में अगर वफा^४ न हो ,
 फूल में जैसे रंग हों, बास का कुछ पता न हो !

दुःख उठाइए मगर, आह न लव पै लाइए,
दाम में यां न आइए, दिल न यहां लगाइए !

गोरख-धंधा

एक खलश-मी, एक चुभन-सी जिस में मज़ा भी आता है,
जान की तह में बैठा है कुछ बेचैनी या खटका है ।
चुटकियां बैठा लेता कोई, एक खटकता-सा काँटा,
एक खलश-मी एक चुभन-मी जिस में मज़ा भी आता है ।

साँस के भोंकों से यह शगूफ़ा^१ जान का जब तक खिलता है,
सुख-दुख का है गोरख-धंधा दिल का लंगर हिलता है ।
कोई छिप कर दिल में इस वीणा के तार बजाता है,
एक खलश-सी, एक चुभन-सी जिस में मज़ा भी आता है ।

वह 'आज' हूँ जिस का 'कल' नहीं है

कोई शौ बुरी भली नहीं है, कोई बात यां अटल नहीं है,
यह है जिंदगी अजब पहेली, कोई इस का यां तो हल नहीं है ।
वह हूँ फूल, जिस का फल नहीं है ! वह हूँ 'आज', जिस का 'कल' नहीं है !
अभी कुछ न हुई थी सयानी, कि उठा बड़ों का सिर से साया,
तो ज़माने ने यह पलटा खाया, कि किसी को फिर न अपना पाया ।
न खबर ज़रा भी ली किसी ने, पड़े अपनी जान ही के लाले,
मेरे सामने खड़े थे फाँके^२, पड़ी क्या गरज़ किसी को, पाले ।
यह कड़े दिलों की तोताचश्मी^३, मेरे दिल में तार-सी है बैठी,
गई मन के फूल की तरावत^४, उड़ी आंस की तरह से नेकी ।

^१बिनखिली कली । ^२उपवास । ^३आँखें फेर लेना । ^४ताज़गी ।

न रहा किसी पै कुछ भरोसा, न रहा कोई मेरा सहारा,
 न रही किसी की मैं ही प्यारी, न रहा कोई मेरा ही प्यारा !
 वह हूं फूल, जिस का फल नहीं है ! वह हूं 'आज', जिस का 'कल' नहीं है !
 जिसे देखो अपने दाँव में है, चला दाँव और वह पछाड़ा,
 कि यह ज़िंदगी है एक कश्ती, यह जहाँ है इक बड़ा अखाड़ा ।
 वह हूं फूल जिस का फल नहीं है ! वह हूं 'आज' जिस का 'कल' नहीं है !

मेरा वतन

मेरी जान हो कि मेरा बदन, तेरा जल्वागाह^१ है ऐ वतन^२,
 तेरी खाक उन का खमीर^३ है !

मेरे खून में है झलक तेरी, मेरी नब्ज़^४ में है चमक तेरी,
 मेरा साँस तेरा सफ़ीर है !

जिन्हें प्रीत है उन्हें जीत है, यही जग में जीत की रीत है,
 तेरे दिल ज़िगर भी हैं बेवफ़ा^५ !

हमें ग़ैरियत^६ यह मिटानी है, हमें जीत आप यह पानी है,
 कि हो भाई-भाई से आशना !

मेरी जान हो कि मेरा बदन, तेरा जल्वागाह है ऐ वतन,
 तेरी खाक उन का खमीर है ।

^१ जल्वे का स्थान, अर्थात् मेरी जान और मेरे शरीर में ऐ देश तेरा ही रूप प्रकट है । ^२ देश । ^३ तेरी खाक से वे पैदा हुए हैं । ^४ नाडी । ^५ कृतघ्न, प्रेम-रहित ।

^६ दुराव ।

डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर'

एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर के प्रिंसिपल डाक्टर मुहम्मद दीन 'तासीर' का नाम उर्दू के साहित्यिकों में बड़े अदब से लिया जाता है। सीधी-सादी और सरल भाषा के साथ भावों की उड़ान दिखाने में आप को कमाल हासिल है। भाषा को आप व्याकरण और प्रथा की बेड़ियों में बाँधने का बजाय ध्वनि और संगीत की जंजीरों में बाँधना अधिक पसंद करते हैं, और इस के लिए हिंदी तां दूर यदि ठेठ पंजाबी भाषा का मुहावरा प्रयोग में लाना पड़े तो नहीं झिझकते। रस, मिठास, और संगीत में आप की कविताएं डूबी होती हैं।

कव आओगे प्रीतम प्यारे ?

कव आओगे प्रीतम प्यारे ?

कव आओगे प्रीतम प्यारे ? कव आओगे प्रेम-द्वारे ?
रह गए पाओं चलते-चलते , थक गईं आँखें रस्ता तकते ,
कव आओगे प्रीतम प्यारे ?

एक किनारे महल तुम्हारा , एक तरफ हम पीत के मारे ,
बीच में नदिया, तुंद^१ हवाएं , कैसे आएँ, कैसे जाएँ ?
कव आओगे प्रीतम प्यारे ?

फूल खिले हैं बाग में हरसू^२, दुनिया में फैली है खुशबू ,
ऊँची-ऊँची हैं दीवारें , कब तक सिर दीवार से मारें ?
कव आओगे प्रीतम प्यारे ?

^१तेज़ । ^२हर और ।

खाना, पीना, सोना कैसा ! हँसना कैसा, रोना कैसा !
 चार तरफ़ छाई है उदासी , घर में रह कर हैं बनवासी !
 कब आओगे प्रीतम प्यारे !

देवदासी

बाल सँवारे माँग निकाले, दुहरा तेहरा अंचल डाले ,
 नाक पै बिंदी कान में बाले, जग-मग जग-मग करनेवाले ।
 माथे पै चंदन का टीका, आँख में अंजन फीका-फीका ।
 शबगू^१ काली-काली आँखें, मदमाती, मतवाली आँखें ,
 जीवन की रखवाली आँखें ।
 आँख भुकाए लट छिटकाए, जाने किम की लगन लगाए !
 बिरह उदामी, दर्शन-प्यासी, देवादासी^२ नदी किनारे ,
 प्रेम द्वारे, तन मन हारे ,
 यों ही अपने आप खड़ी है ! बुत बन कर चुपचाप खड़ी है !

मान भी जाओ !

मान भी जाओ, जाने भी दो , छोड़ो भी अब पिछली बातें ।
 ऐसे दिन आते हैं कब-कब , कब आती हैं ऐसी रातें ?
 मान भी जाओ, जाने भी दो !
 देख लो वह पूरब की जानिव , नूर ने दामन फैलाया है ।
 शव की खिलअत^३ दूर हुई है, सूरज वापस लौट आया है ।
 मान भी जाओ, जाने भी दो !
 जल-जल कर मर जानेवाले , परवानों का ढेर लगा है ।

^१रात की तरह काली । ^२देवदासी । ^३वह पोशाक जो सम्राट की ओर से पुरस्कार में दी जाती है—यहाँ केवल वस्त्र से अभिप्राय है । दीप-शिखा ।

लेकिन यह भी देखा तुमने , शमअ का क्या अंजाम हुआ है ?

मान भी जाओ, जाने भी दो !

मान भी जाओ, तुम को क्रसम है, मेरे सर की, अपने सर की ।

तुम को क्रसम है, मेरे दुश्मन , अपने उम मंज़ूर नज़र की ।

मान भी जाओ जाने भी दो ।

उस की क्रसम है, जिम की खातिर, यों तुम मुझ को भूल गए हो !

भूल गए हों सारे वादे , कौनों क्रसम को भूल गए हों !

मान भी जाओ, जाने भी दो !

अच्छा तुम सच्चे, मैं झूठा , अच्छा तुम जीते, मैं हारा ।

क्या दुश्मन औ 'किम का दुश्मन, झूठा था यह सारा किस्सा ।

मान भी जाओ, जाने भी दो !

कब तक उस को याद करोगे ?

मेरी वफ़ाएं याद करोगे , रोअंगें फ़रयाद करोगे ।

मुझ को तो बर्बाद किया है , और किसे बर्बाद करोगे ।

हम भी हँसेंगे तुम पर एक दिन , तुम भी कभी फ़रयाद करोगे ।

महफ़िल की महफ़िल है गुमगी , किम-किम का दिल शाद^१ करोगे ?

दुश्मन तक को भूल गए हो , मुझ को तुम क्या याद करोगे ?

खत्म हुई दुश्नाम तराज़ी^२ , या कुछ और इश़ाद^३ करोगे ?

जाकर भी नाशाद किया था , आकर भी नाशाद करोगे ।

छोड़ो भी 'तासीर' की बातें , कब तक उस को याद करोगे ?

एकांत की आकांक्षा

मुझ को तन्हा^४ रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !

^१ प्रसन्न । ^२ ग़ाली निकालना । ^३ कहना (बरमाना) । ^४ एकाकी ।

खुश रहता हूं अच्छा हूं मैं, दुख सहता हूं सहने दो !

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मेरे दिल की आग बुझा दी, आहें भरनेवालों ने ।

मेरी ठंडक खो दा है, इन उलफ़त करने वालों ने ।

मुझ का तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मुझ को मुझ से छीन लिया है, मेरे अपने प्यारों ने ।

टुकड़े-टुकड़े कर डाला है, प्रेमभरी तलवारों ने ।

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
ढाँप लिया है मेरा तन-मन, नाजुक नाजुक^१ पदों में ।

छोड़ दो मुझ को, दम घुटना है मेरा तुम हमदर्दों में ।

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
कैद किया है तुम ने मुझ को उलफ़त के बुतखाने में ।

मह्व^२ हुआ जाता हूं मैं अब आप अपने अफ़साने में ।

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
चार तरफ़ से घेर लिया, मैं तुम में खोया जाता हूं ।

अब मैं अपनी आँखों से भी ओझल होता जाता हूं ।

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !
मेरी इक तस्वीर खयाली^३ तुम ने आप बना ली है ।

मुझ को तुम से प्यार नहीं है, अपनी मूरत प्यारी है ।

मुझ को तन्हा रहने दो तुम, अपने हाल में रहने दो !

^१ कोमल-कोमल । ^२ नश्व । ^३ काल्पनिक ।

यह जी मिटे जले या झुरसे , अब तो आग लगाई तुम ने ।

पहले-पहल जब इन आँखों से, मेह का धारा फूट बहा था ,
 प्रेम का सागर मेरे स्वामी , खूब भरा था खूब भरा था ।
 सुख की नदी बहाई तुम ने , जीवन नाव चलाई तुम ने ।
 यह अहसान भला क्यों भूलूं ? कष्टी पार लगाई तुम ने !

पहले-पहल जब तुम ने स्वामी , सर पर मेरे हाथ रखा था ,
 सुन लो, मुन लो भाग हमारा, सोते-मोते जाग उठा था ।
 अपने पाँव गिराया तुम ने , मुक्त किया अपनाया तुम ने ।
 अब क्या चाहूं सब कुछ पाया , ईश्वर रूप दिखाया तुम ने^१ ।

पूरम पार भरी है गंगा

पूरम पार भरी है गंगा, खेवनहारे हौले-हौले !

मेघ प्रेम का छाया मन में, प्रियतम बोल, पपीहा बोले ।
 बर्पा रत आँ' रात आँधेरी, नाव प्रेम की खाय भकेले ।

सँभल-सँभल रे प्रेम के जोगी, मन की गाँठ न कोई खाले ।
 देख देख अनमोल समय है, अपने मन ही मन में रोले ।

नींद प्रेम की सब से प्यारी, दुख सह लं, फिर जी भर सोलें ।
 रीत यहाँ है इस नगरी का, पहले मन की माया खालें ।

^१ अब तक हिंदी के जिस रूप ने उर्दू पर प्रभाव डाला है वह अधिकतर ब्रज-भाषा है । आधुनिकतम हिंदी कविता को समझनेवाले हिंदी में बहुत कम मिलते हैं, फिर उर्दू की बात तो दूसरी है । मकबूल साहब ने आवश्यकता अनु-सार हिंदी से मिलते-जुलते ब्रजभाषा की तज़ के शब्द बना भी लिए हैं ।

पपीहा और प्रेमी

जी बेकल, सीने में घड़कन, उलझे मिग के केस ,
पता नहीं शीशे में दिल के लगी किधर से ठेम ?
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का संदेस !

आप ही आप यह जी घबरावे, कहीं न आना-जाना ,
अपने को भी भूल गए हम, जब से उन्हें पहचाना ।
हां रे पपीहे, प्रेम के पागल, गा दे प्रेम का गाना !

फूल खिले फुव्वारे छूटे, रंग-विरंगी क्यारी ,
फिरती है आँखों में जैसे किर्मी की सूरत प्यारी ।
सँभल पपीहे, प्रेम के पागल, अब है तेरी बारी !

जब से दिल की दुनिया सूनी, सूना मारा देस ,
खबर नहीं क्यों दिल ने आखिर लिया बेराग का भेस ?
सुन रे पपीहे, प्रेम के पागल, प्रेमी का संदेस !

मोहनी

देख मनोहर मुख मतवाला, भूला सब जादू बंगाला ।
भुके नैन औ' लबी पलकें, नेह की किरनें पलकों झलकें ,
कान बचन को वाके तरमे, बातों बातों अमृत बरसे !
दाएं हाथ में थाल दया की, बाएं हाथ में धर्म की पोथी ,
अगला पांव बड़े सेवा को, पिछला पांव उठे पूजा को—
बिन मोए कोई मपना देखे, सीने मे उर खींच के फेंके ।
जग की शोभा उस का जीवन, औ' यह जीवन उस के कागन ,
पाथर तज कोई वाको पूजे, नहीं नहीं ब्रह्मा को पूजे !
ब्रह्मा की सुंदरता है वह , नहीं मोहनी, ब्रह्मा है वह ।

कवि

रात अंधेरी शाम, साँवली, कच्चा देखो दूर से आता,
पंख जोड़ कर इमली ऊपर भरे गले से है चिल्लाता,
क्या जाने तब कौन मगन हो इस मेरे दिल में है गाता ?

रात चाँदनी, शाम सुनहरी, चाँद आए औ' सूरज जाए,
नदी किनारे घाट के ऊपर, दूर बाँसुरी कोई बजाए,
क्या जाने तब रुठे मन को मिन्नत करके कौन मनाए ?

रात अंधेरी औ' सन्नाटा, सन-मन चलें हवा दक्खिन की,
पिछले पहर जब भील किनारे एक दम छेड़े राग तलहरी,
क्या जाने तब मेरे दिल में रह-रह लेवे कौन फरहरी ?

रात चाँदनी और सवेरा, पानी दरिया का मुसकाता,
कोमल कलियां खोल के आँखें देखें ऊपा का रथ आता,
क्या जाने तब मेरे दिल में कौन मगन होकर है गाता ?

पथिक से

मन की आँखें खोल, मुसाफिर, मन की आँखें खोल !
मन में बसे हैं दोनों आलम^१, देख न यह आलम हों बरहम^२,
यहां कभी है ऐश कभी गम, हँमता रह औ' रो भी कम-कम.
ऐश औ' गम की उठा तगाजू, अक्ल की पूँजी तोल !
मुसाफिर, मन की आँखें खोल !

दिन गुजरा औ' निकले तारे, बजी बाँसुरी नदी किनारे,
फूट बहे अश्कों^३ के धारे, दहक उठे दिल के अंगारे,

^१जगत । ^२उलट न जाए । ^३आँसुओं ।

सँभल-सँभल औ' दिल को बचा ले, मन न हो डाँवाडोल !

मुसाफिर, मन की आँखें खोल !

चीख रहे हैं लोग जहाँ के, खुल गए रस्ते यहाँ-वहाँ के,
गए वे दिन अब आहो-फुगाँके^१, उठ गए पर्दे कोनों-मकाँ के^२,
तू भी दिखा जीने के लच्छन, अब तो मुँह से बोल !

मुसाफिर, मन की आँखें खोल !

नसीहत

सुख की सुंदर सेज पै तुम ने, मीखा मस्त पड़े रह जाना,
खाना, सोना, हँसना, गाना, चैन मनाना, जी बहलाना,
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

बुरा समय आराम में भूलें, सुस्ती में मीखा घबराना,
ग़ैरत^३ खोई, लाज गँवाई, राम न आया पलक लगाना,
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

कब तक आखिर लगा रहेगा, ये अपनी औकात^४ गवाना ?
दिन भर फिरना शाम को आना, खाना, पीना औ' सो जाना !
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

जहाँ ज़रा सी ज़िद पर जाकर, हो यों घर में आग लगाना,
ऐसे देस में ऐ 'मकबूल', भला जीते जी है मर जाना !
चाल चली दुनिया अलबेली, कोसों आगे बढ़ा ज़माना !

कोयल

सुंदर समय सुहाने दिन, आए वही पुराने दिन ,

^१ निःश्वास और नाले । ^२ संसार । ^३ लज्जा । ^४ हस्ती ।

बेली कोयल 'कू-हू-कू' !
 'कू-हू,' 'कू-हू' की मुरली, वन बस्ती में बाज रही ।
 कोयल, कोयल, सुन तो सही. ऐसी क्यों बेचैन हुई ?
 दिल में क्यों यह हूक उठी. किस के कारण कूक उठी ?
 कौन समाया है मन में ? हूँढ़ रही किस को वन में ?
 क्यों तू ने यह सोग किया ? किस की खातिर जोग लिया ?
 'कू-हू' 'कू-हू,' 'कू-हू-कू',
 ऐ पागल, बेली कोयल, जीवन क्या जो आए कल ?
 तू सब कुछ, फिर भी नादान, जा अपना जीवन पहचान !
 'कू-हू, कू-हू, कू-हू कू' !

‘वक्रार’ अंबावली

वक्रार साहब के गीत इतने लोकप्रिय हुए हैं कि उन के बहुत से गीतों को कोलंबिया रिकार्ड कंपनी ने अपने रिकार्डों में भर दिया है। फ़ारसी में ग़ज़लें कहने, उर्दू में नज़्में लिखने और सरल भाषा में मर्मस्पर्शी गीत लिखने में श्री हफ़ीज़ ज़ाल्धरी की भाँति वक्रार साहब का भी विशेष निपुणता प्राप्त है। दुर्भाग्य यही है कि उन्हें एक दैनिक पत्र में काम करना पड़ता है और अपनी आश्चर्यजनक प्रतिभा को हंगामी नज़्में और वर्ष में ३६५ अग्रलेख लिखने में लगाना पड़ता है। जितनी जल्दी वक्रार ग़ज़ल या नज़्म लिखते हैं। वह प्रायः लोगों को आश्चर्य में डाल दिया करती है। आप के गीतों में करुण और वीर रस दोनों का सम्मिश्रण है।

जीवन

यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा !
इस का अंत औ’ आद नहीं है, पूरी किमी को याद नहीं है।
आँसू औ’ मुसकान कहानी, कहते हैं सब अपनी बानी।
एक कहानी पाप औ’ पुन, हँस कर कह या रो कर सुन !
यह जीवन एक कहानी है, कुछ कहता जा कुछ सुनता जा !

कूक पपीहे, कूक !

कूक पपीहे, कूक !
बादल गरजे रैन अंधेरी, सूनी-सूनी दुनिया मेरी,
जीना मेरा हो गया दूभर, आँख लगे ना भूक !
कूक पपीहे, कूक !

तू बनवासी खुल कर गए, मेरा रोना मुझे डुवाए !
 तेरा तरह से नेह लगाया, चूक गई मैं चूक !
 कूक पपीहे, कूक !
 मैं भी अकेली, तू भी अकेला, मोह का सागर, दुख का रेला;
 तेरे गले में पी का फंदा, मेरे मन में हूक !
 कूक पपीहे, कूक !

पिया बिन नागन काली रात !

पिया बिन नागन काली रात !

मेजे मूर्ती, रात अँधेरी, बाजम है परदेस ,
 डर के मारे जिया निकसत है, कैसे हो परभात^१ !
 मगिया भूमें, मंगल गाए, और तले पकवान ,
 मैं मन मारे बैठ रही हूँ, धरे हात पर हात !
 रैन अँधेरी, रुख भयानक, साएँ साएँ होत ,
 टहने उन के भूत बने हैं, नाग के फन हैं पात !
 पिया बिन नागन काली रात !

उस पार

आओ चले उस पार , साजन, आओ चले उस पार !
 जीवन-सागर लहरें मारे, वायू^२ चंचल, दूर किनारे .
 मची है हाहाकार , साजन, आओ चले उस पार !
 नाव के अपनी बनें खेवैया, दुख के भँवर से खेलें नैया ,
 काट चलें मँझधार , साजन, आओ चले उस पार !

^१प्रभात । ^२वायु ।

सौम का चपू कर दे धीमा, है मर्माप नागर की सीमा ,
जहां है मुख का द्वार , साजन, आओ चलें उम पार !

कौन बंधाए धीर ?

सखी, अब कौन बंधाए धीर ?

याद पिया की है कलपाती, नहा रात भर निदिया आती ,
हाथ वे अखिया मदमाती, वह मुखड़ा गंभीर !

फूटी किस्मत पलटा पासा, उन का हुआ परदेम में बासा ,
टूट चली मेरे मन की आसा, नैनन बरसे नीर !

सावन आया पड़ गए भूले, टपका नीम, करेले फूले ,
आवे याद जो सुभ को भूले, लगे कलेजे तीर ?

छम-छम-छम-छम बादल बरसे, आँखिया रोंए औ’ जी तरसे ,
आग विरह की बरसे घर मे, जल में जले शरीर !

सखी अब कौन बंधाए धीर ?

आज की रात

प्रीतम, रह जा आज की रात !

आज की रात जियरा घड़के, आज की रात आँख भी फड़के ,
जोड़ रही हूँ हात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

बिजली कड़के बादल बरसे, आज की रात निकल नहीं घर से ,
देख भरी बरमात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

आज की रात जिया घबराए, आज की रात गई कब आए ?
सुन जा मन की बात, प्रीतम, रह जा आज की रात !

जवानी के गीत

देर से गाना गानेवाले, दुनिया को भरमाने वाले !
दिल में चुटकी कब तक लेगा, दादे हसरत^१ कब तक देगा !
तेरा जादू टूट चुका है, आँख से आँसू फूट चुका है !
छोड़ दे अब यह 'आए-बाए' ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

हार चुके हैं रोनेवाले, रो-रो कर जी खोनेवाले,
बीत चुकी है रात दुखों की, कौन सुने अब बात दुखों की ?
हुआ सवेरा, दुनिया जागी, सुख का राग अलाप ऐ रागी !
दुख इस दुनिया से मिट जाए ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

दुनिया औ' अक़्वा^२ के धंधे, कुफ़^३ और ईमान^४ के फंदे,
आ, औ' उन को तोड़ के रख दे, गुम का मुक़द्दर^५ फोड़ के रख दें !
हूरो-सनम^६ की ज़ात न पूछें, देरो हरम^७ की बात न पूछें,
शोख जवानी को अपनाए ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

मेहनत औ' सरमाये^८ का भगड़ा, अपने और पराये का भगड़ा,
यह आकाई^९ और गुलामी^{१०}, इंसानी तदबीर की खामी^{११},
गर्दिशे-दौग^{१२} को बदलें, आ तकदीरे-जहाँ^{१३} को बदलें !
दुनिया को आज़ाद कराएं ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

मदमाती मखमूर^{१४} जवानी, चचल औ' मसरूर^{१५} जवानी,

^१आकाँक्षा को प्रशंसा । ^२परलोक । ^३अधर्म । ^४धर्म । ^५भा-ब । ^६स्वर्ग में बसने वाले सुंदर युवक और युवतियाँ । ^७मंदिर और मसजिद । ^८पूँजी । ^९स्वा-मित्र । ^{१०}दासता । ^{११}त्रुटि । ^{१२}संसार-चक्र । ^{१३}संसार का भाग्य । ^{१४}मस्त ।

सदमों^१ को ठुकराने वाली, गुम को आग लगाने वाली,
बेखौफ़ औ’ बेबाक^२ जवानी, हर इक दाग से पाक जवानी,
हक^३ है जिस के दाएं बाएं, आ मिल गीत जवानी के गाएं !

शक्ती से भरपूर जवानी, बल के नश में चूर जवानी,
गोलों की बौछार में भूमें, तलवारों की धार को चूमें,
मौत से हँस कर लड़ने वाली, मौत के सिर पर चढ़नेवाली,
बरसाएं अमृत बर्पाएं ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

मस्त औ’ तुंदो तेज़^४ जवानी, गर्म और आतश-श्वेज^५ जवानी,
आँधी औ’ तूफ़ान जवानी, रण-चंडी का मान जवानी,
चाल में जिस की बिजली कड़के, खौफ़ से जिस के दुनिया धड़के,
आ इस को हैजान^६ में लाएं ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

तख़्त औ’ ताज को जो ठुकरा दे, बख़्त^७ औ’ वाज^८ को जो ठुकरा दे,
मन को खुदी की लाग लगा दे, दुनिया में इक आग लगा दे,
तोड़ दे हर जंजाल के फंदे, फूँक दे सारे गोरख-धंधे,
उस के सुर से गला मिलाएं ! आ मिल गीत जवानी के गाएं !

बच्चे की मौत पर

तू बिलुड़ कर जायगा मां से कहाँ ? ऐ नौनिहाल !
कौन पालेगा तुझे और कौन रखेगा खयाल ?
मीठी-मीठी लोरियां देगा तुझे रातों में कौन ?
हां लगाएगा तुझे मेरी तरह बातों में कौन ?
गोद में मचलेगा किस की किस से रूटेगा वहां ?

^१ दुःखों । ^२ निडर, उहड़ । ^३ न्याय । ^४ उग्र, प्रचंड । ^५ आग बरसानेवाली ।

^६ जोश । ^७ भाग्य । ^८ भाग्य-प्रदत्त धन ।

सोएगा सीने में किस के, ऐ मेरे दिल, मेरी जां ?
 तुझ को जन्नत की फ़िज़ाए मेरे बिन क्या भाएंगी ?
 रोएगा, जब मा की मीठी लोखियां याद आएंगी !
 हूरो-गुलमा^१ में बढा माना कि अन्नाएं भी हैं ।
 जा रहा है जिस जगह तू, क्या बढा माए भी हैं ?
 काख-उजड़ी अपनी हम-चश्मों^२ में कहलाऊँगी मैं ?
 आह ! अब किस मुँह से मेरी जान, घर जाऊँगी मैं ?
 आ कि तुझ बिन बेकरारों, मज़तिगो-नाला हूँ^३ मैं .
 आ, मेरा नन्हा है तू, आ आ कि तेरी मा हूँ मैं !

^१स्वर्ग में रहनेवाले कम उम्र के युवक और युवतियाँ । ^२बराबर बालियों ।
 अबैतैन, उद्विग्न और दुखी ।

पंडित इंद्रजीत शर्मा

पंडित इंद्रजीत शर्मा माछगा, जिला मेरठ के रहनेवाले हैं । आप बहुत दिनों से लिखते हैं । उर्दू गज़लों और नज़्मों में आपने बाफ़ी नाम पाया है । 'नैरंगे-फ़ितरत' के नाम में आप की कविताओं का संग्रह भी छप चुका है । गीतों के इस युग से आप भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे । और आप की लेखनी ने अनायास ही आप से ये नज़्मे लिखवा लिए हैं ।

वे तो रूठ गए

वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !

कुछ बात न पूछ सकी मन की, पिया चले गए मुझे छोड़ गए ।
सब प्रीत की रीत बिसार गए, सब प्रेम के बंधन तोड़ गए ।
मैं प्रेम ही प्रेम जताती रही, वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !
क्या मोह भला है माधू का, क्या ममता है सन्यासी की ।
कुछ तरस न खाया दामी पर, कुछ बात न पूछी दासी की ।
योहीनयनों से नीर बहाती रही, वे तो रूठ गए मैं मनाती रही !

नैया है मँझधार

बेड़ा, कौन लगाए पार ?

नदिया के चौपाट खुले हैं, धरती अंबर रूठ रहे हैं ,
पापी मनो में पाप बसे हैं, नैया है मँझधार !
कोमो है अब दूर किनारा, लहरें मार रही हैं धारा ,
बेबस नैया खेवनहारा, काम न दे पतवार !

सारी दुनिया है मदमाती, कोई नहीं है संगी-साथी ,
 मतलब के सब गोती-नाती, मतलब का संसार !
 कुछ भी किसी को ध्यान नहीं है, समझ नहीं है, ज्ञान नहीं है,
 मुर्दा दिलों में जान नहीं है, यही है सोच-विचार ।
 बेड़ा कौन लगाए पार ?

भिक्षा प्रेम की

भिक्षा प्रेम की, प्रीतम, मैं तो आई लेने भिक्षा प्रेम की !
 प्रीतम दासी की सुध लीजो, कब से खड़ी हूं किरपा कीजो ,
 वारी जाऊं, दीजो दीजो—भिक्षा प्रेम की ।
 प्रीतम, मैं तो आई लेने भिक्षा प्रेम की !
 मेरे स्वामी मेरे प्यारे, नाथ मेरे जीवन के सहारे ,
 माँगने आई तेरे द्वारे—भिक्षा प्रेम की !
 प्रीतम, मैं तो लेने आई भिक्षा प्रेम की ।
 दूर से चल कर आई भिखारन, कर दो मुक्त मेरा यह बंधन ,
 दे दो लेकर मेरा जीवन—भिक्षा प्रेम की ।
 प्रीतम, मैं तो लेने आई भिक्षा प्रेम की !

तोते

उड़ जा देस-बिदेस , तोते, उड़ जा देस-बिदेस !
 मैं जाऊं तुझ पर बलिहारी, बिरह का रोग लगा है भारी ,
 रुठ गए मुझ से गिरधारी, चले गए परदेस !
 तारे गिन-गिन रात बिताऊं, दिन में पल भर चैन न पाऊं ,
 आँसू पीती हूं, गम खाऊं, ले जा यह संदेस !

मिल जाएं तो उन से कहना, दूभर हो गया तुम बिन रहना ,
तज दिया मैं ने सारा गहना, जागन का है भेस !

भूल आई री

भूल आई री ! भूल आई, भूल आई, भूल आई री !

अपना यह मन सखी भूल आई री ।

नयनों की चोंट में, पलकों की ओट में ,

प्यारे की जीत में, मस्ती के गीत में ,

बंसी की तान में, एक ही उठान में ,

भूल आई री ! भूल आई, भूल आई, भूल आई री !

अपना यह मन सखी भूल आई री !

जोगी का गीत

बाबा, भर दे मेरा प्याला !

परदेसी हूं दुख का मारा, फिगता हूं मैं मारा-मारा ,
जग में कोई नहीं सहारा, खोल गिरह का ताला !

जोगी हूं मैं दान का प्यासा, निर्वुद्धी हूं ज्ञान का प्यासा ,
चंचल मन है ध्यान का प्यासा कर दे अब मतवाला !

तेरे कागन जोग लिया है, ऐश छोड़ कर सेग लिया है,
एक निराला रोग लिया है, पड़ा जिगर में छाला !

बाबा, भर दे मेरा प्याला !

सावन बीता जाए

सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए ,
कैसे काटूं रात विरह की नागन बन-बन खाए !

ठंडा-ठंडी पुरवा सनके, बादल धिर-धिर छाए ,
 नन्ही नन्ही बूंदें टपके, औ' विजली लहराए !
 याद पिया की मेरे दिल को रह-रह कर तड़पाए ,
 सावन बीता जाए, सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !
 मोर, पपीहा, भींगर, मारस, मिल कर शोर मचाएं ;
 नाचें कुंद करे कलोलें, फूले नहीं समाएं ;
 नाच रंग औ' खेल कुंद की बात न मन को भाए ,
 सावन बीता जाए सजनी, प्रीतम घर नहीं आए !
 कुंज-कुंज में पड़े हैं झूले, मिल कर सखिया झूले ,
 पींग बढ़ाए, तान उड़ाए, अपने मन में फूले ;
 हंसी-खुशी की बात यह मेरे मन को और जलाए ,
 सावन बीता जाए सजनी प्रीतम घर नहीं आए ।

अहसान 'दानिश'

'अहसान' उर्दू के प्रगतिशील युवक कवि हैं — मीठी भुरीली ऊँची आवाज़ से गानेवाले । उन की कविताओं के चार संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । 'दर्दे-ज़िदगी' उन में प्रसिद्ध है । आप का अधिकांश नज़्में गरीब मजदूरों, दुखी किसानों पर लिखी होती है । आप ने गीत बहुत नहीं लिखे, पर जो लिखे है सुंदर लिखे हैं ।

जग की भूठी प्रीत

जग की भूठी प्रीत !
फ़ार्ना है यह दुनिया फ़ार्नी, उठती मौजें, बहता पानी ,
छाड़ भी इस की रामकहानी, यह है किस की मीत ?
मोह के दिन हैं दुख की राते, ज़र^१ के फदे, पाप की धाते,
प्रेम के रस से खाली बाते, हार यहां की जीत !
जग की भूठी प्रीत !

भूटे जग की भूठी प्रीत

भूटे जग की भूठी प्रीत !
करयुग बीता कलयुग आया, हर ज़र^२ ने पलटी काया ,
हिरदे-हिरदे^३ पाप समाया, उलटी नगरी, उलटी रीत !
दुनिया सावन रैन का सपना, मोह नगर में चैन का सपना ,
रूप अनूप है नैन का सपना, किस की हार औ' किस की जीत ?

^१धन । ^२कण । ^३हृदय-हृदय ।

धोका है ससार में धोका, नर में धोका, नार में धोका ,
 प्रेम में धोका, प्यार में धोका, फीकी तानें नीरस गीत !
 झूठे जग की झूठी प्रीति !

मज़दूर का बच्चा

यह प्यारा-प्यारा बच्चा, आँखों का तारा बच्चा !
 यह दिल को लुमाने वाला, रो-रो के हँसाने वाला ,
 कितरत का दुलारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !
 आपा^१ की नज़र की रौनक, अम्मा के घर की रौनक ,
 दुखिया का सहारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !
 हूरो का तरन्नम^२ कहिए, गुलमां का तबस्सुम^३ कहिए ,
 जन्नत का नज़ारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !
 लब पतले आँखे काली, रुबसार^४ पै हलकी लाली ,
 जग रूप से न्यारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !
 मज़दूर का बेटा लेकिन, मज़दूर बनेगा इक दिन ,
 अफ़लास^५ का मारा बच्चा ! यह प्यारा-प्यारा बच्चा !
 दुनिया का सितम^६ देखेगा, 'ना होत' का गुम देखेगा,
 यह प्यारा-प्यारा बच्चा, यह आँख का तारा बच्चा !

^१पिता । ^२संगीत-लहरी । ^३मुसकान । ^४कपोल । ^५गरीबी । ^६अन्याय ।

रणवीरसिंह 'अमर'

पंजाब के एक नौजवान शायर ने 'राधा के गीत' नाम से एक पुस्तक लिखी है। राधा कौन है और कृष्ण कौन—यह उस ने नहीं लिखा। हो सकता है कुछ लोग इन गीतों में उस प्रेम-कहानी को पाएं जो आज से कोई पाँच हज़ार वर्ष पहले मथुरा-वृंदावन के मस्त इलाक़े में जमना के इस पार या उस पार लिखी गई थी, पर कवि की राधा तो वह आराधना है, जो हर प्रेम करनेवाले के दिल में पैदा होती है और 'कृष्ण' वह है जिस पर इस प्यार और भक्ति के फूल चढ़ाए जाते हैं। जब तक मानव जीवित है तब तक कवि की राधा भी जीवित है और कवि का कृष्ण भी। राधा के इन्हीं गीतों को लिखनेवाले का नाम 'अमर' है। और यहां से कुछ गीत दिए जाते हैं।

मन पागल

मन पागल यों बेचैन न हो ! इतना व्याकुल दिन-रैन न हो !
जैसे खुद ही आ जाते हैं, फूलों पर अपने आप अमर—
जब टेर तेरी सुन पाएंगे, वह आएंगे, वह आएंगे !
नयनों से नीर बहाएंगे ! फिर मद-मद मुस्काएंगे !
मन पागल यू बेचैन न हो, इतना व्याकुल दिन-रैन न हो !
जब टेर तेरी सुन पाएंगे, वह आएंगे वह आएंगे !

मन की बस्ती वीरान नहीं

मन की बस्ती वीरान नहीं ।
जैसे भंवरा, उजड़े बन में ,

फूलों की याद में गाता है ,
 वन को आबाद बनाता है ;
 वैसे ही मखि, मेरे मन में ,
 पिय को मिलने की आशा है ।

मन की बस्ती वीरान नहीं, मन का मंदिर सुनसान नहीं ।

प्रीतम गो आप नहीं रहते ,
 प्रीतम की याद तो रहती है ;
 बस्ती आबाद तो रहती है ।

मन की बस्ती वीरान नहीं, मन का मंदिर सुनसान नहीं

आ भी जा

मन-मंदिर तुम बिन सूना है !

ज्यों पुष्पलता बिन फूलों के, तट जमना का बिन झूलों के ,
 मुरली मनहर गोपाल सखा, चित-चोर गवाले आ भी जा !

मन का मंदिर आबाद करो !

ज्यों सीप को करता है मोर्चा, औ' दीप को करती है ज्योती ।
 मुरली मनहर गोपाल सखा, चित-चोर गवाले आ भी जा !

तुम बिन

तड़प रही दिन-रैन तुम बिन !

बिन पानी के मछली जैसे; जैसे भँवरे बिन कलियों के ;
 छिन नहीं पावे चैन !

बिन फूलों के बुलबुल जैसे; औ' परवाने बिन दीपक के ;
 रहते हैं बेचैन !

तुम बिन तड़प रही दिन-रैन !

मैं नीर भरन नहीं जाऊं

मैं नीर भरन नहीं जाऊं

पनघट पर !

पनघट के राजन, कृष्ण कन्हैया, माँवरे साजन,
बंसी की तान उड़ाते हैं, मखियों का मन भरमाते हैं।
उन मखियों के उस भुरमट को, बंसीवाले उस नटखट को,
जब जमना-नट पर देखा है, तब मुश्किल में घर देखा है।

वैर है मुझ में साम ननद को,

बात-बात पर गारी देगी, गारी बारी-बारी देगी।

उन की गारी कैसे खाऊं ?

नीर भरन नहीं जाऊं

पनघट पर !

मैं नीर भरन नहीं जाऊं !

प्राणों के आधार

प्राणों के आधार ! तुम्हीं हो, प्राणों के आधार !

मन-मंदिर के वासी प्राणम, मन-मंदिर का मान है तुम में।
तुम पर सदेक दासी प्राणम, जीने का सामान है तुम में।
चाँद हो तुम 'औ' मैं हूँ चकोरी, मन मंदिर की ज्योती तुम हो !
तुम काहन मैं बॉम की पोरी, सीप हूँ मैं 'औ' मांती तुम हो !
मन-मंदिर में रहनेवाले, मन मंदिर को छोड़ न जाना !
ऐ मेरे साजन मतवाले, दुखिया का दिल तोड़ न जाना !
प्राणों के आधार ! तुम्हीं हो, प्राणों के आधार !

‘हफ़ीज़’ होशियारपुरी

‘हफ़ीज़’ होशियारपुरी युवक हैं। जवानी के साथ-साथ शायरी की चौखट पर भी खड़े हैं। पर इतने अर्से में ही उन्होंने ने जिस प्रतिभा का सवृत दिया है वह एक उज्ज्वल भविष्य की आशा बंधाता है। दो-ढाई वर्ष पहले गवर्नमेंट कालेज लाहौर से एम० ए० की डिग्री लेकर हाल ही में आप आल इंडिया रेडियो में काम करने लगे हैं। गीत उन्होंने ने बहुत नहीं लिखे, पर जो लिखे हैं महसूस करके लिखे हैं। कविताओं की भाँति उन के गीतों में भी एक बेसाव्तगी, एक अनायासपन है।

अतीत की याद

नाव चाँद, आकाश था सागर, तारे खेवनहार थे प्यारे,
मेरी रामकहानी सुनकर जाग उठे थे नींद के माते,
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते !

दर्शन जल की खातिर जाते, दर्शन प्यासे प्रेम दुवारे,
भूढ़ी दुनिया को तज देते अपनी दुनिया आप बसाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते !

प्रीत के आगे प्रीतम प्यारे, भूढ़ हैं रिश्ते-नाते सारे,
मैं अपनाता मन यह तुम्हारा, मेरे मन को तुम अपनाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते !

पलकों पर यूँ नीर चमकते, जैसे अबर पर हों तारे,
रो-रो रात बिताते साजन, अपनी अपनी दसा सुनाते।
काश वह रातें फिर भी आतीं, काश वही दिन फिर भी आते।

काली रात

कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

याद आए वह पल-पल, छिन-छिन , नींद उचाट हुई है उस बिन ,
थक गई आँखें तारे गिन-गिन , होत नहीं परभात !

कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

कब आएगा साजन प्यारा ? साजन मेरा राजदुलारा ,
इन सूनी आँखों का तारा , कोई बताओ यह बात !

कैसे काटूँगी उन बिन काली रात ?

हम पर दया करो भगवान !

हम पर दया करो भगवान !

मेरा जीवन तुम से उजागर , मैं प्यासी तुम अमृत-सागर ,
आओ, भर दो मन की गागर , जान में आ जाएगी जान ।

हम पर दया करो भगवान !

नौका जब मँझधार में आए , रह-रह कर तूफान डराए ,
कौन फिर उस को पार लगाए ? अब तो एक तुम्हारा ध्यान !

हम पर दया करो भगवान !

दिल लेकर मुँह मोड़ न जाना , मेरी आशा तोड़ न जाना ,
मन-मदिर को छँड़ न जाना , यह नगरी तुम बिन सुनसान ।

हम पर दया करो भगवान !

आग लगे

आग लगे इस मन में आग !

लो फिर रात बिरह की आई , जान मेरी तन में धराई ,

चारों ओर उदासी छाई , अपनी किस्मत अपने भाग ।

आग लगे इस मन में आग !

काली औ' बरसती रैन , उस बिन नींद को तरसैं नैन ,
जिस के साथ गया सुख-नैन , उस की याद कहे—'अब जाग' !

आग लगे इस मन में आग !

जिस दिन से वह पास नहीं है , कोई खुशी भी रास नहीं है ,
जीने तक की आस नहीं है , जान को है अब तन से लाग ।

आग लगे इस मन में आग !

कौन जिए और किस के सहारे ? मीठे-मीठे बोल सिधारे ,
गीत कहाँ वह प्यारे-प्यारे ? अब वह तान, न अब वह राग !

आग लगे इस मन में आग !

दरस दिखा कर जो छिप जाए , कौन ऐसे से प्रीत लगाए ?
क्यों अपनी कोई दसा सुनाए ? छोड़ मुहब्बत का खटराग !

आग लगे इस मन में आग !

प्रेमनगर में

भूठी दुनिया से मुँह मोड़ें , धन औ' लोभ की बातें छोड़ें ,
प्रीत की रीत से नाता जोड़ें , मिल कर सारे गीत यह गाएं ,
प्रेमनगर में घर बनवाएं ।

क्या है जगवालों के धंदे ? सब देखे मतलब के बंदे ,
हाथों में हैं पाप के फंदे , मन में पी की लगन लगाएं !

प्रेमनगर में घर बनवाएं !

प्रेमनगर इक स्वर्ग है प्यारे , पी है जिस के राजदुलारे ,
जाग उठेंगे भाग हमारे , जाकर हम उस में बस जाएं !

प्रेमनगर में घर बनवाएं !

बुरी बला है प्रीत

साजन , बुरी बला है प्रीत !

बिरह के दुख हँस-हँस कर सहना , मुँह से कोई बात न कहना ,
कम-कम मिलना चुप-चुप रहना , यह है प्रीत की रीत ।

साजन , बुरी बला है प्रीत !

ना कहीं आना ना कहीं जाना , सब से जी का भेद छिपाना ,
तनहाई में बैठ के गाना , जोग की धुन में गीत ।

साजन , बुरी बला है प्रीत !

आँख में आँसू , बंद ज़बाने , ब्याकुल जिउरे दुखिया जानें ,
किस की सुनें औ’ किस की मानें ? कौन किसी का मीत ?

साजन , बुरी बला है प्रीत !

प्रीत के दुख को जी से चाहें , जैसे हो यह रीत निबाहें ,
प्रीत है ठंडी ठंडी आहें , प्रीत की आग है शीत ।

साजन , बुरी बला है प्रीत !

मीरा जी

इस नए रंग की कविता के मैदान में यद्यपि श्री मीरा जी दो-तीन वर्षों ही से अवतीर्ण हुए हैं, पर इस अर्थ में आप पूरी तरह उर्दू संसार पर छा गए हैं। अब तक इस नए रंग में हर तरह की शायरी की जाती थी, पर मुक्त छंद में लिखी जानेवाली रहस्य-रामेंस तथा वेदनामयी कविताओं का अभाव था। मीरा जी ने उसे पूरा किया है और इन्साफ़ तो यह है कि बड़ी सफलता से पूरा किया है।

मीरा जी का वास्तविक नाम बहुतों को ज्ञात नहीं। उर्दू संसार में आप इसी नाम से प्रसिद्ध हैं और नज़्मों तथा गीतों के अतिरिक्त पुराने देशीय तथा विदेशीय कवियों पर लेख लिखने और उन की कविताओं का हिंदुस्तानी कविता में अनुवाद करने में आप ने खूब नाम पाया है।

कोई दो-एक वर्ष से आप उर्दू के प्रसिद्ध मासिक 'अदबी दुनिया' के संपादन-विभाग में आ गए हैं।

चल-चलाव

बस देखा औ' फिर भूल गए।

जब हुस्न निगाहों में आया,

मन-सागर में तूफ़ान उठा।

तूफ़ान को चंचल देख डरी, आकाश की गंगा दूध-भरी !

औ', चाँद छिपा, तारे सोए, तूफ़ान मिटा, हर बात नई,

दिल भूल गया पहली पूजा, मन-मंदिर की मूरत टूटी !

दिन लाया बातें अनजानी, फिर दिन भी नया औ' रात नई,

प्रेयसि भी नई, प्रेमी भी नया, औ' सेज नई हर बात नई !

इक पल को आई निगाहों में, झिलमिल झिलमिल करती, पहली
सुंदरता औ' फिर भूल गए ।

मत जानों हमें तुम हरजाई^१ !

हरजाई क्यों ? कैसे ? कैसे ?

क्या दाद^२ जो इक लम्हे^३ की हो वह दाद नहीं कहलाएगी ?

जो बात हो दिल की, आँखों की,

तुम उस को हवस^४ क्यों कहते हो ?

जितनी भी जहा हो जल्वागरी,^५ उस से दिल को गर्माने दो !

हर शै^६ फ़ानी,^७ हर शै फ़ानी !

हर जड़वा^८ फ़ना^९ हो जाएगा,

जब तक है ज़मी,^{१०}

जब तक है ज़मा;^{११}

यह हुस्नो नुमाइश जारी है ।

इस एक झलक को झिल्लती नज़र से देख के जी भर लेने दो !

हम इस दुनिया के मुमाफ़िर हैं,

औ' काफ़िला^{१२} है हर आन ग़वां^{१३} !

हर बस्ती, हर जंगल, सहरा^{१४}, औ' रूप मनोहर पर्वत का,

इक लम्हा मन को लुभाएगा, इक लम्हा नज़र में आएगा,

हर मंज़र^{१५}, हर इंसा^{१६} की दया, औ' मीठा जादू औरत का

इक पल को हमारे बस में है, पल बीता सब मिट जाएगा ।

^१हरेक से प्रेम करनेवाला । ^२प्रशंसा । ^३क्षण । ^४वासना । ^५दर्शन ।

^६वस्तु । ^७नश्वर । ^८भावना । ^९नष्ट । ^{१०}धरती । ^{११}ज़माना । ^{१२}यात्रा ।

^{१३}जारी । ^{१४}मरुस्थल । ^{१५}दृश्य । ^{१६}मनुष्य ।

इस एक झलक को छिल्लिलती नज़र से देख के जी भर लेने दो ।

तुम इस को हवस क्यों कहते हो ?

क्या दाद जो इक लम्हे की है वह दाद नहीं कहलाएगी ?

है चाँद फ़लक^१ पर इक लम्हा

और एक लम्हा यह सितारे हैं !

और उम्र का हिस्सा भी, सोचो, इक लम्हा है !

एक तस्वीर

सोलह सिंगारों से सज कर इक गोरी सेज पर बैठी है ।

पीतम आए नहीं, आएँगे, चुपके रस्ता तकती है ।

लाख लगा कर पाँव सजाए जगमग जगमग करते हैं ,
 प्रेमी का दिल, गर्म उबलते, बहशी खूँ से भरते हैं ।
 नयनों में काजल के डोरे अंग-अंग बरमाते हैं ,
 नन्हे, काले-काले बादल जग पर छाए जाते हैं ।
 माथे पर सेंदुर की बिंदी या आकाश पै तारा है ,
 देख के आजाएगा जो भूला भटका आवारा है ।
 नर्म, रसीले, साफ़, फिसलते, गाल पै तिल का भँवरा है ,
 रोम-रोम उस मदमाती का जेमे सँवरा-सँवरा है ।
 कानों में दो बुंदे, जैसे नन्हे-मुन्हे भूले हैं ,
 चंचल, अचपल सुंदरता के मुख में सब कुछ भूले हैं ।
 चूड़ा बेल बना लिपटा है, बाहें मानों डाली हैं ,
 बेल और डाली की रूहें यों मस्त हैं, मद मतवाली हैं ।
 लेकिन पीतम आए नहीं, आएँगे, आ जाँएंगे ,

इंद्रनगर की खुशियों वाली बस्ती में ले जाएँगे ।
पाँवों की पाजंवे^१ फिर प्रेमी का राग सुनाएँगी !
मीठे लम्हों की बातों के गीतों से बहलाएँगी !

उजाला

आशा आई सारे मन के दुख मुझ को इक पल में भूले ,
मनमंदिर में, सुख-संगत ने ऐसी उमंगें आन जगाईं ,
जैसे कोई सावन रुत में फुलवारी में भूला भूले !
कोमल लहरें मेरे मन में एक अनोखी शोभा लाईं ,
जैसे ऊँचे-नीचे सागर में दो कूजें^२ उड़ती जाएं ,
मधु रुत का ज्यों समा सुहाना मन को चंचल नाच नचाए !
हैरानी है, मेरे मन में ऐसी बातें कहाँ से आईं ?
मन सोया था, सोए हुए को कौन पुकारे ? कौन जगाए ?
जैसे कोई नवजीवन का हरकारा^३ संदेसा लाए !
जिस के मन में आशा आए, बस वही समझे, वही बताए !

रात की अनजान प्रेयसी

मैं धुँधली नींद में लिपटा था, सौ पदों से वह जाग उठी ,
हलके-हलके बहती आई औ' छाई माँठी खुशबू-सी !
बारीक दुपट्टा सिर पे लिए, औ' अंचल को क्राबू में किए ,
चंचल नयनों को ओट दिए, शरमीला घूँघट थामे थी !

^१पायलें । ^२पत्नी विशेष । ^३दूत ।

निर्दोष बदन, इक चंद्रकिरण, उठता जोवन, बस मन-मोहन,
 मैं कौन हूं, क्या हूं, क्या जाने ! मन बस में किया औ' भूल गई !
 जब आँख खुली औ' होश आया, तब सोच लगी, उलझन-सी हुई,
 फिर गूँज सी कानों में आई, यह सुंदरि थी सपनों की परी !

जंगल में वीरान मंदिर

कुछ चाँद की परियां मंदिर में कल रात बुलाई जाएँगी,
 सारी दीवारें कलियों औ' फूलों से सजाई जाएँगी ।
 कुछ कोमल, नर्म हरे पत्तों के फर्श बिछाए जाएँगे ।
 जब ऐसी अनोखी, मन-मोहिनी, सखि, तैयारी सब होलेगी,
 तब वक्रत की देवी, चाँद के संगी^१ दरवाज़ों को खोलेगी ।
 फिर धीरे-धीरे उड़ती, बहती, चाँद की परियां आएँगी ।
 औ' मंदिर की सब दीवारें मंगल के गीत सुनाएँगी ।
 मैं मंदिर के इक कोने में छिप कर चुपका बैठा हूँगा,
 औ' ऐसे मोहन मज़र को अपनी आँखों से देखूँगा ।
 मैं चाँद की परियों के गीतों का जादू दिल में भर लूँगा,
 औ' नाच के फूलों से अपनी आँखों को गैशन कर लूँगा ।
 पहले तो मेरे दिल पर गहरी मस्ती-मी छा जाएगी,
 फिर वक्रत की देवी मुझ को मेरे सपनों से चौंकाएगी ।
 औ' चाँद की नाचती-गाती परियां डर के ठिठक सी जाएँगी,
 औ' मुझ को देख के सहमी, सहमी अपने पर फैलाएँगी ।
 सब फूल परेशां हो जाएँगे औ' कलियां मुग्धाएँगी ।
 औ' चाँद की परियां तज कर मुझ को मंदिर से उड़ जाएँगी ।

संयोग

दिन स्वप्न हुआ, दिन बीत चुका ।

धीरे-धीरे हर नज़्मे-फलक इस ऊँचे-नीचे मंडल से

चोरी-चोरी यों देखता है,

जैसे जंगल में कुटिया के इक सीधे-माधे द्वारे पर

कोई तनहा, चुपचाप खड़ा, छिप कर घर से बाहर देखे !

जंगल की हर इक टहनी ने सब्जी छोड़ी, शर्मा के छिपी तारीकी में ।

और बादल के घूँघट की आंठ से ही तकते-तकते चंदा का रूप बढ़ा !

यह चंदा—कृष्ण, सितारे हैं—भुरमुट वृंदा की मखियों का !

यह जुहरा नीले मंडल की राधा बन कर क्या आई है ?

क्या राधा की सुंदरता चाँद विहारी के मन भाएगी ?

जंगल की घनी गुफाओं में जुगनू, जगमग करते, जलते बुझते चंगारे हैं !

और भीगुर ताल किनारे से गीतों के तीर चलाते हैं,

नगमों में बहते जाते हैं ।

लो' रात की दुल्हन जो शर्माती थी, अब आही गई ।

हर हस्ती पर अब नींद की गहरी मस्ती छाई—स्वामोशी !

कोयल बोली !—

और रात की इस तारीकी में ही दिल को दिल से मिलाए हैं

प्रेयसी-प्रेमी—

हाँ, हम दोनों !

मार्ग

मुझे चाहे न चाहे दिल तेरा, तू मुझ को चाह बढ़ाने दे ,

इक पागल प्रेमी को अपनी चाहत के नगमों गाने दे !

तू रानी प्रेम-कहानी की, चुपचाप कहानी सुनती जा ,

यह प्रेम की वाणी सुनती जा, प्रेमी को गीत सुनाने दे !
 'गर भुले से तू इस जड़बे का, गीत जवाबी गा बैठी,
 यह जादू सब मिट जाएगा, इस को जीवन पर आने दे !
 हां, जीत में नशशा कोई नहीं, नशशा है जीत से दूरी में
 यह राह रसीली चलता हूँ, इस राह पर चलता जाने दे !

मैखाने की चंचल

“कभी आप हँसो, कभी नैन हँसे कभी नैन के बीच हँसे बजरा,
 कभी सारा सुंदर अंग हँसे, कभी अंग रुके, हँस दे गजरा ।
 यह सुंदरता है या कविता, मीठी-मीठी मस्ती लाए,
 इस रूप के हँसते सागर में डगमग डोले मन का बजरा ।
 क्या नाज़ अनोखे और नए सीखे इंदर की परियों से,
 औ' ढंग मनोहर औ' ज़हरी सूँके सागर की परियों से ।
 यह मोहिनी मद मतवाली है, यह मयखाने की चंचल है,
 यह रूप लुटाती है सब में पर आघे मुँह पर अंचल है ।
 पहले सपने में आती है, पाज़ेंबों का झंकारों में,
 फिर चैन चुरा कर तन-मन का, छिप जाती है सय्यारों^१ में ।

^१ सितारों ।

विविध

कुछ ऐसे श्रेष्ठ कवि भी उर्दू में हैं जिन्होंने चाहे गीत अधिक न लिखे हों फिर भी उन की कविता में अनायास ही यह धारा बह निकली है और उन की कुछ कविताएं गीतों के बहुत समीप आ गई हैं । फिर ऐसे भी कवि हैं जिन्होंने एक-दो सुंदर गीत अवश्य लिखे हैं और उन की सुंदरता के कारण उन्हें देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता ।

राष्ट्रीय गान

भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है ,
हर रूत, हर इक मौसम इस का, कैसा प्यारा-प्यारा है ?
कैसा सुहाना, कैसा सुंदर, प्यारा देश हमारा है ?
दुख में, सुख में, हर हालत में, भारत दिल का सहारा है ।

भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है ।

सारे जग के पहाड़ों में बे,-मिस्ल^१ पहाड़ हिमाला है ,
यह परबत सब से ऊँचा है, यह परबत सब से निगला है ,
भारत की रक्षा करता है यह, भारत का रखवाला है ,
लाखों चश्मे बहते इस में, लाखों नदियोंवाला है ,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है ।

गंगाजी की प्यारी लहरे गीत सुनाती जाती हैं ,
सदियों की तहज़ीब^२ हमारी याद दिलाती जाती हैं ,

^१अद्वितीय । ^२सभ्यता ।

भारत के गुलज़ारों^१ को सरसब्ज़^२ बनाती जाती हैं,
खेतों को हरियाली देती, फूल खिलाती जाती हैं,
भारत प्यारा, देश हमारा, सब देशों से न्यारा है ।

हरे-भरे हैं खेत हमारे, दुनिया को अन्न^३ देते हैं,
चाँदी-सोने की कानों से हम जग को धन देते हैं,
प्रेम के प्यारे फूल की खुशबू गुलशन-गुलशन^४ देते हैं,
अमनों-अमां^५ की नेमत^६ सब को भरभर दामन देते हैं,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है ।

कृष्ण की वंसी ने फूँकी है रूह हमारी जानों में,
गौतम की आवाज़ बसी है, महलों में, मैदानों में,
चिश्ती ने जो दी थी मय, वह अब तक है पैमानों में,
नानक की तालीम अभी तक गूँज रही है कानों में,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है ।

मज़हब हो कुछ, हिंदी हैं हम, सारे भाई-भाई हैं,
हिंदू हैं या मुस्लिम हैं, या सिख हैं या ईसाई हैं,
प्रेम ने सब को एक किया है प्रेम के सब सौदाई^७ हैं,
भारत नाम के आशिक हैं हम भारत के सौदाई^८ हैं,
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है ।

हामिद अल्लाह 'अफ़सर'

सीता और तोता

हुई क्या वह बहार ऐ आर्यावर्त,^९

^१बाग़ों । ^२उर्वर । ^३अन्न । ^४बाग़ । ^५शान्ति । ^६विभूति । ^७प्रेमी । ^८पागल ।

^९आर्यावर्त ।

चमन की झिंदगी थे जिस के अनफास^१ ?
 वह रंगारंग फुलवाड़ी कहां है,
 दिमागों में है अब तक जिस की बू-वास ?
 वह आज़ादी किधर है जिस से कट कर,
 न आई कोई भी तुझ को हवा रास ?
 कफ़स^२ में बंद होती थी जो तूती^३
 तो सीता को दिया जाता था बनवास !

यह ताना भी सुना तू ने कि तुझ को ,
 कभी भी था न आज़ादी का इहसास^४ !

मौ० ज़फ़र अली खां

आओ सहेली भूला भूले

पुरवा सनकी बादल छाए , भूरे काले घिर कर आए ,
 अमृत जल भर-भर के लाए , बरखा रुत की इस बरखा मे । आओ सहेली०
 उट्टी हैं पुरशोर घटाएं , काली-काली चोर घटाएं ,
 सावन की घनघोर घटाएं , सावन की घनघोर घटाएं ! आओ सहेली०
 बरखा रुत की शान निराली , पत्ते-पत्ते पर हरियाली,
 डाली-डाली है मतवाली , इस रुत की मखमूर^५ फ़िजा में । आओ सहेली०
 भूलें और पकवान बनाएं , आमों का नौरोज़ मनाएं,
 खाते जाएं गाते जाएं , झड़ी लगी है इस बरखा में । आओ सहेली०

मौ० 'ताजवर'

^१रहनेवाले । ^२पिंजड़ा । ^३पच्ची, तोता । ^४अनुभूति । ^५मस्त ।

ऐ .खूबसूरती

ऐ .खूबसूरती ! क्या बात है तेरी ?
 यह मखमली पहाड़, यह मोहना उजाड़,
 फूलों की रेल-पेल, चिड़ियों की कूद-खेल,
 यह धूप, यह हवा, यह खुल्द^१ की फ़िज़ा^२,
 सब शान है तेरी, ऐ .खूबसूरती !
 नन्ही फुहार ने, मीठी-सी मार ने,
 दिल को जगा दिया, कैसा मज़ा दिया ?
 इस छेड़-छाड़ में, बूंदों की आड़ में,
 तू थी छुपी हुई, ऐ .खूबसूरती !
 जल्वा मुझे दिखा, दिल में मेरे समा,
 हर चीज़ में झलक, गहराइयों तलक,
 दुनिया बना इक और, जिस का नया हो तौर^३,
 ऐ मेरी नित नई, ऐ .खूबसूरती !

मौ० बशीर अहमद

हँस देंगे और गाएँगे !

दूर किसी इक गाओं में, ठंडी-ठंडी छाओं में,
 गाना अपना गाएँगे ! गाएँगे हम गाएँगे !
 नन्हे-नन्हे फूलों में, हलके-हलके झूलों में,
 क्या-क्या लुफ़ उठाएँगे ? झूलेंगे और गाएँगे ?
 फिर इक प्यारी सूरत को, फिर इक मोहनी मूरत को,
 मन का गीत सुनाएँगे ! नाचेंगे और गाएँगे !

^१स्वर्ग । ^२वातावरण, बहार । ^३रूप ।

दुनिया आनी-जानी है, हम ने भी पर ठानी है—
जो खोया है पाएँगे ! पाएँगे और गाएँगे !
औरों का हम देख के रंग, आज रंग और कल के ढंग,
गुस्से में जब आएँगे, हँस देंगे और गाएँगे,
जनत को हम क्या जाने ? दोज़ख को हम क्या मानें ?
दुख में भी हम गाएँगे ! जीकर यों दिखलाएँगे !

मौ० बशीर अहमद

पपीहे से

रागिनी 'पीहू' की सिखलाई है किस ने तुझ को ?
तरज़ यह आगई किस तरह पपीहे तुझ को ?
रैन बरखा की यह तारीक^१ यह हू का आलम^२,
किस की याद आ गई इस वक़्त न जाने तुझ को ?
देख कर इस की चमक जोश पै क्यों आता है ?
दम-बदम करती है क्या बर्क^३ इशारे तुझ को ?
बोल उठता है जो यूँ सर्द हवा पाते ही—
मुयदा^४ क्या देते हैं पुरवा के यह भोंके तुझ को ?
किस को रह-रह के सुनाता है रसीली ताने ?
किस के इस वक्त नज़र आते हैं जलवे तुझ को ?
हाय क्या हिज़्र में डूबी हुई लय है तेरी ?
मेरे सीने से कोई आके लगा दे तुझ को !
दिल मेरा क्यों न भर आए तेरी पी-पी सुन कर,
मुबतला^५ मैं भी हूँ गर इश्क है प्यारे तुझ को,

^१अंधेरी । ^२निस्तब्धता । ^३बिजली । ^४सुसमाचार । ^५फँसा हुआ ।

एक बेदार^१ हूं मैं, जाग रहा है इक तू,
 लाटने मुझ को गुज़रती, है तड़पते तुझ को,
 फिर भी है फ़क़र^२ बहुत हाल में हम दोनों के,
 कि मुझे ज़न्त^३ अता^४ हो गया, नाला तुझ को !

मह्वे-फ़रियाद^५ फ़क़त ग़त को तू होता है,
 मेरे दिल पै है वह बिपता कि सदा रोता है !

सआदत हुसैन 'मुजीब'

फिर क्या तेरा मेरा रे

तेरे दर की धूल में जाने क्या पाया है भिखारी ने ?
 दुनिया छूटी पर नहीं छूटा तेरी गली का फेरा रे !
 प्रीत बुरी है, या अच्छी है, जो कुछ भी है मेरी है,
 अब तो प्यारे आन बसाया मन में प्रेम ने डेरा रे !
 मेरे दिल की दुनिया प्यारे तेरे दिल की दुनिया है,
 तू मेरा है, मैं तेरा हूं, फिर क्या तेरा मेरा रे ?
 प्रेम के बंधन में फँसने से कितने बंधन टूटे हैं ?
 यह मैं जानूं, या वह जाने, जिस को प्रेम ने घेरा रे !
 जब तुम सपने में भी न आओ, प्यारे फिर क्यों नींद आए ?
 बिरह का दीपक जब नहीं बुझता, फिर कैसे हो सवेरा रे ?
 'रविश' सद्दीकी

सरमायादारी

दौलत ने कैसा शोरिश^१ उठाई ? क्या बादशाही औ' क्या गदाई^२ !
 भूखों की रोटी हथिया के बंदा, करता है बंदो पर क्यों खुदाई ?

^१ जाग्रत । ^२ अंतर । ^३ समय । ^४ प्रदान । ^५ उपालंभ-रत । ^६ विद्रोह । ^७ फ़कीरी ।

शाही गदाई, मीरी फकीरी, जब उठ गए यह पर्दे रयाई^१—
यह भी है इंसां, वह भी है इंसा, वह इस का भाई, यह उस का भाई !

मौ० हामिद अली खां

बाली बीबी की फरियाद

१

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूं ।

भारी सर तकिये पर रख कर ,
निंदिया-पुर में खो जाती हूं ।

मेरा खुसर^१ गुस्से^२ में भर कर ,
फिरता है अंदर और बाहर ,

ताल

धव धव धव, गाली पर गाली ।
सो नहीं सकती मैं बेचारी !

खुसर

उठ री उठ ओ काहल लड़की ,
फूहड़, मरियल, नौद की माती ,
उठ री उठ , सुस्ती की कान !

२

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूं ।

भारी सर तकिये पर रख कर ,

^१भूटे । ^२श्वसुर ।

निर्दिया-पुर में खो जाती हूँ ।

सास मेरी तैहे में जल कर ,
फिरती है अंदर और बाहर ,

ताल

धब धब धब, गाली पर गाली ।

सो नहीं सकती मैं बेचारी !

सास

उठ री उठ ओ काहल लड़की ,

उठ री सटल्लो नौद की माती ,

फूहड़, सुस्त, मुई, हैवान !

३

बीबी

पड़ते ही सो जाती हूँ ।

भारी सिर तकिये पर रख कर ,

निर्दिया पुर में खो जाती हूँ ।

हौले-हौले बालम मेरा,

चुपके-चुपके हमदम मेरा ,

आते-जाते अंदर बाहर ,

कहता है मुझे सोते पाकर—

पति

“सो ले, सो ले, मेरी प्यारी !

सो ले, सो ले, ओ बेचारी !

यह दीन ओ’ दुनिया का धंदा ?

यह सिन और शादी का फंदा ?

मेरी बन्नो ! मेरी जान !

मौ० हामिद अली खां

एक गीत

बागों में पड़े भूले ,
तुम भूल गए हम को, हम तुम को नहीं भूले !

सावन का महीना है ,
साजन से जुदा होकर, जीना कोई जीना है !

यह रक्स सितारों का ,
अफ़साना कभी सुन लो, तक्रदीर के मारों का ।

आखिर यही होना था ,
यों ही तुम्हें हँसना था, यों ही हमें रोना था ।

रावी का किनारा है ,
हर मौज के ओठों पर, अफ़साना तुम्हारा है ।

अब और न तड़पाओ ,
या हम को बुला भेजो, या आप चले आओ !

मौ० चिराग़हसन 'हसरत'

दुखी कवि

सेहन में नरगस के इक सूखे हुए पौदे के पास ,
एक तितली, धूप में जिस का चमकता था लिबास ,
उड़ते-उड़ते एक लम्हे^१ के लिए आकर रुकी ,
और फिर कुछ सोच कर सहरा^२ की जानिब^३ उड़ गई !

^१क्षण । ^२मरुस्थल । ^३तरफ़ ।

यों ही आती है मेरे उजड़े हुए दिल तक खुशी ।

मेरे ग़म से खौफ़ खाती, काँपती, डरती हुई !

राजा महदी अली खां

सुन ले मेरा गीत

सुन ले मेरा गीत ! प्यारी, सुन ले मेरा गीत !

प्रेम यह मुझ को रास न आया , तेरी क़मम बेहद पछताया ,
करके तुझ से प्रीत ।

ज़ाक़ हुए हम रोते-रोते , प्रेम में ब्याकुल होते-होते ,
प्रीत की है यह रीत ।

प्रेम में रोना ही होता है , जीवन खोना ही होता है ,
हार हो या हो जीत !

‘बहज़ाद’ लखनवी

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना

प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना , सावन की भरी बरसातों में ,
आजाए इश्क़ ज़वानी पर, वह रस हो प्रेम की बातों में ,
दर्द उठे मीठा-मीठा सा, दिल कसके काली रातों में ,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

जिस गीत की मीठी तानों से, इक़ प्रेम की गंगा फूट पड़े ,
आँखों से लहू हो जाय रवां, ^१अश्कों ^२का दरिया फूट पड़े ,

उजड़ी हुई दिल की महफिल^१ में इक नूर की दुनिया फूट पड़े,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

कुहसारों^२ पर बादल छाएं, इशरत^३ पै ज़माना मायल^४ हो,
फिर खाए चोट मुहब्बत की, फिर दुनिया का दिल घायल हो,
हर भोला-भाला शरमीला उलफ़त के दर का सायल^५ हो,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना ।

हो सोज़^६ वही और साज़^७ वही, वह प्रीत के दिन फिर आजाएं,
बरखा हो, प्यार की बातें हों, हम रीत के दिन फिर आजाएं,
फिर दुखियारों की हार न हो औ' जीत के दिन फिर आजाएं,
प्रीतम कोई ऐसा गीत सुना !

सिराजुद्दीन 'ज़फ़र'

सावन

बह पर्वत पर है इक बदली का साया, अंधेरा जंगलों में मनमनाया,
पपीहा 'पीहू' 'पीहू' गुनगुनाया, हवा ने झाड़ियों में गीत गाया,
वे बगलों ने भी अपने पर सँवारे !
वे मक्खन के खिलौने प्यारे-प्यारे !
वे वादी^८ में अबाबीलों की डारे, वे बल खाती हुईं पानी का धारे,
वे भोले-भोले बच्चों की कृतारें, वे भूलों पर मल्हारों की पुकारें,
वह इक नन्हीं फिमल कर रो रही है ।
चुनरिया बेदिली से धा रही है ।
घनक^९ ने यक-ब-यक चिल्ला चढ़ाया, पलट दी आन में आलम^{१०} की काया,

^१सभा । ^२पहाड़ों । ^३आराम । ^४भुके । ^५याचक । ^६दर्द । ^७वाद्ययंत्र ।

^८घाटी । ^९इंद्रधनुष । ^{१०}संसार ।

फटी बदली औ' सूरज मुस्कराया, लुआ चाँदी को औ' सेना बनाया,
हवा ने धीमे-धीमे गीत गाए ।

पहाड़ों के पड़े भीलों में साये ।

वह इक चरवाहे ने मुरली बजाई, वह नज़ारों की आँगड़ाई-सी आई,
यह खुनकी^१ और यह आतश-नवाई^२, नया चोला बदलती है खुदाई,

टिठर कर बकरियां थर्रा रही हैं ।

जुगाली ही है, मन बहला रही हैं ।

यह सब्जा औ' यह नालों की खानी, बफर कर, भाग बन जाता है पानी,
यह भीगे-भीगे पौदों की जवानी, मुझे डसती हैं ये घड़ियां सुहानी,

ज़मों पर बारिशें क्या हो रही हैं ?

मेरी किस्मत पै हूरे^३ रो रही हैं !

वे अब तक क्यों न आए, क्यों न आए ? वे आएँ तो मुझे सावन लुभाए,
मुझे वे, औ' उन्हें परदेस भाए, कहां तक राह देखूं हाय, हाय,

उड़े जाते हैं वे बादल बरस कर,

मेरे दिल अब न रो, कंवस्त, बस कर !

अहमद नदीम कासिमी

आहू *

माथे पै बिंदी, आँख में जादू, आँठों पै बिजली, गिरती थी हरसू^५ ।

चाल लचकती, बात बढकती, जैसे किसी ने पीली हो दारू^६ ।

आँखड़ियां ऐसी, जिन में रक्सां--छिन में राधा छिन में राहू ।

ऐसी भड़क थी खल्क^७ थी हैरां, रेल पै आया, कहां से आहू ?

‘यलदरम’

^१ढंढक । ^२अग्निवर्षा । ^३परिया । ^४मृगझीना । ^५सब ओर । ^६मदिरा । ^७जनता ।

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ

मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ ।

ओ मुझ से खफ़ा रहनेवाले ! ओ मुझ को बुरा कहने वाले !
मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ , मैं तेरे नाम पै मरता हूँ ।
मैं तेरा अदना^१ बंदा हूँ , राजी-ब-रजा^२ रहनेवाला ।
मैं तेरा अदना बंदा हूँ , सग़ममें वफ़ा^३ रहनेवाला ।
मैं तेरा अदना बंदा हूँ , कदमों में गिरा रहनेवाला ।
तू मुझ से खफ़ा क्यों रहता है , ओ मुझ से खफ़ा रहनेवाले !
तू मुझ को बुरा क्यों कहता है , ओ मुझ को बुरा कहनेवाले ?
मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ ! मैं तेरे नाम पै मरता हूँ !

‘मजीद’ मलिक

आगाज़^४

मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं ! मगर ऐ हसीनाए नाज़नी^५—
तू हो मुझ से दूर अगर कभी , तुझे दूँढती हो नज़र कभी ,
तो जिगर^६ में उठता है दर्द-सा , मेरा रंग रहता है ज़र्द-सा ।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नी , मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !
मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं , मगर ऐ हसीनाए नाज़नी—
तू अगर हो मजमए आम^७ में , किसी खेल में किसी काम में ,
तो मैं छिप के दूर ही दूर से , तुझे देखता हूँ ग़रूर^८ से ।
मगर ऐ हसीनाए नाज़नी , मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !
तू कहे यह मुझ से अगर कभी , मुझ ला दो लालो-गुहर^९ कभी ,

^१ग़रीब । ^२तेरी खुशी खुश रहनेवाला । ^३सदैव तेरा हुक़्म माननेवाला ।

^४आरंभ । ^५दे सुंदरी तरुणी । ^६हृदय । ^७जनता की मीढ़ । ^८गर्व । ^९हारे-मोती ।

तो मैं दूर-दूर की सोच लूँ, मैं फलक के तारे भी नोच लूँ,
 यह सबूत शौक़े-कमाल^१ दूँ, तेरे पाओं में उन्हें डाल दूँ।
 मगर ऐ हसीनाए नाज़नी, मुझे तुझ से इश्क़ नहीं नहीं !

‘मज़ीद’ मलिक

कौन किसी का मीत ?

कौन किसी का मीत ?

सावन की लूफ़ानी रातें, कैफ़भरी^२ मस्तानी रातें,
 रातें, वह दीवानी रातें, बीत गई हैं बीत !
 कोई सितम-ईजाद नहीं है, दाद नहीं, फ़रयाद नहीं है,
 उन को कुछ भी याद नहीं है, मुँह देखे की प्रीत !
 बाँके बालम के बलिहारी, उम की चितवन की छुबि न्यारी,
 मैंने जीती बाज़ी हारी, हार भी उन की जीत।
 मन-मूरख यह भूल रहा है, काँटों ही पर फूल रहा है,
 गाता है और भूल रहा है, आशाओं के गीत !

सोहनलाल, ‘साहर’

वहीं ले चल मेरा चरवा

मुझे मा-बाप के घर में वह इतमीनान^३ हासिल^४ था,
 कि दुनिया भर की उम्मीदों का गह्वारा^५ मेरा दिल था।
 हुई हालत मगर बिल्कुल वही सुसराल में आकर,
 फँसे जैसे कोई आज़ाद पंछी जाल में आकर।
 मुहल्ले भर की सारी औरतें मुझ को बनाती हैं,

^१पके प्रेम का प्रमाण । ^२मस्ती भरी । ^३शान्ति । ^४प्राप्त । ^५धर ।

मैं उन का मुँह चिढ़ाती हूँ, वह मेरा मुँह चिढ़ाती है ।
सहे जाते नहीं अब मुझ से ताने सास ननदों के,
क़यामत है रहूँ किस तरह दिन भर पास ननदों के ?

वहीं ले चल मेरा चर्खा, जहाँ चलते हैं हल तेरे !
तेरी फुरक़त^१ की मारी तुझ को हरदम याद करती है ।
मुझे ले चल कि मेरी आत्मा फ़रयाद करती है !
न आँसू आएँगे रुख़^२ पर, न घबराएगा दिल मेरा,
कि तेरे साथ रहने से बहल जाएगा दिल मेरा ।
यह माना है बहुत दिलचस्प सुबहो-शाम के जल्वे,
रहे तुम आँख से ओझल, तो फिर किस काम के जल्वे ?
तुम्हारे साथ रह कर अपना ग़म सब भूल जाऊँगी,
तुम्हें गाता जो देखूँगी तो खुद भी साथ गाऊँगी ।
मैं अपने दर्द से जंगल के वीराने को भर दूँगी,
मैं अपने गीत से सारी फ़िज़ा आबाद कर दूँगी ।
मेरी ख़्वाब-आफ़रीं^३ तानों में खो जाएँगे पंख़ी भी,
दरख़्तों^४ की। तग़ह मबहूत^५ हो जाएंगे पंख़ी भी ।
वही रौनक़ वही सामान आएगा नज़र मुझ को,
मैं हूँगी साथ तो वह बन भी हो जाएगा घर मुझ को ।

वहीं ले चल मेरा चर्खा, जहाँ चलते हैं हल तेरे !

‘फाविर’ हरियानवी

चाह का भेद

उन्हें जी से मैं कैसे भुलाऊँ मन्वी, मेरे जी को जो आके लुभा ही गए ?
मेरे मन में वह प्रेम बसा ही गए, मुझे प्रीत का रोग लगा ही गए !

^१विरह । ^२मुख । ^३नींद बुलाने वाली । ^४वृक्षों । ^५मुग्ध ।

किए मैंने हज़ार-हज़ार जतन, कि बचा रहे प्रीत की आग से मन ,
 मेरे मन में उभार के अपनी लगन, वह लगाव की आग लगा ही गए !
 बड़े सुख से यह बीते थे चौदह बरस, कभी मैं ने चखा न था प्रेम का रस ,
 मेरे नयनों को श्याम दिखा के दरम, मेरे दिल में वह चाह बसा ही गए !
 कभी सपनों की छात्रों में सोई न थी, कभी भूल के दुख से मैं रोई न थी ,
 मुझे प्रेम के सपने दिखा ही गए. मुझे प्रेम के दुख से रुला ही गए !
 रहे रात की रात सिधार गए, मुझे सपना समझ के बिसार गए ,
 मैं थी हार, गले से उतार गए, मैं दिया थी जिसे वह बुझा ही गए ।
 सखि कोयलें 'सावनी' गाएँगी फिर, नई कलियां छावनी छाएँगी फिर ,
 मेरी चैन की रातें न आएँगी फिर, जिन्हें नैन के नीर मिटा ही गए !
 मेरे जी में थी बात छिपा के रखूं, सखि चाह को मन में दबा के रखूं ,
 उन्हें देख के आँसू जो आही गए, मेरी चाह का भेद बता ही गए ।

‘अज्ञात’

ग्वालन

इस की आँख में प्रीत का रस है , इस के मन में प्रेम की लहरें ।
 इस के मिर पर दूध की मटकी , इस के घर में दूध की नहरें ।
 हँसमुख, सुंदर, छैल-छुबीली , सब को दूध पिलाती है यह ।
 कहती है जब 'माखन ले लो !', गोकुल याद दिलाती है यह !
 खेले थे परवान चढ़े थे^१ , इस के घर में श्याम कन्हैया ।
 दुनिया थी यह इक भवसागर , खेती थी यह इस की नैया !
 कितनी पाक और कितनी सुंदर ! कृष्ण मुरारी इस ने पाले ।
 प्यार से उन को कहती थी यह , 'आजा प्यारे माखन खाले' !

पालती है यह अब भी हम को , अब भी इस की रीत वही है ।
देती है यह अब भी माखन , प्रेम वही है , प्रीत वही है ।
आओ बड़ कर इस से पृच्छें—क्योंरी ग्वालन , श्याम कहां हैं ?
उन बिन भारत भर है सूना , उस के दिल आराम कहां है ?
वह जो मिलें तो उन से कहना , श्याम मुरारी फिर से आओ ,
बोल करो फिर वाला अपना , भारत के फिर भाग जगाओ !

मनोहरलाल 'राहन'

कमल से

ऐ कमल, ऐ जल-परी, ऐ भील के तारों की जोत !
तेरे कारण प्रीत-सागर में खुली गंगा की सोत ।
धारता है रूप कुछ ऐसे तू ऐ नाजुक कमल ,
मोहनी मूरत पै तेरी आँख जाती है फिसल ।
गुदगुदा देती है तुझ को जिस समय कोयल की कूक ,
मुस्कराहट से बदलती है तिरे हिरदे की हूक ।
तू कहां, इक हंस है पानी पै पर खोले हुए ।
चाँद पनघट पर उतर आया है पर तोले हुए ।
या कोई बगला खड़ा है सर उठाए घात में ,
या इकट्ठा हो गया है फेन चौड़े पात में ,
या यह चाँदी का कटोरा है 'कटोरा-ताल' में ,
या यह शीशे का दिया जलता है 'चौमुख ताल' में ,
या किसी देवी की सुमिरन गिर पड़ी तालाब में ,
या गड़ी है कोई फूलों की छड़ी तालाब में ,
या खुला है फूल की सूरत में भादों का भरम ,
या लिया है नूर के तड़के ने दरिया पर जनम ।

'शाद' आफ़ी

सपने में क्यों आते हो ?

चुपके-चुपके ताक लगाए ,
 साँस की आहट तक ना आए ,
 नाग समान कई बल खाए ,
 रैन अँधेरी, हू का आलम ,
 कैमे निडर हो, सुंदर बालम !
 ऐसे में जब आते हो ।
 जी का धड़का जाते हो ।

ऊपर वाला राह बताए ,
 राह में वह ठोकर ना खाए !

बिगड़ी बात कहीं बन जाए !

आए सोए भाग जगाए !

वैरी है संमार तुम्हारा ।

मैं हारी जब मन को हारा ।

सपने में क्यों आते हो ?

नींद उड़ा ले जाते हो !

लतीफ़ अनवर

ओ मेरे बचपन की कशती

ओ मेरे बचपन की कशती, इन कालो-काली रातों में ,
 किस जानिव^१ भागी जाती है, इन तूफ़ानी बरसातों में ?
 दिल में उलफ़त, आँखों में चमक, नज़रों में हिजाब^२ आने को है ।
 भँवरों से निकल, लहरों से समल, तूफ़ाने शबाब^३ आने को है ।

^१ तरफ़ । ^२ लज्जा । ^३ जवानी का तूफ़ान ।

शहरों में डाकू बसते हैं, ले चल मुझ को सहाराओं में !
 ओ मेरी जवानी, ले भी चल, जंगल की मस्त हवाओं में !
 आ उस जा^१ भाग चले जिस जा, यह जिस्म^२ लुटाए जाते हैं।
 जिस जा आज़ादी की खातिर, सर भेट चढ़ाए जाते हैं।
 जहां दिल की नज़रें^३ चढ़ती हैं, आज़ादी के दरबारों में।
 जिस जगह जवानी पलती है, तलवारों की झनकारों में।
 'क़मर' जलालाबादी

चंदा मामू

प्यारे चाँद चमकनेवाले, दुनिया भर को तकने वाले,
 सब के सिर पर तेरा डेरा, सब से ऊँचा घर है तेरा।
 तू जब अपनी खास शान से, नीले-नीले आसमान से,
 दूर उभरता दिया दिखाई, बोल उठी झट बुढ़िया माई —
 'बेटा तेरा मामू आया'। मैं कहता हूँ 'मामू कैसा' !
 सब आते हैं यह नहीं आता, इंजन-गाड़ी यह नहीं लाता।
 यह लो मेरी गेंद उछल कर, जा पहुँची है तारों के घर।
 हाँ ऐ चाँद अब नीचे आना ! दूध मलाई माखन खाना !
 मेरे दिल का टुकड़ा बन जा ! रूठा है चुपके से मन जा।
 मेरी इन आँखों में रहना ! कुछ भी करना, कुछ भी कहना !

ख़जानचंद, 'बसीम'

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !
 आज फूल कल-परसों फूल, सदा सुहागिन बरसों फूल !

जोवन पाकर बन में फूल, तन से फूल औ' मन से फूल !

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

पगली कोयल के ये बोल, तेरे मेरे दिल के बोल ,

चुपके-चुपके सुनती रह ! सुन-सुन कर सिर धुनती रह !

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

मस्ती भरी हवाओं में, जग की धूप औ' छाओं में ,

भूमे जा, लहराए जा, आँखों में मुसकाए जा !

फूल ऐ सरसों फूल !

फूल-फूल दूँ , फूल, पाकर नई जवानी फूल ,

दुनिया की नज़्मों से दूर, अनमैली आँखों से दूर ,

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

ऐ वनवासी की जोगन, ओ री, पी की बैरागन !

जब तक तन में साँस रहे, पिया मिलन की आस रहे ।

फूल-फूल ऐ सरसों फूल !

आज फूल कल-परसों फूल, सदा मुहागन बरसों फूल ।

फूल-फूल ऐ सरसों फूल ।

खज़ानचंद 'वसीम'

हठीले भँवरे

हठीले भँवरे मत गुंजार !

रूप-गंध-रस-कोमलता का दो दिन है संसार ,

जीवन भर रोएगा जी को, दो दिन करके प्यार !

हठीले भँवरे मत गुंजार !

जो कलियां खिल कर मुरझाईं उन की ओर निहार !

आज कलंक हैं फुलवारी का कल थीं जो सिंगार !

हठीले भँवरे मत गुंजार !

प्रेम का मीठा रोग लगा कर कैसी हाहाकार ?

मन पापी है दुख का कारण, पापी मन को मार !

हठीले भँवरे मत गुंजार !

भूल न पतझड़ को ऐ पागल, मेरी ओर निहार !

प्रेम-वसंत के खंडहर पर करती हूँ हाहाकार !

हठीले भँवरे मत गुंजार !

जिस की आस पै दुनिया छोड़ी छोड़ दिया घर-बार ,

उस पापी ने ठोकर मारी कर चपँखे चार !

हठीले भँवरे . . . गुंजार !

बिहारीलाल, 'साबिर'

;

